सुबह सवेरे

A Daily News Magazine

इंदौर

गुरुवार, 15 मई, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 215, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

दरअसल पाकिस्तानी सेना के लिए युद्ध उसकी राष्ट्र पहचान है

प्रवीण स्वामी

मंच को बहुत सोच-समझकर सजाया गया था, और अभिनेता भी अपने-अपने किरदारों के मुताबिक पोशाक पहनकर तैयार थे: सैनिक अपनी इस्त्री की हुई वर्दियों में हथियारबंद पुलिस वाले चमकते मैरून स्वेटर में, एक आदमी नीले बिज़नेस सूट में, और एक काले चोगे वाला धर्मगुरु। इन्हें जनरल आसिम मुनीर ने कहा- 'जो लोग अल्लाह और उसके पैगंबर से लड़ते हैं और धरती पर फसाद फैलाते हैं, उन्हें इस दुनिया और आखिर- दोनों में सज़ा दी जाएगी। यही तुम्हारा क़ानून है। और यही अल्लाह का क़ानून है। क्योंकि तुम अल्लाह का क़ानून लागू कर रहे हो, तुम उसके सिपाही हो। धरती पर कोई ताक़त तुम्हें हरा नहीं सकती।'

शनिवार को राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप द्वारा भारत और पाकिस्तान के बीच तत्काल संघर्ष विराम की घोषणा के दो घंटे से भी कम समय बाद श्रीनगर और जम्मू में ड्रोन हमले शुरू हो गए। 'यह कोई संघर्ष विराम नहीं है,' जम्मू और कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा। इस संघर्ष विराम का टूटना–या कुछ पाकिस्तानी सेनापतियों द्वारा यह मानना कि यह नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर लागू नहीं होता–यह दिखाता है कि पाकिस्तानी सेना के कुछ लोग जनरल आसिम की बातों को सच में मान बैठे हैं। वे सिर्फ अल्लाह के क़ानून को मानते हैं। पाकिस्तान की सेना के कई लोगों के लिए, और साथ ही वहां की सिविल सोसाइटी और राजनीति के प्रभावशाली हिस्सों के लिए, भारत में हिंसा का इस्तेमाल किसी लक्ष्य को हासिल करने का ज़रिया नहीं है। बल्कि यह उस नफ़रत की अंतिम परिणति है जो उनके लिए अटल और स्थायी है-जिसका अंत केवल एक अंतिम युद्ध से ही हो सकता है जिसमें सब कुछ मिटा दिया जाए।

जब पाकिस्तान की सेना आपस में बात करती है, तो विद्वान सी. क्रिस्टीन फेयर ने हमें यह समझाया कि धार्मिक कल्पनाओं (मिलेनैरियनिज्म) का विचार इस संस्था की सोच के केंद्र में है। ग्रीन बुक्स, जो कि रावलपिंडी स्थित जनरल हेडक्वार्टर्स द्वारा 1990 से प्रकाशित मिड-लेवल अधिकारियों के लेखों का संकलन है, के ज़रिए फेयर ने एक ऐसा पाकिस्तान देखा जो आधुनिकता की परतों से मुक्त था। यह एक ऐसी संस्था थी जो धार्मिक पहचान को लेकर चिंता में डूबी हुई थी, भारत से घृणा करती थी, और पाकिस्तान को एक धार्मिक राज्य में बदलने की तीव्र इच्छा रखती थी।

नौसेना अधिकारी तारिक माजिद ने 1990 की ग्रीन बुक में लिखा कि 'इस्लामिक राज्य स्थायी सेना के अलावा, जनता से एक स्वयंसेवी बल भी बनाए रखता है और युद्धकाल के दौरान अन्य सशक्त पुरुषों का उपयोग सैन्य प्रणाली के अन्य हिस्सों को मजबूत करने के लिए करता है।' यह स्वयंसेवी बल वही जिहादी थे, जिन्हें पाकिस्तान ने कश्मीर में और सोवियत संघ के खिलाफ अफगानिस्तान में इस्तेमाल किया था।

1994 की ग्रीन बुक में ब्रिगेडियर सैफ़ी अहमद नक़वी ने प्रस्ताव रखा कि यह याद रखना ज़रूरी है कि पाकिस्तान 'एक वैचारिक राज्य है, जो इस्लाम की विचारधारा पर आधारित है। इसलिए सेना की ज़िम्मेदारी सिर्फ पाकिस्तान की सीमाओं की रक्षा करना नहीं है, बल्कि 'उन वैचारिक सीमाओं की भी रक्षा करना है जिन पर देश का अस्तित्व टिका है।'

9/11 की घटनाओं के बाद यह सोच एक तरह की पागल साजिशी सोच में बदल गई। भले ही पाकिस्तान की सेना अफगानिस्तान में तालिबान के खिलाफ अमेरिका के साथ लड़ रही थी, ब्रिगेडियर मुनीर महमूद ने 2002 की ग्रीन बुक में चेतावनी दी कि पश्चिमी मीडिया और यहूदी लॉबी पाकिस्तान को 'मुस्लिम उम्मा (दुनिया भर के मुसलमानों की एकता) का झंडाबरदार' साबित कर रहे हैं। इसलिए 'संभावना है कि पाकिस्तान इन ताक़तों का निशाना बने।'

राजनयिक और विद्वान हुसैन हक्क़ानी ने पाकिस्तान के इतिहास पर लिखी अपनी पैनी किताब में बताया कि पाकिस्तान की सेना का जिहादी प्रोजेक्ट 'सिर्फ कुछ सरकारों के फ़ैसलों का अनजाने में लिया गया नतीजा नहीं था। पाकिस्तान राज्य द्वारा इस्लाम के उपयोग ने धीरे-धीरे 'जिहादी विचारधारा के प्रति एक रणनीतिक प्रतिबद्धता' का रूप ले लिया। 1956 में, देश के पहले संविधान ने पाकिस्तान को एक इस्लामी गणराज्य घोषित किया–जो कि पारंपरिक इस्लामी सिद्धांतों में नहीं मिलता–और यह भी निर्धारित किया कि कोई भी क़ानून कुरान और हदीस के विरुद्ध नहीं बनाया जा सकता। जनरल अयूब ख़ान ने पाकिस्तान के नाम से 'इस्लामी' शब्द हटा दिया लेकिन एक धार्मिक परिषद बनाकर देश के मामलों में धर्मगुरुओं की भूमिका तय की। उनके उत्तराधिकारी, शराबी जनरल याह्या ख़ान ने पूर्वी पाकिस्तान में इस्लामियों से हाथ मिलाया। प्रधानमंत्री ज़ुल्फ़िकार अली भुट्टो ने धर्मगुरुओं के दबाव में आकर अल्पसंख्यकों के खिलाफ कदम उठाए और इस्लाम को राज्य का धर्म घोषित किया।

2025 के संकट को भारत की रणनीतिक संस्था को यह समझने के लिए प्रेरित करना चाहिए कि यह कल्पनात्मक विश्वास प्रणाली–जो एक आने वाले सर्वनाश में विश्वास पर आधारित है, जो यूटोपिया तक पहुंच का मार्ग खोलेगा–कम से कम एक साधारण सैन्य दृष्टिकोण से रोकी जा सकती है। 2001-2002 का संकट, जो नई दिल्ली में संसद भवन पर आतंकवादी हमले के बाद पैदा हुआ था, जनरल परवेज़ मुशर्रफ़ को संघर्षविराम लागू करने और सीमा पार आतंकवाद को कम करने के लिए मजबूर कर गया। हालांकि, जनरल की मुख्य चिंता उनका डगमगाता हुआ अर्थतंत्र और अमेरिका का दबाव था। मुशर्रफ़ और उनके आसपास के लोगों के लिए 2001-2002 का संकट इस बात का प्रमाण था कि उनके परमाणु हथियारों ने भारत को रोका–ना कि एक पारंपरिक रूप से अधिक शक्तिशाली दुश्मन के सामने सैन्य कमजोरी का। यह सीख उनके उत्तराधिकारी जनरल परवेज़ कयानी के लिए काम आई, जिन्होंने 26/11 हमले की अनुमति दी, यह विश्वास करते हुए कि भारत युद्ध नहीं करेगा।

भारत द्वारा 2016 में नियंत्रण रेखा पार कर की गई छापेमारी के बाद, कश्मीर में कई फ़िदायीन हमले हुए और आने वाले वर्षों में आतंकवादी हिंसा में स्पष्ट वृद्धि हुई। 2019 के बालाकोट हमले को वहां की रणनीतिक बिरादरी ने पाकिस्तान की जीत के रूप में देखा। भारत में कुछ लोगों के लिए, इसका उत्तर पाकिस्तान के खिलाफ बल प्रयोग को इस स्तर तक बढ़ाने में है कि आतंकवाद को रोकने के लिए डर पैदा हो जाए। यही भारत ने 2001-2002 और फिर 2019 में किया। प्रत्येक समझौता कायम रहा–जब तक अगला हमला नहीं हुआ।

यह कहना कि हर भविष्य का आतंकवादी हमला युद्ध का कार्य माना जाएगा और वैसा ही उत्तर मिलेगा, केवल एक उत्तेजक बयान है। दुनिया का कोई भी राष्ट्र-राज्य–न अमेरिका, न रूस, न चीन–ने ऐसा किया है क्योंकि यह असंभव और असहनीय है। भारत को लंबे समय के लिए सोच-समझकर बनाई गई योजना की ज़रूरत है।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

बैंगलूरू में सीएम यादव ने बीईएमएल के 2100वें मेट्रो कोच को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया

मप्र - कर्नाटक मिलकर खोलेंगे परस्पर विकास के नये रास्ते

- रायसेन में बीईएमएल की नई निर्माण इकाइयों की स्थापना से होगा देश-प्रदेश का औद्योगिक इको सिस्टम सशक्त
- मध्यप्रदेश अब बनेगा मेट्रो और रेल निर्माण का नया हब
- मुख्यमंत्री ने बीईएमएल के 2100वें मेट्रो कोच की टेस्ट राइड कर किया रवाना

पीएम मोदी के नेतृत्व में रेलवे आधुनिकीकरण का हुआ है अद्भुत कार्य : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में रेलवे क्षेत्र में अद्भुत काम हुआ है। अलग-अलग कम्पनियों ने इस क्षेत्र में जो कार्य किया है वह 'मेड इन इंडिया' का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण है। देश में मेट्रो और वन्देभारत जैसी आधुनिक रेल के विभिन्न उपकरणों का निर्माण हो रहा है। बीईएमएल, मध्यप्रदेश में रोलिंग स्टॉफ और मेट्रो कोच का निर्माण करेगी। उन्होंने कहा कि कर्नाटक से मध्यप्रदेश के संबंध प्रगाढ़ होंगे। हम अनेक कार्यो में परस्पर विकास के नये रास्ते खालेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बुधवार को बेंगलुरू में बीईएमएल कार्यशाला के भ्रमण के दौरान यह बात कही।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक और ऐतिहासिक कदम उठाते हुए बेंगलुरू स्थित बीईएमएल लिमिटेड के अत्याधुनिक रेल कोच विनिर्माण संयंत्र से 2100वें मेट्रो कोच को हरी झंडी दिखाकर राष्ट्र को समर्पित किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रायसेन जिले के उमरिया क्षेत्र में बीईएमएल की नई रोलिंग स्टॉक विनिर्माण इकाई की स्थापना के लिए भूमि आवंटन-पत्र कंपनी के चेयरमेन और एमडी श्री शांतनु रॉय को सौंपा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह क्षण मध्यप्रदेश ही नहीं, पूरे देश के लिए गौरवपूर्ण है। बीईएमएल में निर्मित 2100वें मेट्रो कोच का शुभारंभ भारत की उन्नत निर्माण क्षमता, इंजीनियरिंग उत्कृष्टता और स्वदेशी तकनीक के बढ़ते प्रभाव का प्रतीक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश के रायसेन में बीईएमएल की इकाई स्थापना को एक अभूतपूर्व कदम बताया। उन्होंने कहा कि इससे देश-प्रदेश का औद्योगिक इको सिस्टम सशक्त बनेगा। साथ ही युवाओं, एमएसएमई और स्थानीय समुदायों के लिए रोजगार और अवसरों के नए द्वार खुलेंगे। रायसेन में मेट्रो और रेल कोच निर्माण इकाई की स्थापना प्रदेश के समावेशी एवं सतत् विकास की दिशा में एक सशक्त कदम है। मध्यप्रदेश शासन, मध्यप्रदेश औद्योगिक विकास निगम और बीईएमएल के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। मध्यप्रदेश शासन ने इस इकाई के लिए कुल 60.063 हेक्टेयर भूमि आवंटन को मंजूरी दी है। प्रस्तावित इकाई मुख्य रेल एवं नगरीय परिवहन परियोजनाओं के लिए रोलिंग स्टॉक और मेट्रो कोच का निर्माण करेगी। इससे प्रदेश और देश के अन्य भागों में रेलवे इंफ्रास्ट्रक्चर सशक्त होगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव का आभार मानते हुए बीईएमएल के चेयरमेन और एमडी श्री शांतनु रॉय ने कहा कि बीईएमएल उनके विश्वास पर खरी उतरेगी। रायसेन में हमारी इकाई का विस्तार भारत के नगरीय रेल इंफ्रास्ट्रक्चर को और गतिशीलता एवं सशक्त बनाएगा। 2100वें मेट्रो कोच का निर्माण इस बात का प्रमाण है कि हमारे सहयोगी संस्थानों ने बीईएमएल पर निरंतर विश्वास जताया है।

निवेशकों के साथ होगी वन-टू-वन चर्चा

मुख्यमंत्री डॉ. यादव निवेशकों के साथ वन-टू-वन मीटिंग के माध्यम से सीधे संवाद करेंगे। इनमें आईटी, इलेक्ट्रॉनिक्स, मैन्युफैक्चरिंग, डिफेंस, ऑटोमोबाइल, टूरिज्म और टेक्नोलॉजी सेक्टर के प्रमुख निवेशक शामिल होंगे।

हाईकोर्ट का आदेश-मंत्री शाह पर एफआईआर करें

- डीजीपी को 4 घंटे का समय दिया, कर्नल सोफिया पर आपत्तिजनक बयान दिया था

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट ने बुधवार को कर्नल सोफिया कुरैशी पर दिए विवादास्पद बयान मामले में जनजातीय कार्य मंत्री विजय शाह के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने के निर्देश दिए। जबलपुर हाईकोर्ट के जस्टिस अतुल श्रीधरन और जस्टिस अनुराधा शुक्ला की बेंच ने इस मामले में खुद नोटिस लिया। कोर्ट ने डीजीपी को 4 घंटे के अंदर एफआईआर दर्ज करने और कार्रवाई करने को कहा। मंत्री के बयान के मामले में ग्रामीण डीआईजी निमेष अग्रवाल का कहना है कि फिलहाल हमारे पास आदेश नहीं आए हैं। आदेश आते ही मुकदमा दर्ज कर लिया जाएगा। देर शाम तक तो एफआईआर नहीं पाई थी।

हाईकोर्ट ने कहा- भारत की एकता अखंडता को खतरे में डालने का अपराध दर्ज करें। अगर एफआईआर दर्ज नहीं की गई तो डीजीपी पर कोर्ट की अवमानना की कार्रवाई होगी। हाईकोर्ट ने कहा कि मंत्री विजय शाह का बयान सांप्रदायिकता को बढ़ाने वाला हैं। मंत्री विजय शाह के बयान को लेकर हाईकोर्ट ने ये कहा-हाईकोर्ट ने पाया कि प्रथम दृष्टया भारतीय न्याय संहिता, 2023 (बीएनएस) के तहत मंत्री के खिलाफ अपराध सिद्ध होते हैं। भारतीय न्याय संहिता की धारा 152 के तहत अपराध बनता है, जो भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता को खतरे में डालने वाले कृत्यों को अपराध घोषित करता है। बीएनएस की धारा 192 के तहत भी प्रथम दृष्टया अपराध बनता है, जो धर्म, जाति, जन्म स्थान, निवास, भाषा या जाति के आधार पर विभिन्न समुदायों के बीच वैमनस्य फैलाने से संबंधित है। हाईकोर्ट ने कहा कि इस्लाम धर्म को मानने वाली कर्नल सोफिया कुरैशी को आतंकवादियों की बहन कहकर अपमानित करना उक्त धाराओं को आकर्षित करता है।

सुप्रभात

मिलो तो इस तरह मिलना
कि हवा हो जाएं लक़ीरों की
सारी शिक़ायतें
और यूँ लगे जैसे सर्द अहसासों के
आँगन में
गुनगुनी धूप उतर आई हो चुपके से
हँसो तो इस तरह हँसना
जैसे चहक उठता है सूरजमुखी
किरणों को देखकर
और कलियाँ निग़ाहों का नज़रबट्टू
पहना देती हैं उसे इठलाकर
कहो तो कुछ यूँ कहना
जैसे बारिश की बूँदें लिपटकर
बोलती हैं पत्तों से
और ओढ़ लेते हैं वृक्ष
सरगम की नवीन धुन कोई
ठहरो तो यूँ ठहरना
जैसे तारों को बाँहों में भर
सदियों से आसमान पर ठहरा है चाँद
और देता है साथ, रात का
जीवन के हर मौसम में

- प्रीति अज्ञात

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर भाजपा की तिरंगा यात्रा

- यूपी-उत्तराखंड और ओडिशा के मुख्यमंत्री यात्रा में हुए शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा देशभर में तिरंगा यात्रा निकाल रही है। बुधवार को लखनऊ में सीएम योगी आदित्यनाथ, देहरादून में उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, ओडिशा के भुवनेश्वर में सीएम मोहन चरण माझी और ठाणे में महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे तिरंगा यात्रा में शामिल हुए। इस दौरान सीएम योगी ने कहा, 'हमारी तीनों सेनाओं के जवानों ने जिस तरह से पाकिस्तान को जवाब दिया, पूरे विश्व ने उनके साहस का लोहा माना है। उन्होंने ये साबित कर दिया है कि अगर कोई भारत को छेड़ेगा तो हम उसे छोड़ेंगे नही।'

यूपी के जेवर में बनेगा सेमीकंडक्टर प्लांट

हर महीने 3.6 करोड़ चिप बनेंगी, 2000 लोगों को मिलेगा रोजगार

ऑपरेशन सिंदूर के बीच मोदी सरकार ने ले लिया है बड़ा फैसला

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर के बीच केंद्र सरकार ने आज बड़ा फैसला लिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने एक और सेमीकंडक्टर यूनिट को मंजूरी दे दी है। इससे भारत के सेमीकंडक्टर मिशन को और गति मिलेगी। पहले से ही पांच सेमीकंडक्टर यूनिट बनाने का काम तेजी से चल रहा है।

आज जिस यूनिट को मंजूरी मिली है, वह एचसीएल और फॉक्सकॉन का जॉइंट वेंचर है। एचसीएल का हार्डवेयर बनाने और विकसित करने का लंबा अनुभव है जबकि फॉक्सकॉन इलेक्ट्रॉनिक्स बनाने वाली एक बड़ी कंपनी है। ये दोनों मिलकर यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण में जेवर हवाई अड्डे के पास एक प्लांट लगाएंगी जिसकी लागत 3706 करोड़ रुपये होगी। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि पाकिस्तान में आंतकी ठिकानों को नेस्तनाबूद करने के लिए हाल में चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर में तकनीक का व्यापक इस्तेमाल हुआ।

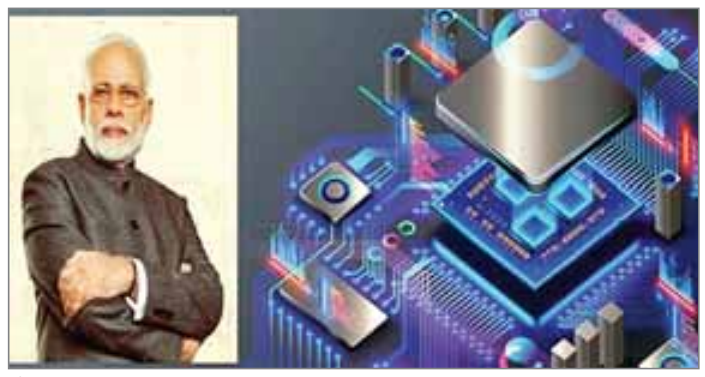

इस प्लांट में मोबाइल फोन, लैपटॉप, ऑटोमोबाइल, पीसी और अन्य कई उपकरणों के लिए डिस्प्ले ड्राइवर चिप्स बनाए जाएंगे। ये चिप्स स्क्रीन को चलाने के लिए जरूरी होते हैं। इस प्लांट में हर महीने 20,000 वेफर्स बनाने की क्षमता होगी। वेफर एक तरह का पतला डिस्क होता है जिस पर चिप्स बनाए जाते हैं। इस प्लांट से हर महीने 36 मिलियन यूनिट (3.6 करोड़) चिप्स बनाने का लक्ष्य है।

भारत को सप्लाई चेन का हब बनाना चाहती है सरकार

वैष्णव ने बताया कि इस प्लांट से 2000 लोगों को रोजगार मिलेगा। सेमीकंडक्टर उद्योग अब पूरे देश में आकार ले रहा है। कई राज्यों में विश्व स्तरीय डिजाइन सुविधाएं शुरू हो गई हैं। राज्य सरकारें भी डिजाइन फर्मों को बढ़ावा दे रही हैं। 270 शैक्षणिक संस्थानों और 70 स्टार्टअप में छात्र और उद्यमी नई तकनीक से नए उत्पाद बनाने में लगे हैं। इन संस्थानों के छात्रों द्वारा विकसित 20 उत्पादों को मोहाली द्वारा टेप आउट किया गया है। टेप आउट का मतलब है कि डिजाइन को मैन्युफैक्चरिंग के लिए तैयार कर लिया गया है। लैपटॉप, मोबाइल फोन, सर्वर, मेडिकल डिवाइस, पावर इलेक्ट्रॉनिक्स, रक्षा उपकरण और उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स के निर्माण में तेजी से वृद्धि के साथ सेमीकंडक्टर की मांग बढ़ रही है। सरकार भारत को सेमीकंडक्टर की सप्लाई चेन का हब बनाना चाहती है। इसके लिए कंपनियों का भारी-भरकम इंसेंटिव दिया जा रहा है। भारत में इस दशक के अंत तक इसका बाजार 110 अरब डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है।

महाराष्ट्र के वाशिम में हिंसा, दो गुटों में जमकर पथराव

- तोड़फोड़ और तनाव के बाद भारी पुलिस फोर्स तैनात

वाशिम (एजेंसी)। महाराष्ट्र के वाशिम शहर में दो गुटों के बीच पथराव हुआ है, जिसमें कई लोग घायल हो गए हैं। बताया जा रहा है कि शहर के पाटणी चौक क्षेत्र में देर रात दो गुटों के बीच विवाद हुआ था, बात इतनी बिगड़ गई कि दोनों पक्षों के बीच पथराव की नौबत आ गई। पाटणी चौक में हुई घटना का असर बागवानपुरा, डंडे चौक और गणेशपेठ जैसे इलाकों में भी देखने को मिला। तनाव को देखते हुए इलाके में भारी फोर्स तैनात कर दी गई है। देर रात करीब 11 बजे कुछ असामाजिक तत्वों ने घरों और वाहनों पर पथराव कर दिया। मौके पर पहुंची पुलिस ने हालात पर काबू पाया।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 38 °c

न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ गुरुवार, 15 मई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

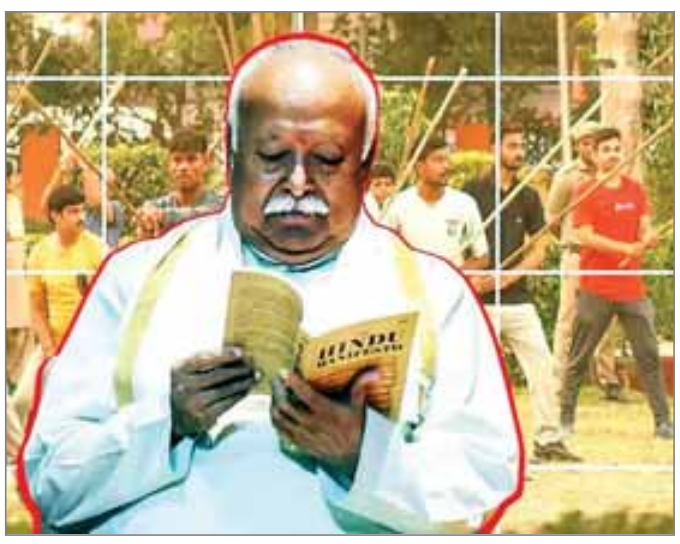

जाति जनगणना से पहले आरएसएस की बड़ी पहल

राजनीतिक लाभ के लिए न हो इस्तेमाल,इस इरादे से समिति बनाने पर विचार

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र की मोदी सरकार की ओर से जनगणना के साथ ही जाति जनगणना भी शामिल करने की घोषणा के बाद आरएसएस एक महत्वपूर्ण कदम उठाने जा रहा है। आरएसएस जाति व्यवस्था की जमीनी हकीकत का आकलन करने के लिए एक समिति बनाने पर विचार कर रहा है।

यह समिति सामाजिक-राजनीतिक चिंताओं पर एक व्यवस्थित दृष्टिकोण तैयार करेगी। आरएसएस का मानना है कि जाति आधारित डेटा का उपयोग केवल सार्वजनिक कल्याण के लिए होना चाहिए, न कि राजनीतिक लाभ के लिए। संगठन का शीर्ष नेतृत्व इस आंतरिक विचार पर मंथन कर रहा है। आरएसएस के एक वरिष्ठ पदाधिकारी के अनुसार यह सुझाव आंतरिक संचार के माध्यम से दिया गया है। इससे पता चलता है कि आरएसएस जाति समीकरणों और सामाजिक-आर्थिक प्रभाव पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

एक अन्य पदाधिकारी ने बताया कि प्रस्तावित समिति को मौजूदा जाति संबंधी डेटा का विश्लेषण करना चाहिए। साथ ही, नए सर्वेक्षण भी करने चाहिए, ताकि कल्याणकारी योजनाओं की प्रभावशीलता को समझा जा सके। समिति को ऐसे प्रमाण-आधारित बातों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जो राज्य और केंद्र सरकारों के लिए नीति निर्धारण में मदद कर सकें।

डेटा का उद्देश्य सामाजिक उत्थान होना चाहिए- आरएसएस हमेशा से इस बात पर जोर देता रहा है कि इस कदम का उद्देश्य जातिगत विभाजन को गहरा करना नहीं है, बल्कि उन चीजों को खत्म करना है जो लोगों को बांटती हैं। एक वरिष्ठ पदाधिकारी ने कहा, इस देश में ऐसी ताकतें हैं, जिन्होंने लंबे समय से जाति पहचान के आधार पर हिंदुओं को विभाजित करने की कोशिश की है। उनका एकमात्र उद्देश्य राजनीतिक लाभ प्राप्त करने के लिए हिंदुओं को विभाजित करना रहा है। उन्होंने आगे कहा, ऐसा नहीं होने दिया जा सकता। डेटा का उद्देश्य उत्थान होना चाहिए, न कि वोट-बैंक का गणित। इसका मतलब है कि डेटा का इस्तेमाल लोगों को ऊपर उठाने के लिए होना चाहिए, न कि सिर्फ वोटों के लिए।

एमपी के 3 जिलों में बदले प्रभारी मंत्री

बड़वानी में टेटवाल, इंदर को दमोह और दिलीप को मंडला का प्रभार दिया

भोपाल (नप्र)। कर्नल सोफिया को लेकर जनजातीय कार्य मंत्री विजय शाह के बयान के बाद राजधानी में चल रही राजनीतिक गहमागहमी के बीच तीन जिलों के प्रभारी मंत्री बदले गए हैं। बड़वानी जिले का प्रभार अब तकनीकी शिक्षा मंत्री गौतम टेटवाल को दिया गया है।

अभी यह जिला उच्च शिक्षा तथा तकनीकी शिक्षा व कौशल विकास विभाग के मंत्री इंदर सिंह परमार के प्रभार के जिलों में शामिल था। परमार अभी पन्ना जिले के भी प्रभारी मंत्री थे। अब वे दो पड़ोसी जिलों दमोह और पन्ना का प्रभार संभालेंगे।

सामान्य प्रशासन विभाग के उपसचिव अजय कटेसरिया द्वारा जारी आदेश के मुताबिक कौशल विकास और रोजगार विभाग के राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम टेटवाल को बड़वानी जिले का प्रभारी मंत्री बनाया गया है। टेटवाल अभी उज्जैन के प्रभारी मंत्री हैं और उज्जैन की जिम्मेदारी उनके पास बनी रहेगी। उज्जैन मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव का गृह जिला है। टेटवाल को अब दो जिलों की जिम्मेदारी मिल गई है।

टेटवाल और जायसवाल के पास थे एक-एक जिले

रामनिवास रावत के पास दमोह जिले का प्रभार था लेकिन उनके विधानसभा चुनाव हार जाने के बाद दमोह जिले का प्रभार किसी मंत्री को नहीं सौंपा गया था। रामनिवास रावत के पास मंडला जिले का भी प्रभार था विधानसभा चुनाव हारने के बाद उन्होंने मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था अब राज्य मंत्री दिलीप जायसवाल को मंडला जिले का प्रभार दिया गया है। गौतम टेटवाल और दिलीप जायसवाल के पास अब तक सिर्फ एक-एक जिले का प्रभार था।

6 महीने बाद दमोह और मंडला को मिले प्रभारी मंत्री

पिछले साल नवंबर में विजयपुर विधानसभा से उपचुनाव हारने के बाद रामनिवास रावत ने मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था 5 दिसंबर को उनका इस्तीफा मंजूर हो गया था इसके बाद से ही मंडला और दमोह जिले में प्रभारी मंत्री नहीं थे 6 महीने बाद दोनों जिलों का प्रभार अलग-अलग मंत्रियों को दिया गया है।

तबादलों पर छूट के बीच आया आदेश

राज्य शासन ने एक मई से तबादलों पर प्रतिबंध हटा लिया है और 30 मई तक तबादले किए जा सकेंगे। तबादलों के सीजन में मंत्री परमार के प्रभार के जिले में किए गए बदलाव को लेकर अलग-अलग अटकलें लगाई जा रही हैं।

कांग्रेस का सवाल- सीजफायर में अमेरिका का क्या रोल

पीएम मोदी-जयशंकर जवाब दें, कश्मीर पर चर्चा सिर्फ भारतीय संसद में ही हो सकती है

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा, पिछले कुछ दिनों से कांग्रेस पार्टी पूछ रही है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष विराम की घोषणा क्यों की? ऐसा पहली बार हो रहा है। पीएम मोदी इस पर कुछ नहीं बोलते हैं। अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो कहते हैं कि अमेरिका की भूमिका इतनी महत्वपूर्ण थी कि उनकी वजह से ही यह युद्ध रुका। विदेश मंत्री डॉ. जयशंकर इसका जवाब भी नहीं देते हैं। हम

लगातार पूछ रहे हैं कि पीएम मोदी और विदेश मंत्री इस बात का जवाब क्यों नहीं दे रहे हैं कि अमेरिका की भूमिका क्या है?

उन्होंने कहा, कश्मीर पर चर्चा सिर्फ भारतीय संसद में ही हो सकती है। इस पर मध्यस्थता करने का अधिकार किसी को नहीं। हम अपनी सेना के साथ चट्टान की तरह खड़े हैं। हम आतंकवाद के खिलाफ और पाकिस्तान के खिलाफ जो कार्रवाई की जा रही है उसका पूरा समर्थन कर रहे हैं।हमने यह भी मांग की है कि एक सर्वदलीय बैठक बुलाई जाए। दो सर्वदलीय बैठकें हुईं, लेकिन पीएम मोदी दोनों बैठक में मौजूद नहीं थे, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने पहलगाम आतंकी हमले पर चर्चा के लिए संसद का विशेष सत्र बुलाने के लिए पीएम मोदी को पत्र लिखा है।

सीजफायर के जवाब में कांग्रेस का पोस्टर- इंदिरा होना आसान नहीं- भारत और पाकिस्तान के बीच 10 मई को सीजफायर का ऐलान किया गया था। इसके एक दिन बाद कांग्रेस ने दिल्ली में हेडक्वार्टर के बाहर 'इंदिरा होना आसान नहीं' वाला पोस्टर लगाया।इस पोस्टर के साथ ही 1971 के युद्ध में पाकिस्तान के सरेंडर वाली तस्वीरें भी लगाईं। पोस्टर में इंडिया मिस इंदिरा (भारत इंदिरा को याद कर रहा है) की बात भी लिखी गई।

लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और राज्यसभा के नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने प्रधानमंत्री को लेटर लिखकर संसद का विशेष सत्र तुरंत बुलाने का अनुरोध किया है। कांग्रेस महासचिव सचिन पायलट ने भारत-पाक के बीच अमेरिका की मध्यस्थता को लेकर सवाल उठाए। उन्होंने कहा- अमेरिका दो दिन पहले कहता है कि इस मसले से उसका कोई लेना देना नहीं है, फिर अचानक वॉशिंगटन से सीजफायर की घोषणा होती है, जो कई सवाल खड़े करती है।

अमेरिकी एक्सपर्ट बोले

ऑपरेशन सिंदूर पाकिस्तान कब्जे के लिए नहीं था

रणनीतिक मकसद के लिए था, भारत ने इसे 4 दिन में पूरा किया

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका के मिलिट्री एक्सपर्ट जॉन स्पेंसर ने कहा है कि भारत ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के जरिए अपने रणनीतिक मकसद को पूरा कर लिया है। उन्होंने कहा कि यह ऑपरेशन पीओके पर कब्जे या फिर पाकिस्तान की सत्ता बदलने की मकसद से नहीं शुरू किया गया था। एक्सपर्ट ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर अभी खत्म नहीं हुआ है। कुछ लोग इसे सीजफायर कह सकते हैं, लेकिन यह विराम नहीं है। फिलहाल भारत ने एक बड़ी जीत हासिल कर ली है।स्पेंसर के मुताबिक भारत ने पहले की तरह न तो संयुक्त राष्ट्र का दरवाजा खटखटाया और न ही पाकिस्तान को चेतावनी दी। भारत ने सीधे लड़ाकू विमान भेजे और सटीक हमला किया। उन्होंने कहा कि भारत ने इस ऑपरेशन के जरिए आतंक के खिलाफ उसकी रणनीति को नए स्तर पर पहुंचाया और पाकिस्तान को भी साफ संदेश दिया है कि आतंक का जवाब युद्ध से मिलेगा। जॉन स्पेंसर मॉडर्न वॉर इंस्टीट्यूट में चेयरमैन हैं। उन्होंने कहा कि इंडियन एयर फोर्स ने 7 मई को पाकिस्तान में 9 ठिकानों पर सटीक हमला किया था। इससे पाकिस्तान और पीओके में मौजूद अहम आतंकी शिविर तबाह हो गए।उन्होंने कहा कि भारत ने सिर्फ दिखावे के लिए एक्शन नहीं लिया बल्कि सोच-समझकर पूरी प्लानिंग के साथ हमला किया।

गलती से सीमापार जाने पर पकड़ा गया बीएसएफ जवान हो गया रिहा

● डीजीएमओ लेवल की बातचीत के बाद पाकिस्तान ने छोड़ा,20 दिन बाद आया बाहर

अमृतसर (एजेंसी)। पाकिस्तान ने भारत के बीएसएफ के जवान पूर्णम कुमार शॉ को छोड़ दिया है। कॉन्स्टेबल पूर्णम बुधवार सुबह साढ़े 10 बजे अटारी-वाघा बॉर्डर से भारत लौट आए। डीजीएमओ लेवल पर बातचीत के बाद उन्हें 20 दिनों के बाद छोड़ा गया है। उन्हें मेडिकल जांच के लिए ले जाया गया है। पूछताछ के बाद उन्हें घर जाने दिया जाएगा। बीएसएफ ने प्रेस रिलीज के जरिए कॉन्स्टेबल पूर्णम के भारत लौटने की जानकारी दी है। इसमें बताया कि पूर्णम शॉ 23 अप्रैल को फिरोजपुर सेक्टर में ऑपरेशनल ड्यूटी के दौरान गलती से पाकिस्तान चले गए थे। इसके बाद उन्हें पाकिस्तान रेंजर्स ने हिरासत में ले लिया था। पहलगाम में 22 अप्रैल को आतंकी हमले के अगले दिन पाकिस्तान रेंजर्स ने बीएसएफ जवान पूर्णम कुमार शॉ की दो फोटो जारी की थीं। पहली फोटो में पूर्णम पेड़ के नीचे खड़े थे। उनकी राइफल, पानी की बोतल, बैग

जमीन पर पड़ा था। दूसरी फोटो में जवान की आंखों पर पट्टी बंधी थी। जवान शॉ मूल रूप से पश्चिम बंगाल में हुगली के रिसड़ा गांव के रहने वाले हैं। वह 23 अप्रैल को फिरोजपुर में किसानों के साथ भारत-पाक बॉर्डर पर ड्यूटी कर रहे थे।

● पत्नी बोली मोदी है तो मुमकिन है- रजनी ने कहा- मोदी जी (पीएम नरेंद्र मोदी) हैं तो सब मुमकिन है।22 अप्रैल को पहलगाम में अटैक हुआ तो उन्होंने 15-16 दिन के भीतर ही ऑपरेशन सिंदूर चलाकर उन सभी का बदला लिया, जिनके सुहाग आतंकियों ने उजाड़े।उसके 3-4 दिन बाद ही उन्होंने मेरा सुहाग वापस कर दिया।उन्हें मैं धन्यवाद देना चाहती हूं।जवान की पत्नी ने कहा- 3-4 दिन पहले मेरी सीएम (ममता बनर्जी) से भी बात हुई थी।उन्होंने कहा था कि आपके पति जल्द घर आ जाएंगे, क्योंकि वह भी बीएसएफ के अधिकारियों से लगातार बात कर रही थीं।सभी का सपोर्ट रहा। पूरा देश मेरे लिए खड़ा था। मैं सभी का धन्यवाद करती हूं।

ब्रह्मोस-आकाश मिसाइल का निर्माण होगा और तेज

● ड्रोन पर भी रहेगा फोकस, स्थगित हुआ है 'ऑपरेशन सिंदूर' खत्म नहीं

हैदराबाद (एजेंसी)। पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत के ऑपरेशन सिंदूर में ब्रह्मोस और आकाश मिसाइट सटीकी साबित हुई है। पाकिस्तान के बढ़े तनाव को देखते हुए भारत सरकार इन मिसाइल उत्पादन में तेजी ला रही है। हैदराबाद में निर्माता ब्रह्मोस और आकाश जैसी मिसाइलों के लिए महत्वपूर्ण प्रणालियों को जल्दी से जल्दी वितरित करने के लिए काम कर रहे हैं। रक्षा मंत्रालय ड्रोन और ड्रोन रोधी तकनीक कंपनियों के साथ मिलकर अपनी क्षमताओं को बढ़ाने की कोशिश कर रहा है। कमांडरों के पास कमजोरियों, खास तौर पर हवाई खतरों से निपटने के लिए खरीद अधिकार हैं। पीएम मोदी ने राष्ट्र को संबोधित करते हुए कहा था कि ऑपरेशन सिंदूर स्थगित हुआ है, खत्म नहीं।

चीफ जस्टिस बने गवई राष्ट्रपति ने दिलाई शपथ

● देश के पहले बौद्ध चीफ जस्टिस,6 महीने का कार्यकाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। जस्टिस भूषण रामकृष्ण गवई ने भारत के 52वें चीफ जस्टिस के रूप में शपथ ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जस्टिस गवई को सीजेआई पद की शपथ दिलाई। मौजूदा सीजेआई संजीव खन्ना का कार्यकाल 13 मई को खत्म हो चुका है। सीजेआई खन्ना के बाद वरिष्ठता सूची में जस्टिस गवई का नाम था। इसलिए जस्टिस खन्ना ने उनका नाम आगे बढ़ाया। हालांकि, उनका कार्यकाल सिर्फ 6 महीने का है। सीजेआई गवई देश के दूसरे दलित और पहले बौद्ध चीफ जस्टिस हैं। सुप्रीम कोर्ट की वेबसाइट पर दिए प्रोफाइल के मुताबिक, जस्टिस गवई 24 मई 2019 को सुप्रीम कोर्ट जज के रूप में प्रमोट हुए थे। उनके रिटायरमेंट की तारीख 23 नवंबर 2025 है। राष्ट्रपति भवन में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह समेत कई केंद्रीय मंत्री भी मौजूद रहे। सीजेआई गवई की मां कमलताई ने कहा, मैंने हमेशा चाहा था कि मेरे बच्चे अपने पिता के रास्ते पर चलें और समाज की सेवा करें। भूषण ने बचपन से ही कठिन परिस्थितियों का सामना किया और मेहनत से पद तक पहुंचे हैं।

चीन के खिलाफ पहली बार भारत का बड़ा ऐक्शन

सरकारी भोंपू ग्लोबल टाइम्स और शिन्हुआ पर लगाया बैन

बीजिंग/नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने पाकिस्तान की मदद करने वाले चीन के खिलाफ पहला बड़ा ऐक्शन लिया है। भारत सरकार ने प्रोपेगेंडा फैलाने वाले ग्लोबल टाइम्स और शिन्हुआ न्यूज के सोशल मीडिया एकाउंट्स को ब्लॉक कर दिया है। रिपोर्ट के मुताबिक चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के मुखपत्र शिन्हुआ न्यूज को भी भारत ने ब्लॉक कर दिया है। चीन सिन्हुआ न्यूज

कई सालों से भारत के खिलाफ गलत सूचना, फर्जी खबरें और दुष्प्रचार फैलाने में लगा हुआ था। ग्लोबल टाइम्स के बाद शिन्हुआ को भी ब्लॉक कर दिया गया है। ऑपरेशन सिन्दूर के दौरान ग्लोबल टाइम्स पूरी बेशर्मी के साथ झूठ फैलाने में लगा था और बीजिंग में भारत के राजदूत ने इसके लिए चीनी मीडिया ऑउटलेट को फटकार भी लगाई थी। ग्लोबल टाइम्स बार बार ये नैरेटिव फैलाने की कोशिश कर रहा था कि भारत बिना किसी उकसावे के कार्रवाई कर रहा था।

मोदी को मिला महबूबा का साथ,उमर भी समर्थन में

● भारत-पाकिस्तान मुद्दे पर अकेले पड़ गए राहुल गांधी

जम्मू (एजेंसी)। भारत-पाकिस्तान के बीच शांति पर हुई डील और ट्रंप के हस्तक्षेप को लेकर सियासी घमासान छिड़ा है। राहुल गांधी ने सर्वदलीय बैठक बुलाने की मांग की। उन्होंने पीएम मोदी को निशाना बनाया। इंडिया गठबंधन का हिस्सा उद्धव ठाकरे शिवसेना भी राहुल गांधी के समर्थन में आ गई लेकिन इसी बीच पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) प्रमुख महबूबा मुफ्ती पीएम मोदी के बचाव में उतरी हैं। उन्होंने कहा कि नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार को शांतिपूर्ण तरीके तलाशने के लिए राजनीतिक रूप से दंडित नहीं किया जाना चाहिए और विपक्ष को राजनीति से ऊपर उठकर शांति एवं स्थिरता के लिए वास्तविक प्रयासों का समर्थन करना चाहिए। वहीं उमर अब्दुल्ला भी पीएम के साथ हैं। महबूबा मुफ्ती ने कहा,मैं सभी विपक्षी दलों से अपील करती हूं कि

वे बिना सोचे-समझे आलोचना करने या राजनीतिक फायदा देखने की प्रवृत्ति से बचें। जिस तरह पहलगाम की घटना ने कश्मीर से कन्याकुमारी तक आवाजें एक कर दीं, उसी तरह शांति प्रक्रिया के इर्द-गिर्द राष्ट्रीय आम सहमति बनाने की जरूरत है।

चीन को रास नहीं आया भारत-पाकिस्तान का सीजफायर

● अमेरिका की एंट्री से धरी की धरी रह गई ड्रैगन का प्लानिंग

बीजिंग (एजेंसी)। भारत और पाकिस्तान के बीच युद्धविराम को हुए कई दिन बीत चुके हैं, लेकिन इसे लेकर दावों और अटकलों का दौर खत्म नहीं हो रहा है। सभी की कोशिश इस बात को जानने में है कि 10 मई को युद्धविराम की घोषणा के दिन वास्तव में क्या हुआ था। सबसे पहले अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोशल मीडिया पर युद्धविराम की घोषणा की थी। ट्रंप ने इस युद्धविराम का क्रेडिट अपने प्रशासन को दिया, तो पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ भी उनके पीछे खड़े हो गए। शरीफ ने युद्धविराम के लिए ट्रंप को शुक्रिया कह दिया लेकिन ऐसा लगता है कि भारत के साथ युद्धविराम को लेकर पाकिस्तान का दोस्त चीन उससे नाराज हो गया है। युद्धविराम को लेकर कोई जो भी दावा करे, भारत ने इस मामले में शुरू से ही साफ-साफ बता दिया कि यह दोनों देशों के बीच डीजीएमओ स्तर की बातचीत के बाद हुआ था। विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने 10 मई को इसकी जानकारी देते हुए बताया था कि पाकिस्तान के डीजीएमओ से फोन आया था।

पूर्व रक्षा सचिव अजय कुमार यूपीएससी के नए चेयरमैन

● मोदी सरकार ने किया नियुक्त, प्रीति सूदन की लेंगे जगह

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय प्रशासनिक सेवा के रिटायर्ड अधिकारी और पूर्व रक्षा सचिव डॉ. अजय कुमार को संघ लोक सेवा आयोग का नया अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग ने मंगलवार देर रात एक आधिकारिक आदेश जारी कर उनकी नियुक्ति की जानकारी दी।

आदेश में कहा गया, राष्ट्रपति को संविधान के अनुच्छेद 316(1) के तहत डॉ. अजय कुमार को संघ लोक सेवा आयोग का अध्यक्ष नियुक्त करते हुए प्रसन्नता हुई है। यह अनुच्छेद लोक सेवा आयोगों के सदस्यों की नियुक्ति से संबंधित है। डॉ. अजय कुमार 1985 बैच के केरल कैडर के अधिकारी हैं। उनकी यूपीएससी अध्यक्ष के रूप में नियुक्ति उसी दिन से प्रभावी होगी, जिस दिन वह कार्यभार ग्रहण करेंगे। डॉ. अजय कुमार ने रक्षा मंत्रालय के सचिव के रूप में कार्य किया है और अपने कार्यकाल के दौरान कई अहम रक्षा सुधारों में भूमिका निभाई। अब वह यूपीएससी जैसे प्रतिष्ठित आयोग की कमान संभालेंगे, जो देश की सबसे कठिन और प्रतिष्ठित परीक्षाओं का आयोजन करता है। अजय कुमार की नियुक्ति प्रीति सूदन के कार्यकाल की समाप्ति के बाद हुई है। पूर्व स्वास्थ्य सचिव प्रीति सूदन को जुलाई 2024 में यूपीएससी अध्यक्ष नियुक्त किया गया था, जब तत्कालीन अध्यक्ष मनोज सोनी ने अचानक इस्तीफा दे दिया था। उनका कार्यकाल 29 अप्रैल को समाप्त हुआ। मनोज सोनी जून 2017 से मई 2023 तक यूपीएससी के सदस्य रहे। उन्होंने अध्यक्ष बनने के कुछ ही समय बाद जून 2024 की शुरुआत में निजी कारणों का हवाला देते हुए इस्तीफा दे दिया था। हालांकि, सोनी के इस्तीफे को लेकर विपक्षी दलों ने सवाल उठाए थे।

विजय शाह के विवादित बयान पर कांग्रेस का प्रदर्शन

मंत्री का पुतला फूंका, महिला पार्षद बोलीं- मुंह काला करने वाले को दूंगी 51 हजार का इनाम

इंदौर (एजेंसी)। मध्यप्रदेश के आदिम जाति कल्याण मंत्री विजय शाह द्वारा ऑपरेशन सिंदूर में शामिल सेना की अधिकारी कर्नल सोफिया कुरैशी को लेकर दिए गए विवादित बयान के बाद बुधवार को इंदौर में कांग्रेस सेवादल के नेताओं ने गांधी प्रतिमा पर कर्नल सोफिया और सैन्य अधिकारी व्योमिका सिंह के पोस्टर लगाकर उनका दूध से अभिषेक किया और मंत्री विजय शाह से तत्काल इस्तीफे की मांग की। सेवादल के कार्यकारी अध्यक्ष विवेक खंडेलवाल और नेता गिरीश जोशी ने कहा कि एक्स सोफिया कुरैशी और व्योमिका सिंह जैसी भारत माता की बेटियों ने ऑपरेशन सिंदूर में अदम्य साहस दिखाकर पाकिस्तान को करारा जवाब दिया। लेकिन राज्य के मंत्री विजय शाह ने जिस भाषा में बात की, वह हमारी बहनों का अपमान है। अगर तत्काल इस्तीफा नहीं लिया तो कांग्रेस उग्र आंदोलन करेगी। कांग्रेस सेवादल के नेताओं ने गांधी प्रतिमा पर कर्नल सोफिया और सैन्य अधिकारी व्योमिका सिंह के पोस्टर लगाकर उनका दूध से अभिषेक किया।

शाह बोले- भाषण को गलत संदर्भ में न देखें

वीडियो वायरल होने के बाद मंत्री विजय शाह ने मंगलवार को मीडिया से कहा- प्रधानमंत्री ने हमारी बहनों का सिंदूर उजाड़ने वालों को उन्हीं की भाषा में जवाब दिया है। मेरे भाषण को अलग संदर्भ में न देखें। कुछ लोग इसे अलग संदर्भ में देख रहे हैं। वो हमारी बहनें हैं और उन्होंने पूरी ताकत से सेना के साथ मिलकर काम किया है।

इंदौर कांग्रेस ने फूंका मंत्री शाह का पुतला

कर्नल सोफिया कुरैशी को लेकर दिए गए बयान को लेकर शहर कांग्रेस और महिला मोर्चा ने मंत्री विजय शाह के खिलाफ नारेबाजी की और उनका पुतला फूंका। इस दौरान शहर कांग्रेस अध्यक्ष सुरजीत सिंह चड्ढा ने कहा कि विजय शाह का यह बयान अत्यधिक आपत्तिजनक है।

इंदौर पार्षद ने मंत्री शाह पर किया इनाम घोषित

मंत्री विजय शाह के खिलाफ कांग्रेस का विरोध लगातार तेज हो रहा है। इंदौर की वार्ड क्रमांक 20 की कांग्रेस पार्षद यशस्वी पटेल ने कहा-भाजपा को तत्काल उनसे इस्तीफा लेना चाहिए। यदि ऐसा नहीं किया गया तो विरोध और उग्र होगा।

पूर्व विधायक पहुंचे सोफिया के घर, कहा- वो देश की बेटी

बयान के बाद मामला तूल पकड़ता देख भाजपा ने भी सक्रियता दिखाई। मंगलवार देर रात बीजेपी के पूर्व विधायक मानवेंद्र सिंह कर्नल सोफिया कुरैशी के छतरपुर जिले के नौगांव स्थित निवास पर पहुंचे और परिजनों से मुलाकात की। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा के निर्देश पर भेजी गई टीम ने सोफिया के परिवार को 'देश की बेटी' बताते हुए समर्थन और सम्मान का संदेश दिया।

कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष खड़गे ने एक्स पर लिखा

मध्यप्रदेश सरकार के मंत्री ने देश की वीर बेटी कर्नल सोफिया कुरैशी के बारे में बेहद अपमानजनक और शर्मनाक टिप्पणी की है। पहलगाम हमले के बाद जब पूरा देश एकजुट था, तब भाजपा नेता सेना की बेटियों को नीचा दिखाने वाले बयान दे रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी को तत्काल विजय शाह को मंत्रिमंडल से बर्खास्त करना चाहिए।

असिस्टेंट प्रोफेसर परीक्षा की तारीख बदलवाने एमपीपीएससी ऑफिस पहुंचे अभ्यर्थी

5 मांगों के साथ आयोग को सौंपा ज्ञापन,अधिकारियों ने दिया आश्वासन

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में सहायक प्राध्यापक परीक्षा की तारीख आगे बढ़ाने के लिए बुधवार को अभ्यर्थी एमपीपीएससी ऑफिस पहुंचे। उन्होंने अधिकारियों से मिलकर ज्ञापन सौंपने की इच्छा जताई। जिसके बाद ऑफिस के गेट पर ही अधिकारियों ने ज्ञापन स्वीकार कर लिया। अभ्यर्थियों ने ज्ञापन के जरिए अपनी मांगें विभाग के समक्ष रखी है। उनकी मांग की है कि सहायक प्राध्यापक परीक्षा की प्रस्तावित तारीख, 1 जून 2025, को आगे बढ़ाया जाए। इस मांग के समर्थन में अभ्यर्थियों ने पांच कारण भी बताए हैं। फिलहाल आयोग की ओर से उन्हें आश्वासन दिया गया है।

ये है अभ्यर्थियों के वह पांच मांगे-सहायक प्राध्यापक परीक्षा 2022 के कई विषयों के परिणाम अभी तक घोषित नहीं हुए हैं। इससे वे अभ्यर्थी, जो पहले ही इस परीक्षा में सफल हो चुके हैं या जिनके सफल होने की संभावना अधिक है, दोबारा परीक्षा में शामिल हो रहे हैं। इससे नए अभ्यर्थियों के साथ अन्याय होगा, क्योंकि मुख्य परीक्षा में वेटिंग लिस्ट जारी नहीं होती और ऐसे में नए छात्र मुख्य परीक्षा में असफल हो सकते हैं। कुछ विषयों के साक्षात्कार अभी भी जारी हैं, जबकि कुछ विषयों के साक्षात्कार की तारीखें अभी तक घोषित नहीं की गई हैं। इससे छात्रों में भ्रम की स्थिति बनी हुई है। मध्यप्रदेश राज्य पात्रता परीक्षा के नियम मुताबिक, नेट या एमपीएसईटी उत्तीर्ण अभ्यर्थी फॉर्म नहीं भर सकते ताकि नए छात्रों को अवसर मिल सके। इसी तरह, सहायक प्राध्यापक परीक्षा में भी जो अभ्यर्थी एक बार पास हो चुके हैं, उन्हें दोबारा परीक्षा में शामिल नहीं होना चाहिए। यह तभी संभव है जब परीक्षा से पहले रिजल्ट जारी कर दिए जाएं। सहायक प्राध्यापक की वैकेंसी हर साल नहीं आती। अब तक केवल 1991, 2017 और 2022 में ही यह परीक्षा आयोजित की गई है। इसलिए, 2022 की भर्ती प्रक्रिया पूर्ण होने से पहले नई परीक्षा आयोजित नहीं की जानी चाहिए। कंप्यूटर साइंस को सह-विषय के रूप में बाद में जोड़ा गया, जिससे हजारों अभ्यर्थी बाहर हो गए। केवल वे ही आवेदन कर पाए जिन्हें कोर्ट से अनुमति मिली। ऐसे में सभी पात्र अभ्यर्थियों को आवेदन का मौका दिया जाना चाहिए। अभ्यर्थियों ने मांग की है कि सहायक प्राध्यापक परीक्षा की तारीख को आगे बढ़ाया जाए।

भस्म आरती दर्शन

भगवान महाकाल का पंचामृत, भांग, चन्दन, बिलपत्र अर्पित कर श्रृंगार

उज्जैन (एजेंसी)। विश्व प्रसिद्ध श्री महाकालेश्वर मंदिर में बुधवार तड़के भस्म आरती के दौरान मंदिर के कपाट खोलते ही सबसे पहले वीरभद्र जी को प्रणाम कर स्वस्ति वाचन कर आज्ञा लेकर चांदी द्वार को खोला गया। गर्भगृह के पट खोलकर पुजारी ने भगवान का श्रृंगार उतार कर पंचामृत पूजन के बाद कपूर आरती की। भगवान महाकाल को पंचामृत, भांग, चन्दन, बिलपत्र अर्पित कर श्रृंगार किया गया। नंदी हाल में नंदी जी का स्नान, ध्यान, पूजन किया गया। जल से भगवान महाकाल का अभिषेक करने के बाद दूध, दही, घी, शकर, शहद फलों के रस से बने पंचामृत से पूजन किया गया। ड्रायफ्रूट, फल, मिठाई का भोग लगाकर भस्म चढ़ाई गई। शेषनाग का रजत मुकुट, रजत की मुण्डमाल और रुद्राक्ष की माला के साथ-साथ सुगन्धित पुष्प से बनी फूलों की माला धारण की भगवान महाकाल ने। भस्म आरती में बड़ी संख्या में पहुंचे श्रद्धालुओं ने बाबा महाकाल का आशीर्वाद लिया। महा निर्वाणी अखाड़े की ओर से भगवान महाकाल को भस्म अर्पित की गई। मान्यता है कि भस्म अर्पित करने के बाद भगवान निराकार से साकार रूप में दर्शन देते है।

प्रेमी के कमरे में युवती ने लगाई फांसी

सिलाई का कहकर घर से निकली थी, परिजनों ने लगाए गंभीर आरोप

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के द्वारकापुरी इलाके में मंगलवार को एक 23 वर्षीय युवती ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। युवती का शव उसके प्रेमी के किराए के कमरे में फंदे पर लटका मिला। युवती मंगलवार सुबह सिलाई का काम बताकर घर से निकली थी, लेकिन रात तक वापस नहीं लौटी। बुधवार सुबह जब परिजनों को उसकी मौत की जानकारी मिली तो परिवार में कोहराम मच गया। द्वारकापुरी पुलिस के अनुसार मृतका की पहचान स्वाति सोलंकी (23) निवासी विदुर नगर के रूप में हुई है। वह वैष्णो कॉलेज से मैनेजमेंट में मास्टर्स की पढ़ाई कर रही थी। उसके पिता गजानंद सोलंकी स्कूल वैन चलाते हैं और परिवार में दो छोटी बहनें भी हैं। पुलिस ने बताया कि स्वाति का पिछले 5 वर्षों से लोकेश चौहान नामक युवक से प्रेम संबंध था। लोकेश ने द्वारकापुरी क्षेत्र में किराए का कमरा लिया हुआ था, जहां दोनों अक्सर मिलते थे। यहीं सिलाई का काम करने के बहाने स्वाति आती-जाती थी। मंगलवार को जब स्वाति का लोकेश से संपर्क नहीं हुआ, तो उसने कई बार कॉल किया लेकिन जवाब नहीं मिला। रात में जब उसने स्वाति के घर पर संपर्क किया तो परिजनों ने भी उसकी गुमशुदगी की जानकारी दी। इसके बाद वह पुलिस के पास पहुंचा। पुलिस ने मोबाइल की लोकेशन निकाली लेकिन स्वाति का पता नहीं चला। बुधवार सुबह लोकेश जब अपने कमरे पर पहुंचा तो स्वाति फंदे पर लटकी मिली। उसने तत्काल पुलिस और स्वाति के परिवार को सूचना दी।

डॉक्टर के किराएदार सहित एक अन्य ने लगाई फांसी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के दो अलग-अलग क्षेत्रों में मंगलवार को दो युवकों ने फांसी लगाकर जान दे दी। एक युवक डॉक्टर के मकान में रहता था, तो दूसरा एक दिन पहले ही अपनी बुआ के बेटे की शादी से लौटा था। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस ने मृतक का मोबाइल जब्त किया है।

बुआ के घर से लौटा और फांसी लगा ली- राउ निवासी 18 वर्षीय मनीष मालीवाड़ पुत्र गुलाब सिंह ने मंगलवार को कमरे में फांसी लगा ली। वह एक दिन पहले ही धार से लौटा था। वहां बुआ के बेटे की शादी थी। मनीष को काम पर जाना था, पर थकान बताकर वह काम पर नहीं गया और बाद में फांसी के फंदे पर झूल गया। पड़ोसियों ने मनीष को फंदे पर लटका देखा और उसे लेकर एमवाय अस्पताल पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मृतक का मोबाइल जब्त कर लिया और मर्ग कायम का जांच शुरू कर दी है। घटना के वक्त मनीष का छोटा भाई और माता-पिता काम पर गए थे। पुलिस के मुताबिक परिवार ने किसी से विवाद होने की बात से इंकार किया है। वही मनीष को किसी तरह की परेशानी भी नहीं थी।

सोशल मीडिया पर 'फैजान' बना राहुल, एफआईआर

दोस्ती कर होटल में किया रेप, फिर धमकाया- धर्म बदलो वरना वीडियो वायरल कर दूंगा

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में खजराना पुलिस ने खंडवा निवासी 28 वर्षीय युवती की शिकायत पर नाम बदलकर दोस्ती करने, रेप और धर्म परिवर्तन के लिए दबाव डालने के आरोप में नागदा निवासी फैजान खान उर्फ राहुल के खिलाफ केस दर्ज किया है। पुलिस के अनुसार, आरोपी ने युवती के साथ कई बार होटल में ज्यादती की और उसका मानसिक व शारीरिक शोषण करता रहा।

पीड़िता ने पुलिस को बताया कि साल 2018 में आरोपी ने खुद को 'राहुल' बताकर उसे सोशल मीडिया पर फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजी थी। बातचीत बढ़ी और 2019 में दोनों के बीच मोबाइल पर संपर्क शुरू हो गया। एक बार जब पीड़िता अपने रिश्तेदारों से मिलने इंदौर आई थी, तो राहुल ने उसे एक कैफे में मिलने बुलाया। इसके बाद भी दोनों के बीच संपर्क

बना रहा। साल 2020 में रक्षा बंधन के समय पीड़िता जब नाना-नानी से मिलने इंदौर आई, तो राहुल ने उसे सी-21 मॉल के पास स्थित स्काय होटल में बुलाया, जहां उसने जबरन शारीरिक संबंध बनाए और शादी का झांसा दिया। इसके बाद भी उसने कई बार इसी होटल और अपने दोस्तों के ठिकानों पर ले जाकर उसके साथ रेप किया। कुछ समय बाद आरोपी ने खुद का असली नाम 'फैजान' बताया और युवती से मुस्लिम धर्म अपनाने का दबाव बनाने लगा। जब पीड़िता ने इसका विरोध किया और रिश्ता खत्म करने की बात कही, तो फैजान ने उसके फोटो और वीडियो वायरल करने की धमकी दी। साथ ही उसकी छोटी बहन के भविष्य को लेकर भी ब्लैकमेल किया।

पीड़िता ने बताया कि आरोपी पिछले कुछ वर्षों से लगातार उस पर धर्म परिवर्तन के लिए दबाव बना रहा था और शारीरिक शोषण कर रहा था। 7 मई 2025 को फैजान ने फिर उसे इंदौर बुलाया, लेकिन जब वह नहीं पहुंची तो आरोपी खंडवा आ गया। वहां उसने युवती से मारपीट की और धमकाया। आसपास मौजूद कुछ युवकों ने बीच-बचाव किया, जिसके बाद पीड़िता ने अपने परिवार को पूरी घटना बताई। घटना की जानकारी मिलते ही परिजनों के साथ मिलकर पीड़िता ने खजराना थाने में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने आरोपी फैजान खान उर्फ राहुल के खिलाफ रेप, धमकी और जबरन धर्म परिवर्तन के प्रयास जैसे गंभीर धाराओं में केस दर्ज कर लिया है। फिलहाल आरोपी फरार है और उसकी तलाश की जा रही है।

आईडीए की बोर्ड बैठक में लिए कई निर्णय

संभागायुक्त बोले - आईटी पार्क-कन्वेंशन सेंटर के लिए टेंडर निकालने का निर्णय

इंदौर (एजेंसी)। बुधवार को आईडीए की बोर्ड बैठक हुई। बैठक में संभागायुक्त दीपक सिंह, कलेक्टर आशीष सिंह सहित कई अधिकारी शामिल थे। विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई और कई विषयों पर निर्णय लिए गए है। बैठक के बाद संभागायुक्त ने बैठक में लिए गए निर्णयों को लेकर मीडिया से चर्चा की। संभागायुक्त दीपक सिंह ने बताया कि आईडीए की बोर्ड बैठक में जो निर्णय लिए गए है, उसमें मुख्य रूप से देवी अहिल्या बाई होल्कर का जन्मोत्सव मनाया जाता है उस समिति को पांच लाख रुपए का अनुदान देने का निर्णय लिया गया है। शासन के द्वारा जो पीपीपी प्रोजेक्ट्स की अनुमति प्राप्त हुई है। एक आईटी पार्क को लेकर और दूसरा कन्वेंशन सेंटर को लेकर। इसके टेंडर निकालने

को लेकर निर्णय लिया गया है। इसके साथ ही सुपर कॉरिडोर पर स्पोर्ट्स की जमीन है उसके लिए भी यूआई जारी किया जा रहा है, जो एक्टिविटी वहां अलाउ है उसके लिए निजी इन्वेस्टर्स से प्रस्ताव मंगाए जा रहे है। प्रस्ताव मिलने के बाद आगामी निर्णय लिया जाएगा।

तैयारियों को लेकर की चर्चा- संभागायुक्त दीपक सिंह ने बताया आगामी 16 मई को मध्यप्रदेश शासन द्वारा इंदौर में जो कॉन्क्लेव आयोजित किया जा रहा है खासकर अर्बन डेवलपमेंट को लेकर उसकी तैयारियों को लेकर चर्चा की गई है।

इंदौर से जाने वाली ट्रेनों में फिर बढ़ने लगी वेटिंग

भारत-पाक तनाव के दौरान आसानी से मिल रहे थे टिकट; पर्यटकों का रुख साउथ की तरफ

इंदौर (एजेंसी)। भारत-पाकिस्तान जंग के हालात के दौरान इंदौर से राजस्थान, पंजाब और जम्मू-कश्मीर जाने वाली ट्रेनों में टिकट आसानी से मिल रहे थे। पूरे साल वेटिंग में चलने वाली मालवा एक्सप्रेस में भी इस दौरान सीटें आसानी से उपलब्ध हो रही थी। लेकिन, अब हालात सामान्य होते ही इंदौर से चलने वाली प्रमुख ट्रेनों में वेटिंग की स्थिति बनने लगी है। मालवा एक्सप्रेस में इस समय वेटिंग और आरएसी की स्थिति है। डॉ. अम्बेडकर नगर से कटरा (12919)-वेटिंग चल रही है। 15 जून तक आरएसी है। जिसमें से 26, 27 और 28 मई को वेटिंग लिस्ट 5 से लेकर 12 तक है। 1, 3, 4 और 5 जून को वेटिंग लिस्ट 5 से लेकर 20 तक है। इंदौर से जयपुर (12465)- 14 से 17 मई तक वेटिंग लिस्ट 14 से लेकर 32 तक है। इसके बाद के दिनों में यानी 18 मई से लेकर 8 जुलाई तक ट्रेन

में आसानी से सीट उपलब्ध है। आईआरसीटीसी के अनुसार इस ट्रेन में 18 मई से 8 जुलाई तक 65 से लेकर 110 सीट तक रोजाना सीटें उपलब्ध हैं। इंदौर से जोधपुर (14802) - ट्रेन में 15 मई से लेकर 12 जुलाई तक आसानी से सीट उपलब्ध है। वर्तमान स्थिति के अनुसार इस ट्रेन में 303 तक सीटें आसानी से उपलब्ध है। इंदौर से दिल्ली (20155)- इंदौर से दिल्ली जाने वाली इस ट्रेन में लंबी वेटिंग है। हालांकि, पिछले दिनों इसमें भी आसानी से टिकट मिल रहे थे। लेकिन अब इस ट्रेन में 3 जून तक 30 तक वेटिंग है। वहीं, 4 जून से 18 जून तक आरएसी लगा हुआ है। इस ट्रेन में 19 जून से सीटें आसानी से उपलब्ध हैं।

ज्वेलरी शोरूम से कर्मचारी ने चुराई सोने की 7 अंगूठियां

इंदौर में कस्टमर को दिखाते वक्त हाथ साफ किया; वारदात सीसीटीवी में कैद

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के सराफा बाजार में एक बड़े ज्वेलरी शोरूम पर चोरी की वारदात हो गई। जब यहां का स्टॉक चेक किया गया तो उसमें से करीब 7 सोने की अंगूठी कम निकली। शोरूम के सीनियर कर्मचारियों ने जब सीसीटीवी चेक किए तो वारदात का खुलासा हो गया। मामले में शोरूम के सीनियर स्टाफ की ओर से चोरी के मामले में केस दर्ज कराया गया है। घटना 8 मई गुरुवार की है। जिसका खुलासा 13 मई मंगलवार को हुआ। सराफा टीआई सुरेन्द्र सिंह रघुवंशी के मुताबिक मदनलाल छगनलाल ज्वेलर्स बड़ा सराफा में चोरी के मामले में शुभम सिंह सोलंकी के खिलाफ चोरी का केस दर्ज किया है। शोरूम के एक सीनियर स्टाफ की ओर से

शिकायत की गई है। पुलिस के मुताबिक आरोपी शुभम सिंह सोलंकी अक्टूबर 2024 से यहां पर सेल्समैन के पद पर काम कर रहा था। 8 मई को जब शुभम काउंटर पर काम कर रहा था। तो उसने कस्टमर को दिखाने के दौरान यहां से 7 सोने की अंगूठी गायब कर दी। लेकिन मामले में शोरूम को जानकारी पहले नहीं लग पाई। मंगलवार को जब पूरे दुकान का स्टॉक चेक किया गया तो उसमें 7 अंगूठी कम मिली। बाद में सीसीटीवी फुटेज देखे गए। तब शुभम वहां पर चोरी करते हुए दिखा।

बीजेपी नेता से मारपीट में दो पुलिसकर्मी लाइन अटैच

विक्रम सिसोदिया से निगम और पुलिसकर्मियों ने एयरपोर्ट रोड पर की थी मारपीट

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में बीजेपी किसान मोर्चा के मंत्री विक्रम सिंह सिसोदिया ने मंगलवार को एरोड्रम पुलिस थाना पहुंचकर निगम और पुलिसकर्मियों पर मारपीट का आरोप लगाया था। उन्होंने एयरपोर्ट रोड पर अर्द्धनग्न प्रदर्शन भी किया था। इसके बाद बुधवार को दो पुलिसकर्मियों को लाइन अटैच किया गया है। सिसोदिया ने केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान को भी घटना की शिकायत भेजी थी। इंदौर में कल बीजेपी नेता के साथ मारपीट के बाद आज बीजेपी ग्रामीण इकाई ने मैदान संभाला। रोजड़ी निवासी किसान सिसोदिया के साथ अभद्रता करने वाले आरक्षकों पर कड़ी कार्यवाही को लेकर बीजेपी के इंदौर जिला अध्यक्ष श्रवण सिंह चावड़ा ने पार्टी के अन्य नेताओं के साथ पुलिस कमिश्नर से चर्चा की। इसके बाद

पुलिसकर्मियों पर कार्यवाही की गई है। चावड़ा ने बताया कि इस घटनाक्रम से मुझे अवगत कराया गया था। जिसके बाद मैंने पुलिस कमिश्नर और वरिष्ठ अधिकारियों से चर्चा की। उन्हें पूरा मामला बताते हुए

आत्मदाह की दी थी धमकी

बीजेपी नेता विक्रम सिसोदिया ने पुलिस को लिखित आवेदन में आत्मदाह की चेतावनी भी दी थी। विक्रम ने आवेदन में लिखा था कि 14 मई को दोपहर 11 बजे तक कार्यवाही नहीं हुई तो परिवार के साथ एरोड्रम थाना परिसर में आत्महत्या कर लूंगा। जिसकी समस्त जिम्मेदारी आपकी होगी।

दोषी पुलिसकर्मियों पर सख्त कार्यवाही करने की बात कही थी। पुलिस अधिकारियों ने मामले की जांच कर मारपीट और अभद्रता करने वाले एरोड्रम के दो पुलिसकर्मियों को लाइन अटैच किया है। बीजेपी इंदौर जिलाध्यक्ष चावड़ा ने इस मामले में पुलिस से सख्त से सख्त कार्यवाही करने की बात कही थी।

यह था पूरा घटनाक्रम

बीजेपी नेता विक्रम सिंह सिसोदिया ने बताया कि मैं भाजपा किसान मोर्चा में मंत्री हूं। इंदौर जनपद पंचायत में प्रतिनिधि भी हूं। मैं ट्रेक्टर से तरबूज लेकर ग्राम रोजड़ी से बेचने आया था। तभी पंचशील नगर चौराहे (चील चौराहा) पर नगर निगम वालों ने मेरा तराजू (इलेक्ट्रॉनिक तौल कांटा) छीन लिया। उन्होंने मेरे तरबूज भी फेंक दिए। कर्मचारियों के नाम अरविंद मचार, रघुवंशी और सुनील पटेल हैं। उनके साथ एक अन्य व्यक्ति भी था जिसका नाम मुझे नहीं पता है। मेरा निवेदन है कि पुलिस इस पूरे मामले की जांच कर योग्य कार्यवाही कर मुझे न्याय दें।

संपादकीय

अमेरिका-चीन ट्रेड डील व भारत

दुनिया भर में जारी ट्रेड वार और भारत तथा पाकिस्तान के बीच चल रहे तनाव के बीच विश्व की दो महाशक्तियों अमेरिका और चीन के बीच टैरिफ समझौते का होना न केवल बड़ी घटना है बल्कि इसका सीधा असर भारत पर भी पड़ेगा। यह असर कितना होगा, इसके बारे में लोगों का अलग-अलग आकलन है। सवाल यह भी उठ रहा है कि टैरिफ के मुद्दे पर चीन ने एक कदम पीछे खींचकर दक्षिण एशिया में अपने प्रमुख प्रतिद्वंद्वी भारत को कहीं ट्रेड स्ट्राइक तो नहीं कर दी है? इस सवाल का जवाब तो कुछ समय बाद मिलेगा। लेकिन राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा चीनी सामान के आयात पर भारी टैरिफ लगाने के बाद चीन ने समझौते का नया दांव खेला है। हालांकि यह समझौता 90 दिनों के लिए ही है। इसके बाद क्या होगा, वह आगे की परिस्थिति पर निर्भर रहेगा। टैरिफ को लेकर दोनों देशों के बीच जारी आरोप प्रत्यारोपों के बीच जिनेवा में हाल में दोनों देशों के बीच वार्ता भी जारी थी। समझौते के मुताबिक अमेरिका ने चीनी आयात पर टैरिफ को संयुक्त रूप से 145 प्रतिशत से घटाकर 30 प्रतिशत करने पर सहमति जताई है, जिसमें फेंटेनाइल पर 20 प्रतिशत शुल्क भी शामिल है, जो 14 मई से प्रभावी होगा। बदले में, चीन अमेरिकी वस्तुओं पर अपने टैरिफ को 125 प्रतिशत से घटाकर 10 प्रतिशत कर देगा। सोमवार को दोनों पक्षों ने घोषणा की कि संशोधित टैरिफ ढांचा 90 दिनों की अवधि के लिए लागू होगा। अमेरिकी ट्रेजरी सचिव स्कॉट बेसेन्ट ने इसकी घोषणा की। गौरतलब है कि अमेरिका ने चीन पर 145 फीसदी टैरिफ लगाया था। इसके जवाब में चीन ने भी अमेरिकी वस्तुओं पर 125 फीसदी टैरिफ थोप दिया था। कई दिनों की तनातनी के बाद अब दोनों देश नरम पड़े। अमेरिकी अधिकारियों ने इसे एक अच्छी डील बताया है। चीन ने कहा है कि वह अमेरिकी सामान पर पहले लगाए गए 91 प्रतिशत के अतिरिक्त टैक्स को भी हटा देगा। कहा जा रहा है कि दोनों देशों के बीच हुई इस डील से उन उद्योगों को राहत मिलेगी जो टैरिफ की वजह से बहुत परेशान थे। टैरिफ में यह कमी चीन की तरफ से आर्थिक तनाव को कम करने और अमेरिका के साथ बातचीत को आगे बढ़ाने की कोशिश है। अब सवाल यह है कि इस ट्रेड समझौते का भारत पर कितना असर होगा? विशेषज्ञों का मानना है कि यद्यपि वर्तमान में भारतीय वस्तुओं पर अमेरिकी टैरिफ 10 प्रतिशत पर बना हुआ है, लेकिन टैरिफ का वह विशाल अंतर जो कभी भारत के पक्ष में था, तेजी से कम हो रहा है। यह ट्रंप द्वारा निर्धारित टैरिफ बेसलाइन है। इसके पहले अमेरिका द्वारा भारतीय सामानों पर लगाया गया टैरिफ चीन की तुलना में काफी होगा। लेकिन अब यह अंतर होने से भारतीय निर्यातकों को लाभ कायम रखने के लिए नए ठिकाने तलाशने होंगे। निर्यातकों के संगठन फियो के अध्यक्ष एस सी रल्हन के अनुसार मौजूदा घटनाक्रम वैश्विक व्यापार स्थिरता के लिए सकारात्मक हैं लेकिन ये भारत के लिए चुनौतियां और, 'शुल्क घटाने से इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी और रसायन जैसे उच्च मूल्य वाले क्षेत्रों में अमेरिका और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार बढ़ने की संभावना है। इससे दक्षिण-पूर्व एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका जैसे बाजारों, जहां भारत ने हाल में अमेरिका-चीन व्यापार बाधा का लाभ उठाते हुए अपनी पैठ बनाई है, में भारतीय निर्यातकों के लिए प्रतिस्पर्धा बढ़ सकती है। हालांकि भारत इस बदलाव का लाभ उन फार्मास्युटिकल एपीआई, रत्न एवं आभूषण, इंजीनियरिंग सामान, कार्बनिक रसायन और आईटी सेवाओं में उठा सकता है।' लेकिन यह भविष्य की बात है। बेहतर है कि भारत इस टैरिफ वार के फायदे कैसे उठाए जा सकते हैं, इस पर विचार करें।

युद्ध विराम भारत को मजबूत बनाने का अवसर

हमें बाँटने की ये कोशिशें बाहर से नहीं, हमारे भीतर से सफल हो रही हैं। कितनी आसान सी बात है – अगर हम आपस में एकजुट नहीं रहेंगे, तो जो भी आएगा, हमें तोड़ देगा। वो कभी हथियार से नहीं, हमारी आपसी नफरत से जीतेगा। हर युद्ध के बाद एक लंबी चुप्पी होती है, पर यह चुप्पी अंत नहीं होती। यह वह क्षण होता है जहाँ समाज, सरकार और जनता को आत्ममंथन करना होता है। हमें यह सोचने की ज़रूरत है कि इस बर्बादी में हमारी भी कोई भूमिका थी या नहीं। क्या हमने कुछ ऐसा किया जिससे समाज में दरार आई? क्या हम चुप रहे जब नफरत फैल रही थी? क्या हमने उन बच्चों को समझाया जो सोशल मीडिया पर हिंसा को सामान्य मानते हैं? क्या हमने अपने घरों में बैठकर भी एक-दूसरे के खिलाफ बोलना शुरू नहीं किया था? सवाल उठने चाहिए, और जवाब भी तलाशने होंगे।

नजरिया

अजमत

लेखक गांधीवादी कार्यकर्ता हैं।

युद्ध रुक गया। एक पल के लिए सांसें थमीं और सन्नाटा गहराया। यह सन्नाटा शांति का नहीं, दर्द का है। जो मरे, वो लौटकर नहीं आएँगे। जो उजड़ गए, उनके घर फिर कैसे बसेंगे। जो बचे हैं, वो अंदर से टूटी हुई आवाज़ों के साथ ज़िंदा हैं। यह युद्ध विराम एक राहत की सांस ज़रूर है, पर यह कोई अंत नहीं है - यह एक शुरुआत है। हमें खुशी है कि कुछ समय अब बम नहीं गिरेंगे, गोलियाँ नहीं चलेंगी, बच्चे सहमे हुए स्कूल नहीं जाएंगे, रोड पर बिना डरे लोग चलेंगे। पर ये जो हुआ है, उसे हम सिर्फ 'युद्ध विराम' कहकर आगे नहीं बढ़ सकते। क्योंकि जो सबसे बड़ा युद्ध था, वो तो अब शुरू हो रहा है - दिलों में बैठी नफरत को खत्म करने का, भारत में एकता का अलख जगाने का, सद्भाव के साथ देश बनाने का।

सच कहूँ तो हम बहुत कठिन समय से गुज़रे हैं। इस देश ने सिर्फ सरहद पर नहीं, घर-घर में घाव खाए हैं। कोई मुसलमान था इसलिए शक़ में मारा गया, कोई हिंदू था इसलिए दुश्मन बना दिया गया। कभी नाम देखकर हमला हुआ, कभी पहनावे से नफ़रत उग आई। क्या वाकई हम इतने कमज़ोर हो गए हैं कि अब हम इंसान की पहचान उसकी जाति, धर्म, भेष-भूसा या भाषा से करने लगे हैं? हम यह क्यों नहीं समझते कि जब हम एक-दूसरे से लड़ते हैं, तो वो ताक़तें जो हमारे देश को तोड़ना चाहती हैं, वे और मज़बूत हो जाती हैं। हमें बाँटने की ये कोशिशें बाहर से नहीं, हमारे भीतर से सफल हो रही हैं। कितनी आसान सी बात है - अगर हम आपस में एकजुट नहीं रहेंगे, तो जो भी आएगा, हमें तोड़ देगा। वो कभी हथियार से नहीं, हमारी आपसी नफरत से जीतेगा।हर युद्ध के बाद एक लंबी चुप्पी होती है, पर यह चुप्पी अंत नहीं होती।

यह वह क्षण होता है जहाँ समाज, सरकार और जनता को आत्ममंथन करना होता है। हमें यह सोचने की ज़रूरत है कि इस बर्बादी में हमारी भी कोई भूमिका थी या नहीं। क्या हमने कुछ ऐसा किया जिससे समाज में दरार आई? क्या हम चुप रहे जब नफरत फैल रही थी? क्या हमने उन बच्चों को समझाया जो सोशल मीडिया पर हिंसा को सामान्य मानते हैं? क्या हमने अपने घरों में बैठकर भी एक दूसरे के खिलाफ बोलना शुरू नहीं किया था? सवाल उठने चाहिए, और जवाब भी तलाशने होंगे। उस माँ का क्या, जिसका बेटा आतंकवाद में मारा गया, और अब कोई उसकी सुध नहीं लेता? उस बच्ची का क्या, जिसका स्कूल बम से उड़ गया और बचपन छिन गया? उन परिवारों का क्या, जो धर्म या भाषा के नाम पर हमेशा डर में जीते हैं? क्या हम इन पीड़ाओं को समझने के लिए कभी रुके? अगर हम अगर आपस में लड़ेंगे, तो जो बचेगा वो सिर्फ राख होगी। हमें अब 'देश चलाना' नहीं, देश को बनाना है। वो देश जो गांधी के सपनों का था - जहाँ करुणा हो, संवाद हो, और सबसे बड़ी बात - इंसानियत हो। गाँधी ने कहा था कि अगर हिंसा का जवाब हिंसा से दोगे, तो अंततः सच्चाई और इंसानियत हार

जाएगी। हमें अब वही गांधी चाहिए - हमारे भीतर।

यह युद्ध विराम कोई जश्न का अवसर नहीं है, यह एक चेतावनी है – कि अब चेत जाओ। यह सिर्फ एक पड़ाव है, मंज़िल नहीं। सरकारें फिर से अपने-अपने काम में लग जाएँगी। नेता फिर रैलियाँ करेंगे, पार्टियाँ आएँगी- जाएँगी। पर हमें तय करना है कि क्या हम फिर वहीं लौटेंगे जहाँ से ये सब शुरू हुआ था ? या अब हम इस बार कुछ अलग करेंगे ? एक संकल्प - जिससे देश भी बचे और इंसानियत भी। हमें अपने घर, मोहल्ले, गाँव, कॉलेज, ऑफिस - हर जगह संवाद शुरू करना होगा। एक-दूसरे को सुनना, समझना और जोड़ना होगा। अगर कहीं कोई नफरत बो रहा है, तो हमें दो गुना प्रेम बोना होगा। मस्जिद और मंदिर से ज्यादा ज़रूरत अब दिलों को जोड़ने की है। अगर नफरत बोई गई है तो अब प्रेम बोना भी हमारी ही जिम्मेदारी है। हमें नफरत के हर बीज को पहचानना होगा- चाहे वो सोशल मीडिया पर फैलाया गया झूठ हो, या किसी चाय की दुकान पर इन सवालों को बस 'समाचार' की तरह पढ़कर भूल जाएंगे, तो हम भी दोषी होंगे - इस देश को कमजोर करने के।

हमारे संविधान ने हमें पंथनिरपेक्षता, समानता, स्वतंत्रता और बंधुता जैसे मूल मूल्य दिए हैं। पर यह शब्द सिर्फ संविधान की किताब तक सीमित नहीं होने चाहिए। इन्हें हमारे जीवन, हमारे व्यवहार, हमारी भाषा और हमारे रिश्तों में उतरना होगा। 'हम भारत के लोग' का मतलब है कि हम पहले लोग हैं – धर्म या जाति बाद में आते हैं। एकता सिर्फ भाषण नहीं, ज़िम्मेदारी है। हमने संविधान में लिखा है - 'हम भारत के लोग...' पर क्या हम अब भी 'एक लोग' हैं? या फिर हम अब हिंदू-मुसलमान, ऊँच-नीच, उत्तर-दक्षिण, 'हम और वो' में बँट गए हैं? एकता सिर्फ नारा नहीं, एक ज़िम्मेदारी है। एक ऐसी जिम्मेदारी जिसे निभाने के लिए हर नागरिक को सजग रहना होगा। आज जब देश के सामने इतनी चुनौतियाँ हैं- आर्थिक संकट, बेरोज़गारी, पर्यावरण की तबाही, स्वास्थ्य सेवाओं की बदहाली- तब हम यह युद्ध विराम कोई जश्न का अवसर नहीं है, यह एक चेतावनी है – कि अब चेत जाओ। यह सिर्फ एक पड़ाव है, मंज़िल नहीं। सरकारें फिर से अपने-अपने काम में लग जाएँगी। नेता फिर रैलियाँ करेंगे, पार्टियाँ आएँगी- जाएँगी। पर हमें तय करना है कि क्या हम फिर वहीं लौटेंगे जहाँ से ये सब शुरू हुआ था ? या अब हम इस बार कुछ अलग करेंगे ? एक संकल्प - जिससे देश भी बचे और इंसानियत भी। हमें अपने घर, मोहल्ले, गाँव, कॉलेज, ऑफिस - हर जगह संवाद शुरू करना होगा। एक-दूसरे को सुनना, समझना और जोड़ना होगा। अगर कहीं कोई नफरत बो रहा है, तो हमें दो गुना प्रेम बोना होगा। मस्जिद और मंदिर से ज्यादा ज़रूरत अब दिलों को जोड़ने की है। अगर नफरत बोई गई है तो अब प्रेम बोना भी हमारी ही जिम्मेदारी है। हमें नफरत के हर बीज को पहचानना होगा- चाहे वो सोशल मीडिया पर फैलाया गया झूठ हो, या किसी चाय की दुकान पर की गई ज़हरीली बात। हमें उसे वहीं रोकना होगा। और यह काम कोई कानून नहीं कर सकता, यह हम कर सकते हैं, अपने व्यवहार से, अपने संवाद से, अपने उदाहरण से।

यह सिर्फ युद्ध विराम नहीं है - यह एक अवसर है। भारत को मजबूत बनाने का। एक ऐसा भारत जो अंदर से भी उतना ही मजबूत हो, जितना बाहर से दिखता है। और यह काम सरकारों से ज्यादा हम सबको करना है। क्योंकि लोकतंत्र सिर्फ वोट देने से नहीं चलता, बल्कि हर रोज़ मानवीय और न्यायपूर्ण समाज की नींव रखने से बनता है।यह देश सिर्फ सरकारों का नहीं, यह हमारा है - हर उस बच्चे का है जो स्कूल में पढ़ाई का सपना देखता है, हर उस माँ का है जो चाहती है कि उसका बच्चा सुरक्षित घर लौटे, हर उस मजदूर का है जो पसीना बहाकर देश को चलाता है।

चलो, अब बनाना शुरू करें। वरना फिर कोई युद्ध हमें फिर से वहीं ले आएगा, जहाँ से इंसान ने सोचना ही छोड़ दिया था। हमारे देश की सीमाएँ सिर्फ ज़मीन नहीं हैं, वहाँ भी दिल धड़कते हैं।कश्मीर से कन्याकुमारी तक हम कहते हैं कि भारत एक है – पर क्या यह 'एकता' सिर्फ नारा बनकर रह गई है? क्या हम उन सीमावर्ती इलाकों के लोगों के बारे में सोचते हैं, जो रोज़ आतंक, भूख और असुरक्षा के बीच ज़िंदगी जीते हैं? जब हम कहते हैं कि 'वो ज़मीन हमारी है', तो क्या हम ये भी कहते हैं कि 'वो लोग भी हमारे हैं'? क्या हमने कभी उनकी रोटी, कपड़ा, मकान और शिक्षा की चिंता की है? अगर नहीं की- तो अब करनी होगी।क्योंकि देश सिर्फ नक्शे में खींची लकीरों से नहीं बनता, वह बनता है उन लोगों से, जो उन लकीरों के उस पार जी रहे हैं। हमारी असली एकता तभी होगी जब देश के हर कोने में रहने वाला नागरिक खुद को उतना ही भारतीय महसूस करे जितना राजधानी में बैठा कोई मंत्री करता है। अब हमें सिर्फ ज़मीन नहीं, वहाँ के लोगों को भी अपना मानना होगा। तभी असल में भारत एक होगा- और तब युद्ध नहीं, संवाद होगा। एकता की मिसाल लेकर निकलना है, अपने अंदर से लोगों के प्रति सम्मान रखना है, और हर कोने को मजबूत करना है - लोगों की एकता से। यही है हमारा अंतिम संदेश।

एक घर, कई दिल, यही है असली परिवार

अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस

प्रो. आरके जैन 'अरिजीत'

लेखक स्तंभकार हैं।

परिवार वह पवित्र आलिंगन है, जहाँ जीवन की पहली साँस प्रेम की गर्माहट में खिलती है, जहाँ हर आंसू विश्वास की गोद में सुकून पाता है, और जहाँ सपनों को संस्कारों के पंख मिलते हैं। यह केवल रक्त का बंधन नहीं, बल्कि वह जीवंत धड़कन है, जो समाज की नींव को अटल रखती है, संस्कृति को अमर बनाती है और राष्ट्र को गौरव देती है। परिवार वह पहला गुरुकुल है, जहाँ इंसान न केवल बोलना-चलना सीखता है, बल्कि हँसना, रोना, माफ करना और जीवन की हर चुनौती को गले लगाना भी सीखता है। यह वह आश्रय है, जो तूफानों में ढाल बनता है और खुशियों को सातवें आसमान तक पहुँचाता है। इसी अनमोल बंधन की महत्ता को रेखांकित करने के लिए हर वर्ष 15 मई को अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस मनाया जाता है। यह दिवस केवल एक तारीख नहीं, बल्कि एक वैश्विक आह्वान है - परिवार को सशक्त करने, इसकी चुनौतियों को परास्त करने और इसके प्रेम को चिरस्थायी बनाने का।

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 1993 में इस दिवस की नींव रखी, और 1994 से यह विश्व भर में एक सशक्त मंच के रूप में उभरा है। यह परिवार की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक भूमिका को न केवल उजागर करता है, बल्कि आधुनिक युग की जटिलताओं से उत्पन्न खतरों पर भी गंभीर चिंतन की माँग करता है। आज वैश्वीकरण, शहरीकरण और तकनीकी क्रांति ने जीवन को अभूतपूर्व गति दी है, लेकिन परिवार के मूल ढाँचे को भी गहरे रूप से हिला दिया है। संयुक्त परिवार, जो कभी हँसी-खुशी और सहयोग का प्रतीक थे, अब टूटकर एकल परिवारों में सिमट रहे हैं। रिश्तों में स्नेह की जगह औपचारिकता ने ले ली है, और आपसी संवाद को सन्नाटे ने घेर लिया है। स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और इंटरनेट ने हमें वैश्विक गाँव से जोड़ा, पर अपनों से दूर कर दिया। माता-पिता के पास बच्चों के लिए समय नहीं, बच्चे डिजिटल दुनिया में खोए हैं, और बुजुर्ग उपेक्षा के साये में जी रहे हैं। यह वही परिवार है, जो कभी हमारी सबसे बड़ी ताकत था। क्या हमने इसे खोने का जोखिम मोल लिया है?

इस वर्ष, 2025 में, अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस की थीम 'परिवार और जलवायु कार्रवाई-एक स्थायी भविष्य का निर्माण' एक क्रांतिकारी संदेश लेकर आई है। यह थीम हमें चेताती है कि जलवायु परिवर्तन कोई सुदूर समस्या नहीं, बल्कि हर परिवार की चौखट पर दस्तक देने वाला संकट है। बढ़ता तापमान, जल संकट, बाढ़, सूखा, खाद्य असुरक्षा और प्राकृतिक आपदाएँ हर घर को प्रभावित कर रही हैं। यह केवल सरकारों या पर्यावरणविदों की ज़िम्मेदारी नहीं, बल्कि हर परिवार का कर्तव्य है कि वह इस वैश्विक चुनौती के खिलाफ खड़ा हो। परिवार वह पहली पाठशाला है, जहाँ बच्चों में प्रकृति के प्रति प्रेम और ज़िम्मेदारी का बीज बोया जा सकता है। छोटे-छोटे कदम- जैसे बिजली और पानी की बचत, प्लास्टिक का बहिष्कार, वृक्षारोपण, रीसाइक्लिंग और जैविक जीवनशैली को अपनाना - न केवल पर्यावरण को बचाएंगे, बल्कि परिवार के सदस्यों को एक साझा लक्ष्य के लिए एकजुट भी करेंगे।

बच्चों को पर्यावरण संरक्षण का पाठ पढ़ाने की शुरुआत घर से होनी चाहिए। माता-पिता, दादा-दादी और बड़े भाई-बहन मिलकर उन्हें प्रकृति का सम्मान करना सिखाएँ। एक बच्चा जो पेड़ लगाना, पानी बचाना और कचरे को कम करना सीखता है, वह न केवल पर्यावरण का रक्षक बनेगा, बल्कि एक ज़िम्मेदार नागरिक भी। परिवार मिलकर सामुदायिक स्तर पर वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान या ऊर्जा संरक्षण जैसे कार्यों में हिस्सा ले सकते हैं। ये गतिविधियाँ न केवल धरती को हरा-भरा बनाएँगी, बल्कि परिवार के सदस्यों के बीच प्रेम और एकता को भी गहरा करेंगी। सरकारों, गैर-सरकारी संगठनों और शिक्षण संस्थानों को भी परिवारों को जागरूक करने और उन्हें संसाधन उपलब्ध कराने में सक्रिय भूमिका निभानी होगी। जब हर परिवार पर्यावरण के लिए अपने कर्तव्य को समझेगा, तभी हम एक स्थायी और समृद्ध भविष्य की नींव रख सकेंगे।

लेकिन परिवार की मज़बूती केवल पर्यावरण संरक्षण तक सीमित नहीं है। यह वह आधार है, जिस पर समाज और राष्ट्र का भविष्य टिका है। एक सशक्त परिवार ही नैतिकता, सहानुभूति और सामाजिक ज़िम्मेदारी के मूल्यों को अगली पीढ़ी तक पहुँचाता है। पर आज हमें यह आत्मनिरीक्षण करना होगा - क्या हम अपने परिवार को वह समय, प्रेम और सम्मान दे रहे हैं, जिसका वे हकदार हैं? क्या हम अपने बुजुर्गों की कहानियों को सुनते हैं, बच्चों के सपनों को समझते हैं, और रिश्तों को स्नेह के धागे से बुनते हैं? अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस हमें यह सिखाता है कि परिवार केवल साथ रहने का नाम नहीं, बल्कि एक-दूसरे के लिए जीने का वादा है। यह हमें याद दिलाता है कि रिश्तों को सींचने के लिए समय, संवाद और समर्पण की ज़रूरत होती है। सरकारें और सामाजिक संगठन परिवारों को आर्थिक और सामाजिक सहायता दे सकते हैं, पर असली बदलाव तभी आएगा, जब हम अपने घर की चौखट से शुरुआत करें।

अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस कोई औपचारिकता नहीं, बल्कि एक जागृति का आलम है। यह हमें यह सिखाता है कि परिवार वह अनमोल खज़ाना है, जिसे समय, विश्वास और प्रेम से सहेजना होगा। यह दिवस हमें प्रेरित करता है कि हम अपने परिवार को सिर्फ़ एक दिन नहीं, बल्कि हर दिन प्राथमिकता दें। हम अपने बच्चों को पर्यावरण का रक्षक बनाएँ, बुजुर्गों का सम्मान करें, और रिश्तों में प्रेम का दीप जलाएँ। क्योंकि जब परिवार एकजुट और सशक्त होगा, तभी समाज में सकारात्मकता, धरती पर हरियाली और विश्व में शांति का सूरज उगेगा। आइए, इस अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस पर हम संकल्प लें कि हम अपने परिवार को समय, स्नेह और समर्पण का उपहार देंगे। हम न केवल धरती को बचाने की शपथ लेंगे, बल्कि अपने रिश्तों को भी प्रेम और विश्वास के रंगों से सजाएँगे। क्योंकि परिवार नहीं, तो कुछ भी नहीं - यही जीवन का सत्य है, यही अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस का अमर संदेश है।

छदम नारीवाद के पीछे छिपती वास्तविक नारी

अभिव्यक्ति

अदिति सिंह भदौरिया

लेखक स्तंभकार हैं।

नारी शब्द आते ही ज़हन में एक खूबसूरत चित्र सा बनने लगता है। इसी खूबसूरत चित्र को अपने ही अलग रंगों में रंग कर आजकल कई युवतियों के साथ-साथ कुछ लड़किया भी अपने जीवन को सोशल मीडिया के माध्यम से आम-जन के लिए मनोरंजन का साधन बना रही है। यहाँ हम सोशल-मीडिया को गलत नहीं कह सकते, क्योंकि कोई भी माध्यम आप तक अपनी प्रतिभा को निखारने का साधन तो दें सकता है,परन्तु आपके जीवन को निखारने की ज़िम्मेदारी सिर्फ आपकी ही है। यहाँ प्रश्न यह ही उठता है कि क्या सच में नारी मात्र सुन्दरता का पैमाना बताने के लिए ही होती है। तो फिर सरोजनी नायडू , इंदिरा गाँधी, कल्पना चावला और गार्गी जैसी स्त्रीयां कौन थी? क्यों आज भी उनका उदाहरण देते समय हम नतमस्तक हो जाते है।

मैं यह नहीं कह रही कि सोशल-मीडिया का प्रयोग गलत हो रहा है। बल्कि इसके माध्यम से कई बार हमें ऐसी नारी शक्ति के बारे में पता चलता है जो मिसाल से बढ़कर बेमिसाल बन रही है। सुनीता विलियम ऐसी ही एक महिला है। पर खेद की बात है कि प्रसिद्दी में आजकल की सो-कालड इन्फ्लुएंसर ऐसी महिलाओं से बहुत आगे है जो अपने क्षेत्र में देश-विदेश में अपने काम से अपनी पहचान बना रही है। एक तरफ सोशल-मीडिया के माध्यम से कई स्त्रिओं ने अपने काम से ही अपनी एक सशक्त पहचान बनाई है। लेकिन कुछ ने तो इस नारी के भीतर की शक्ति और सुन्दरता को लोगों के मनोरंजन का साधन बना दिया है। अपने ही पति का दूसरा विवाह करके खुद को बेचारी बनाना और फिर उसी स्त्री के साथ वीडियो बनाना। ऐसा लगता है जैसे रिश्तों का मजाक बना दिया हो पर अफ़सोस की बात है कि अपने इसी चलताऊ रवैए से वह आज अच्छी कमाई भी कर रहे है। हैरानी उन पर नहीं बल्कि उन लोगों पर होनी चाहिए जो इन्हें फोलो करते है।

नारी शक्ति को बिना पहचाने हम आज उसी चित्र को सही मान रहे है जो हमें दिखाया जा रहा है। छोटे कपड़े पहनकर दूसरों की सोच को छोटा बताना फैशन सा बन गया है और अगर इन फेमिनिज्म का झंडा लेकर चलने वाली स्त्रीयों से देश-विदेश या फिर इनके खुद के घरों के बारे में पूछ लिया जाए तो बगले झाकने लगती है। मैंने कभी कुछ फेक फेमिनिज्म स्त्रीयों को असल में स्त्रीयों की सुरक्षा करते नहीं देखा। वह बाते बहुत करेंगी पर मदद सिर्फ अपनी ही करेंगी। उनकी नजर में किसी भी पुरष का अपमान कर देना, बिना वजह पुरषों को कमजोर बताना, अपने ही घर के काम को हीन भावना से देखना । फैशन के नाम पर बेहूदी हरकतें करना और खुद की असफलता का ठीकरा दूसरों पर फोड़ना ही आता है। ऐसी स्त्रीयां कभी असल में नारी शक्ति को पहचान ही नहीं पाती और जीवन भर असंतुष्ट रहती है। दुःख की बात है कि कुछ समय पूर्व एक ऐसा केस सामने आया जिसमें एक स्त्री ने अपने प्रेमी के साथ मिलकर अपने ही पति की हत्या कर दी और हत्या करने के बाद उसी प्रेमी के साथ घूमने भी चली आगी। ऐसे वहशी केस में भी कुछ स्त्रीयां सोशल-मीडिया में आकर हत्या करने वाली स्त्री की मनोदशा पर उसका साथ देने से नहीं चूकी। हैरानी की बात है कि क्या सच में नारी की स्वतन्त्रता की बात करते - करते हम कहीं नारी को सोच का गुलाम तो नहीं बना रहे है?

न्यूज़-चैनल पर आकर नारी की स्वतन्त्रता पर गले फाड़कर बोलना ही सही नहीं है , बल्कि आज समाज में छदम नारीवाद के पर्दे को हटाना हमारी नैतिक ज़िम्मेदारी हो गई है, क्योकि इसी पर्दे को हटाने से हमारे आस-पास की नारीयों को उनके भीतर छिपी सुनीता विलियम, विंग कमांडर व्योमिका सिंह और कर्नल सोफिया कुरैशी की झलक नज़र आएगी। वरना वह मात्र सोशल-मीडिया की उन कठपुतलियों जैसी होकर रह जाएँगी । जिनकी डोर किसी ओर के हाथों में है और वह जीवन जी नहीं रही बल्कि कोई ओर ही उनका उपभोग कर रहा है। हमें यह तय करना होगा कि हम अपनी बेटियों को भोग की वस्तु बनाना चाहते है या उनके भीतर छिपी उनकी सर्वशक्तिशाली नारी से उनकी पहचान कराना चाहते है। मिसाल से बेमिसाल बनने का यह सफ़र कठिन ज़रूर है पर नामुमकिन बिलकुल नहीं है।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) -विनोद तिवारी
कार्यकारी प्रधान संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

राजेंद्र बज

लेखक व्यंग्यकार हैं।

एक बात कहूं, किसी से कहना मत

जब कोई तड़कती फड़कती बात हाथ लग जाती है, पेट में मरोड़े उठने लगते है। जिसका निदान करने के लिए उसका उतारा करना जरूरी हो जाता है। दरअसल इस मामले में कुछ एक की पाचन शक्ति अत्यंत कमजोर हुआ करती है। इसलिए वह हर संभव प्रयास करते हैं कि कोई बात पेट में न रहने पाए। अन्यथा अपच की शिकायत के चलते दिन का चैन और रात का सुकून छीन सकता है। वैसे जो दिल के भोले होते हैं, कोई बात मन की मन में नहीं रखा करते। व्यवहार में देखा गया है कि जब कोई बात 'किसी से कहना मत', की टीप लगाकर आगे बढ़ा दी जाती है, तो उसकी चलन गति तीव्र हो जाती है।

शोध करने पर पाया गया है कि रहस्य और रोमांच से भरपूर कोई जानकारी मिलने पर मन की गुदगुदी का ऐसा आभास होने लगता है कि जिसकी महिमा को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता। साधारण बात तो साधारण होती है। मजा तो तब है जब कोई असाधारण बात हाथ लग जाती है। अपने आपके कुछ होने का, और बहुत कुछ खास होने का अहसास होने लगता है। कुछ लोग एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल दिया करते है। यानी कि इनका मस्तिष्क उत्पादक प्रकृति का नहीं होता। लेकिन जो शख्सियत एक बात सुनकर उसमें चार बात जोड़कर बात को आगे बढ़ाती है, उसकी मानसिक उत्पादकता पर किसी को संदेह नहीं करना चाहिए।

बात दो प्रकार की होती है, एक आम और दूसरी खास। अब आम बात तो आम होती है, जिसे सुनने, जानने या समझने पर इतना मजा नहीं आता जितना कि खास बात को जानने का आता है। इसलिए खास बात चाहे खुसुर फुसुर के तौर पर ही क्यों न चली हो, उसके तो पंख लग जाया करते है। मीडिया की खोजी खबर वैसे तो खास होती है लेकिन बहुत जल्द आम हो जाती है। फिर उसमें कोई विशेष रस नहीं रह पाता। एक प्रकार से वह रद्दी के भाव तुलकर रह जाया करती है। लेकिन धीमी गति से कानों में कही गई बात इस कदर गति पकड़ती है कि फिर जहां से चली थी थी वहीं आ जाया करती है। शोध करने पर यह भी पाया गया है कि हर खास बात की अंतिम परिणीति उसका आम हो जाना है।

चीख-चीख कर कही गई बात इतना विस्तार नहीं पा सकती, जितनी कि किसी से कहना मत का ठप्पा लगाकर कही जाती है। दरअसल यह टीप ऐसी भूमिका होती है जिसके चलते सुनने वाले दोनों कान खुले रखते है। लेकिन ऐसी खास बात का मस्तिष्क में इस कदर भारीपन लगने लगता है कि आदमी को हल्का हो जाने की इच्छा होती है। कहीं कुछ हमने सुना, वह किसी और ने शायद ही सुना होगा, ऐसा लगने पर दूसरों को उपकृत करने की भावना मन में जागृत हुआ करती है। इसका एकमात्र तरीका यही होता है कि धीरे से ही सही लेकिन मुंह खोल दिया जाए।

वास्तव में जो सबका भला चाहे, भला मन की मन में क्यों रखें ! सभी तो अपने हैं ,तो खास बात साझा करने में क्या हर्ज है। यह सोचकर पहले दूसरे को, दूसरा तीसरे को और तीसरा चौथे को उपकृत कर देता है। इस तरह देखते-देखते हर एक खास बात आम बनकर रह जाती है। यह सिलसिला चलता ही चला जाता है। जिसके चलते आदमी को बेरोजगारी के दौर में समय काटना काफी आसान हो जाता है। अब जो कामकाजी वर्ग के लोग होते हैं, जिन्हें अपने काम से ही फुर्सत नहीं मिलती - इसलिए वह इस सुख से वंचित रहा करते हैं। नेतागिरी करने वालों के लिए हर खास बात को आम करना उनके लिए फायदे का सौदा सिद्ध हुआ करता है।

परीक्षा

प्रियंका सौरभ

लेखक स्तंभकार हैं।

अंक नहीं, असल काबिलियत की पहचान

एक बच्चा जिसे कला, संगीत, खेल या तकनीकी कौशल में रुचि है, वह संभवत: गणित या विज्ञान में उतने अच्छे अंक न ला पाए, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह कम लायक है। काबिलियत का अर्थ केवल किताबी ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन में समस्याओं को हल करने की क्षमता, नई चीजें सीखने का जज़्बा और परिस्थितियों के अनुरूप खुद को ढालने की क्षमता है।

बच्चों की शिक्षा का विषय हमेशा से ही समाज का एक महत्वपूर्ण पहलू रहा है। माता-पिता और शिक्षक, दोनों ही बच्चों की सफलता के लिए चिंतित रहते हैं, लेकिन कई बार यह चिंता एक दबाव का रूप ले लेती है। विशेष रूप से अंक या ग्रेड के मामले में, यह दबाव बच्चों की मानसिक सेहत पर गहरा असर डाल सकता है। इस लेख में हम इस मुद्दे की जड़ तक जाने की कोशिश करेंगे कि कैसे अंक और काबिलियत की वास्तविक परिभाषा के बीच के अंतर को समझना और स्वीकारना आवश्यक है।

अंक बनाम काबिलियत: एक बुनियादी भेद अक्सर माता-पिता अपने बच्चों से अपेक्षा करते हैं कि वे हर विषय में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करें। वे यह मानते हैं कि अच्छे अंक अच्छे भविष्य की गारंटी हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि अंक केवल एक व्यक्ति की किताबी जानकारी का प्रमाण होते हैं, न कि उसकी असल क्षमता का। उदाहरण के लिए, एक बच्चा जिसे कला, संगीत, खेल या तकनीकी कौशल में रुचि है, वह संभवत: गणित या विज्ञान में उतने अच्छे अंक न ला पाए, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह कम लायक है। काबिलियत का अर्थ केवल किताबी ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन में समस्याओं को हल करने की क्षमता, नई चीजें सीखने का जज़्बा और परिस्थितियों के अनुरूप खुद को ढालने की क्षमता है।

अंक प्रणाली का वास्तविक प्रभाव हमारे शिक्षा प्रणाली का ढांचा अभी भी पारंपरिक मानदंडों पर आधारित है, जहां अंकों को सफलता का एकमात्र पैमाना माना जाता है। इससे बच्चों में असुरक्षा और आत्म-संकोच की भावना विकसित होती है। कई बच्चे अपने माता-पिता की उम्मीदों पर खरे न उतर पाने के डर से मानसिक तनाव का सामना करते हैं। यह मानसिक दबाव उनकी आत्म-छवि और आत्मविश्वास को नुकसान पहुंचा सकता है। साथ ही, यह न केवल बच्चों की पढ़ाई पर बल्कि उनके सामाजिक संबंधों और मानसिक सेहत पर भी नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। बच्चों में आत्मनिर्भरता और आत्म-विश्वास की भावना तभी विकसित होती है जब उन्हें बिना भय और दबाव के सीखने का अवसर मिले।

कैसे अंक प्रणाली बच्चों की रचनात्मकता को दबाती है अंक प्रणाली न केवल मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है, बल्कि बच्चों की रचनात्मकता और खोज की क्षमता को भी सीमित करती है। वे अपनी मौलिक सोच और रचनात्मकता को छोड़कर केवल अंकों की दौड़ में शामिल हो जाते हैं। यह समस्या केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विश्वभर में देखी जा रही है, जहां छात्रों को एक निर्धारित पाठ्यक्रम में ढालने का प्रयास किया जाता है, बिना उनकी व्यक्तिगत प्रतिभा को पहचानने की कोशिश किए। इसके परिणामस्वरूप, कई बच्चे अपनी वास्तविक क्षमता और रुचियों को पहचानने में विफल रहते हैं, जो कि उनके जीवन में दीर्घकालिक असंतोष का कारण बन सकता है।

समाज का नज़रिया और दबाव समाज का नज़रिया भी इस समस्या का एक बड़ा कारण है। अक्सर माता-पिता अपने बच्चों की तुलना अन्य बच्चों से करने लगते हैं। यह तुलना बच्चों में हीन भावना और जलन पैदा कर सकती है। साथ ही, यह उनके आत्मविश्वास को कमजोर कर देती है। बच्चों को यह महसूस होने लगता है कि उनकी पहचान केवल उनके अंकों से ही मापी जाती है, न कि उनके चरित्र, कौशल और मानवीय मूल्यों से। बच्चों का मानसिक विकास तभी संभव है जब उन्हें बिना किसी भय और दबाव के सीखने का अवसर मिले।

परिवर्तन की आवश्यकता हमें शिक्षा के प्रति अपने दृष्टिकोण को बदलने की आवश्यकता है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल नौकरी पाना नहीं, बल्कि एक समझदार, सशक्त और नैतिक नागरिक का निर्माण करना होना चाहिए। इसके लिए हमें अंकों से परे जाकर बच्चों की असल काबिलियत को पहचानने और उसे प्रोत्साहित करने की दिशा में कदम बढ़ाने होंगे। हमें यह समझना होगा कि हर बच्चा अद्वितीय है और उसकी रुचियां, क्षमताएं और सपने भी अलग हैं।

बच्चों को समर्थन दें, दबाव नहीं माता-पिता का कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों को प्रेरित करें, न कि उन पर अनावश्यक दबाव डालें। हर बच्चा अनोखा होता है, उसकी सोच, रुचि और क्षमता भी अलग होती है। हमें चाहिए कि हम उन्हें अपने सपनों को पूरा करने की आजादी दें, न कि केवल समाज के तय किए गए मापदंडों पर खरा उतरने का बोझ डालें। बच्चों के साथ संवाद करें, उनकी समस्याओं को समझें और उन्हें आत्मनिर्भर बनने का मौका दें। केवल अच्छे अंक लाने पर ही नहीं, बल्कि एक अच्छे इंसान बनने पर ध्यान केंद्रित करें। उन्हें जीवन के हर पहलू में सफलता पाने का आत्मविश्वास दें।

अंक जीवन का एक छोटा हिस्सा हैं, लेकिन असल काबिलियत और नैतिकता जीवन का असली मूल्य है। इसलिए हमें चाहिए कि हम बच्चों को केवल अच्छे अंक लाने के लिए नहीं, बल्कि एक अच्छे इंसान बनने के लिए प्रेरित करें। बच्चों की पहचान उनके अंकों से नहीं, बल्कि उनके विचारों, कर्मों और चरित्र से होनी चाहिए। बच्चों की असली पहचान उनके भीतर छुपी क्षमताओं, रचनात्मकता और आत्मनिर्भरता में होती है। यही वास्तविक शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। जीवन केवल अंकों तक सीमित नहीं है, बल्कि एक व्यापक दृष्टिकोण और सकारात्मक सोच से भरा हुआ होना चाहिए।

अब युद्ध नहीं, विचारधारा की विजय होनी चाहिए

सीज़फायर

कार्तिकेय

युवा लेखक

1971 में भारत ने पाकिस्तान को सैन्य रूप से पराजित कर बांग्लादेश को जन्म दिया। यह एक ऐतिहासिक क्षण था, जब भारत पहला ऐसा देश बना जिसने बांग्लादेश को स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में मान्यता दी। आज जब हम बलूचिस्तान की बात करते हैं, तो हमें यह समझना होगा कि वह दौर अब बदल चुका है। वैश्विक राजनीति, कूटनीति और युद्ध की परिभाषाएं आज 1971 जैसी नहीं रहीं। अब युद्ध मैदान से ज़्यादा मन और विचारधाराओं में लड़े जाते हैं। पाकिस्तान अब कश्मीर की आज़ादी की बात उतनी आक्रामकता से नहीं कर सकता, क्योंकि भारत ने वहां 'कश्मीरियत', 'जम्हूरियत' और 'इंसानियत' को पुनः स्थापित करने के प्रयास किए हैं। परंतु यह भी सच है कि चीन अब मणिपुर और अरुणाचल जैसे मुद्दों को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उठाने की कोशिश करेगा, जो भारत के लिए एक नई चुनौती है।

यदि भारत को पाकिस्तान को लेकर भविष्य में कोई रणनीतिक बढ़त बनानी है, तो हमें सैन्य ताकत से अधिक वैश्विक मंचों पर नैतिक और कूटनीतिक नेतृत्व दिखाना होगा। हमें अंतरराष्ट्रीय समुदाय को यह समझाना होगा कि पाकिस्तान की सेना, उसकी कठपुतली सरकार और आम जनता - तीनों अलग-अलग इकाइयाँ हैं।

भारत को अपने प्रयास इस दिशा में केंद्रित करने चाहिए कि वह पाकिस्तानी अवाम के दिल में जगह बनाए। यह कार्य असंभव नहीं है, क्योंकि बड़ी संख्या में पाकिस्तानी नागरिक अपनी सरकार और सेना की नीतियों से असंतुष्ट हैं और भारत को एक शांति और विकास की दिशा में बढ़ते राष्ट्र के रूप में देखते हैं।

हमें यह संदेश स्पष्ट रूप से देना चाहिए कि भारत की कोई दुश्मनी पाकिस्तानी जनता से नहीं है, बल्कि वह उनके भ्रष्ट, अक्षम और दमनकारी शासकों से है। अगर हम पाकिस्तानी अवाम को एक वैकल्पिक भविष्य दिखा सकें - जैसे भारत ने 'विकसित भारत 2047' का सपना संजोया है - वैसे ही उनके लिए 'लोकतांत्रिक पाकिस्तान 2047' की कल्पना पेश कर सकें, तो यह एक बड़ी वैचारिक जीत हो सकती है।

भारत के पास आज एक सशक्त सूचना तंत्र है - एक ऐसा आईटी सेल, जो केवल चुनाव प्रचार नहीं, बल्कि नीतिगत संवाद, वैश्विक छवि निर्माण और जनमत तैयार करने की क्षमता रखता है। इस संरचना का उपयोग पाकिस्तानी अवाम को जोड़ने, संवाद स्थापित करने और उन्हें विश्वास में लेने के लिए किया जा सकता है। और भारत केवल सपना दिखाने तक सीमित नहीं है ङ्क हमारे पास वह सामर्थ्य भी है कि हम दिखाए गए विजन को धरातल पर उतार सकें।

ऑपरेशन सिंदूर

सुरेश पचौरी

लेखक भारत सरकार में रक्षा उत्पादन राज्य मंत्री रहे हैं।

आतंकवाद का खात्मा पीएम मोदी का संकल्प

पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकवादी हमले ने पूरे भारत देश को झकझोर दिया। यह भारत की अंतरात्मा पर भी किया गया आक्रमण था। निर्दोष नागरिकों की उनके परिवारों के सामने हत्या, उनके धर्म के आधार पर, आतंक और क्रूरता का भयानक चेहरा था। यह देश की एकता और सौहार्द को तोड़ने का एक शर्मनाक प्रयास था। इस हृदयविदारक घटना के बाद पूरे देश ने एकजुट होकर आतंकवाद के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की माँग की। यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय सेनाओं को पूरी स्वतंत्रता दी गई कि वे आतंकवादियों का खात्मा करें।

भारत द्वारा लिए गए फैसले के अनुसार अटारी-वाघा सीमा बंद कर दी गई । द्विपक्षीय व्यापार निलंबित कर दिए गए। वीजा रद कर दिए गए। सिंधु जल संधि को रोक दिया गया । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सुनिश्चित किया कि सिंधु जल संधि को निलंबित करने से लेकर आतंकी शिविरों पर सैन्य प्रहार करने तक का हर कदम सावधानीपूर्वक, योजनाबद्ध और समयबद्ध तरीके से उठाया जाएगा। इस संदर्भ में सरकार ने उत्तेजना में कार्रवाई करने के बजाय रणनीतिक रूप से ऑपरेशन सिंदूर के जरिए ठोस कार्रवाई के रास्ते को चुना। ऑपरेशन सिंदूर सिर्फ एक नाम नहीं, यह देश के करोड़ों लोगों की भावनाओं का प्रतीक बनकर सामने आया।

6 मई की रात और 7 मई की सुबह, भारत ने आतंक के खिलाफ अपनी प्रतिज्ञा को साकार किया। भारतीय सेनाओं ने पाकिस्तान में आतंकियों के 9 ठिकानों पर और उनके प्रशिक्षण केंद्रों पर सटीक हमला कर नष्ट किया। जब देश एकजुट होता है और 'नेशन फर्स्ट' की भावना से काम करता है, तो ऐसे मजबूत निर्णय और परिणाम सामने आते हैं। ऑपरेशन सिंदूर ने पाकिस्तान के भीतर 100 किमी तक घुसकर कार्यवाही की। यह भारत की सैन्य क्षमता, राजनीतिक इच्छाशक्ति और राष्ट्रीय संकल्प का प्रतीक है। इस ऑपरेशन में 100 से अधिक आतंकवादी मारे गए। भारत ने इन आतंकियों को एक ही बार में खत्म कर दिया । इनके अंतिम संस्कार में पाक के आर्मी चीफ व पाक सरकार के नुमाइंदों का शामिल होना इस बात की पुष्टि करता है कि पाक सरकार आतंकवाद पोषक है।

भारत की मजबूत सैन्य शक्ति, भारत के मिसाइलों और ड्रोन ने पाकिस्तानी एयरबेस को भारी नुकसान पहुँचाया। भारत का एयर डिफेंस सिस्टम सक्षम रहा और भारत निर्मित हथियारों और मिसाइलों की श्रेष्ठता साबित हो गई। भारतीय सेना द्वारा सतर्कता बरती गई कि पाकिस्तान के किसी नागरिक, सैन्य और आर्थिक ठिकाने पर निशाना लगाने के बजाय सिर्फ आतंकी ठिकानों को ध्वस्त किया जाए । इस तरह दुनिया में किसी को इसके विरोध में कुछ कहने का मौका नहीं रह गया। चीन तक समझ नहीं पा रहा कि भारत के इस कदम को कैसे गलत ठहराया जाए । भारतीय सेना ने पाक के जिन नौ आतंकी ठिकानों पर हमले किए, उनमें से चार पाक अधिकृत कश्मीर में और बाकी उसके पंजाब प्रांत में स्थित थे। शायद पाकिस्तानी सेना को अंदाजा नहीं था कि भारतीय सेना पंजाब प्रांत के भीतर भी हमला कर सकती है। पाक के 11 हवाई अड्डे भारतीय सेना द्वारा मिट्टी में मिला दिए गए। आपरेशन सिंदूर के बाद भारत को कूटनीतिक कामयाबी मिली है । पहलगाम हमले के तुरंत बाद भारत ने पाकिस्तान की कूटनीतिक घेराबंदी कर दी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लगभग 20 देशो के राष्ट्राध्यक्षों से बात कर पाक द्वारा पोषित आतंकबाद की जानकारी दी। उन्होनें अमेरिका, साउदी अरब, यू.ए.ई. जैसे बड़े देशों का समर्थन हासिल किया। आज पाकिस्तान कूटनीतिक दृष्टि से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अलग पड़ चुका है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आतंकवाद के विरुद्ध भारत की लड़ाई में सभी राजनीतिक दलों ने अपनी वैचारिक असहमतियों से ऊपर उठकर एकजुटता दिखाई है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाले सक्षम भारत की सशक्त तस्वीर ही है कि पाकिस्तान चार दिनों में ही घुटनों पर आ गया। दस मई को पाकिस्तान के 11 हवाई अड्डे धुआं-धुआं हो जाने के बाद पाक 'सरेंडर' कर सीजफायर के लिए अपने डीजीएमओ के जरिए गुहार करने लगा। भारत ने दो टूक फैसला किया कि 'भविष्य में अगर आतंकी हमला हुआ तो उसे 'एक्ट ऑफ वार' माना जाएगा और उसका जवाब भी उसी भाषा में दिया जाएगा। प्रधानमंत्री ने देश के नाम अपने संबोधन में कहा कि आपरेशन सिंदूर केवल एक नाम नहीं है, बल्कि यह देश के लाखों लोगों की भावनाओं का प्रतिबिंब है। इसके माध्यम से दुनिया को भारत की ओर से यह संदेश दिया गया कि बर्बरता का सामना संतुलित और सटीक बल प्रयोग से किया जाएगा। आतंकवाद के साथ पड़ोसी देश की साठगांठ अब कूटनीतिक आवरण या परमाणु हथियारों की धमकियों से जुड़ी बयानबाजी के पीछे नहीं छिप सकेगी। प्रधानमंत्री मोदी ने जोर देकर कहा है कि पाकिस्तान की सेना और सरकार ने लगातार आतंकवाद को बढ़ावा दिया है । उन्होंने चेतावनी दी कि इस तरह की कार्रवाइयां अंततः पाकिस्तान के पतन का कारण बनेंगी। उन्होंने घोषणा करते हुए कहा है कि अगर पाकिस्तान को अपना अस्तित्व बचाना है, तो उसे अपने आतंकी ढांचे को खत्म करना होगा - शांति का कोई दूसरा रास्ता नहीं है। उन्होंने भारत के अटूट संकल्प की पुष्टि करते हुए कहा कि टेरर और टॉक एक साथ नहीं चल सकते, टेरर और ट्रेड साथ-साथ नहीं चल सकते, और खून और पानी एक साथ नहीं बह सकते । प्रधानमंत्री ने स्पष्ट किया है कि पाक से बातचीत का केवल एजेण्डा होगा आतंकवाद की समाप्ति और पाक अधिकृत कश्मीर। इतिहास याद रखेगा कि पहलगाम के जवाब में भारत की प्रतिक्रिया संयमित और समयानुकूल रही। आतंकवाद के विरुद्ध भारत ने मजबूती से खड़े होकर एक सुर में बात की। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने भी स्पष्ट किया कि आपरेशन सिंदूर जारी है। यह स्पष्टता, साहस और आतंकवाद से निपटने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संकल्प के एक नए युग का आरंभ है। 'ऑपरेशन सिंदूर' से पाकिस्तान और उसकी पनाह में पल रहे आतंकियों को सबक सिखाने के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने देश के नाम संदेश दिया और अगले दिन आदमपुर एयरबेस पहुंचे। प्रधानमंत्री के संदेश व आदमपुर एयरबेस पहुंचने के अपने निहितार्थ हैं। आदमपुर एयरबेस पर प्रधानमंत्री मोदी जी का पहुंचना जहाँ वीर सेनिको की हौसला आफजाई करना था वहीं पाकिस्तान के इस दावे की भी कलई खोलना था कि आदमपुर एयरबेस को कोई नुकसान नहीं हुआ है। देश के नाम संबोधन में प्रधानमंत्री ने स्पष्ट किया कि 'भारत किसी भी परमाणु ब्लैकमेल को बर्दाश्त नहीं करेगा। बीते दिनों में हमारे देश का सामर्थ्य और उसका संयम दुनिया ने देखा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि मैं हमारे देश की हर माता को, देश की हर बहन को और देश की हर बेटी को यह वीरता, साहस और पराक्रम समर्पित करता हूं। सबसे पहले मैं भारत की पराक्रमी सेनाओं, सशस्त्र बलों, हमारी खुफिया एजेंसियों, हमारे वैज्ञानिकों को हर भारतवासी की तरफ से सलाम करता हूं। हमारे वीर सैनिकों ने ऑपरेशन सिंदूर के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए असीम शौर्य का प्रदर्शन किया है, जिसके लिए कृतज्ञ भारत ऋणी है।

विचार

निलेश देसाई

लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

लोक परंपराओं में जलवायु संकट का समाधान

जलवायु परिवर्तन ने इस स्थिति को और बिगाड़ा है। कुएं, नाले और बावड़ियाँ अब पहले जैसे नहीं बचे। भूजल का गिरता स्तर और रासायनिक खेती ने मिट्टी की सेहत और जल पुनर्भरण पर असर डाला है। लेकिन आदिवासी समुदायों ने हार नहीं मानी। भील और भिलाला समाज ने अपनी पुरानी लोक परंपराओं को बचाया, जिनमें जल, जंगल और जमीन के संरक्षण की गहरी समझ है। 'अड़जी-पड़जी' से 'समूह प्रयास' तक झाबुआ के गांवों में सदियों पुरानी 'अड़जी-पड़जी' परंपरा आज भी जीवित है — जिसमें गांववाले मिलकर किसी सार्वजनिक काम में श्रमदान करते हैं। जलस्रोतों की सफाई, बावड़ियों की मरम्मत, मिट्टी-बचाव की मेड़बंदी — ये सब काम सामूहिक श्रम से किए जाते रहे हैं।

जलवायु परिवर्तन आज की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। झाबुआ जैसे आदिवासी अंचलों में यह संकट और गहरा है – सूखते जल स्रोत, घटती बारिश और बढ़ती गर्मी ने जीवन और आजीविका को कठिन बना दिया है। परंतु इस संकट का समाधान कहीं बाहर नहीं, बल्कि यहीं मौजूद है – हमारे आदिवासी समुदायों की लोक परंपराओं और प्रकृति आधारित जीवनशैली में।

मध्य प्रदेश का झाबुआ जिला अपने पहाड़ी भूगोल, कम वर्षा और मिट्टी कटाव जैसी समस्याओं के कारण वर्षों से जल संकट से जूझता रहा है। जलवायु परिवर्तन ने इस स्थिति को और बिगाड़ा है। कुएं, नाले और बावड़ियाँ अब पहले जैसे नहीं बचे। भूजल का गिरता स्तर और रासायनिक खेती ने मिट्टी की सेहत और जल पुनर्भरण पर असर डाला है। लेकिन आदिवासी समुदायों ने हार नहीं मानी। भील और भिलाला समाज ने अपनी पुरानी लोक परंपराओं को बचाया, जिनमें जल, जंगल और जमीन के संरक्षण की गहरी समझ है।

'अड़जी-पड़जी' से 'समूह प्रयास' तक

झाबुआ के गांवों में सदियों पुरानी 'अड़जी-पड़जी' परंपरा आज भी जीवित है – जिसमें गांववाले मिलकर किसी सार्वजनिक काम में श्रमदान करते हैं। जलस्रोतों की सफाई, बावड़ियों की मरम्मत, मिट्टी-बचाव की मेड़बंदी – ये सब काम सामूहिक श्रम से किए जाते रहे हैं। यह परंपरा आज जलवायु अनुकूलन का आधार बन रही है।

रूपापाड़ा: परंपरा और नवाचार का मिलन

रूपापाड़ा गांव इसका सशक्त उदाहरण है। सम्पर्क संस्था के सहयोग से गांववालों ने एक बंजर चरागाह भूमि को हरे-भरे जंगल में बदला। 50 एकड़ जमीन पर 30,000 पेड़, 20,000 चारा पौधे, कंटूर ट्रेंच, चेक डैम और डबरियां बनाई गईं।

यह सब 'हलमा' और 'अड़जी-पड़जी' जैसे परंपरागत श्रम आयोजन के जरिए हुआ। गांव ने अपना ग्रामकोष बनाया – जिससे जल संरचनाओं का रखरखाव संभव हुआ।

महिलाएं बनीं जलवायु योद्धा

झाबुआ की महिलाएं केवल घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं रहीं। 617 महिला समूहों ने जल, जंगल और जमीन को बचाने में अग्रणी भूमिका निभाई।

- उन्होंने शराब, दहेज और बाल विवाह के खिलाफ मुहिम चलाई।
- जैविक खेती को अपनाया, जिससे पानी की बचत हुई और मिट्टी की उर्वरता सुधरी।
- सामुदायिक बागवानी से भोजन और आमदनी दोनों सुनिश्चित हुई।

परंपराओं और विज्ञान का समन्वय

सम्पर्क संस्था ने इस बदलाव में स्थानीय परंपराओं और आधुनिक विज्ञान को मिलाकर काम किया। चेक डैम और ट्रेंच की डिजाइन स्थानीय भूगोल के अनुसार बनाई गई। स्थानीय पेड़ों जैसे नीम और बबूल को प्राथमिकता दी गई, जिससे जल-संरक्षण और मिट्टी बचाव साथ-साथ हुआ। झाबुआ का अनुभव बताता है कि जलवायु नीति बनाते समय आदिवासी ज्ञान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। कुछ सुझाव:

- मनरेगा में परंपरागत श्रम परंपराओं को बढ़ावा मिले
- ग्रामसभाओं को जल प्रबंधन की जिम्मेदारी दी जाए
- जैविक और मिश्रित खेती को सरकारी समर्थन मिले
- परंपराओं और तकनीकों पर संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू हों

झाबुआ के आदिवासी समुदायों ने यह सिखाया है कि जलवायु परिवर्तन का स्थायी समाधान सामूहिक चेतना, परंपरा, और प्रकृति के साथ संतुलन में है। जब गांव अपनी विरासत को सहेजते हैं और विज्ञान से उसे जोड़ते हैं, तो वह धरती को फिर से सांस लेने लायक बना सकते हैं। आज आवश्यकता है कि हम आदिवासी लोक ज्ञान को सम्मान दें, उसे नीति का हिस्सा बनाएं, और इस संकट को अवसर में बदलें।

सीबीएसई की कक्षा 10वीं में समर्थ ने हासिल किये 98.8 प्रतिशत

भोपाल। सेंट मोंटफोर्ट स्कूल पटेल नगर के छात्र समर्थ शर्मा ने सीबीएसई की कक्षा 10वीं में 98.8 प्रतिशत अंक हासिल कर अव्वल दर्जे में परीक्षा पास की है। समर्थ शर्मा ने

अपनी इस सफलता का श्रेय पिता राकेश शर्मा और माताजी रानी शर्मा को दिया है। जिनके मार्गदर्शन में समर्थ ने पढ़ाई कर अच्छे अंक हासिल किये। समर्थ बताते है कि उन्होंने अपनी पढ़ाई प्रश्न पेपर की प्रैक्टिस करके की थी। किसी भी टॉपिक से जुड़ा ऐसा कोई सवाल नहीं छोड़ा, जो पिछले 5 साल में पूछा गया हो। इन सभी सवालों को उन्होंने हल करके देखा। इसके अलावा वह रोजाना 10 से 11 घंटे पढ़ाई करते थे। समर्थ ने गणित विषय में 100, अंग्रेजी में 94, हिन्दी में 97, विज्ञान में 99, सामाजिक विज्ञान में 98 एवं सूचना प्रौद्योगिकी मे 100 अंक हासिल किये है। समर्थ की सफलता पर पिता राकेश शर्मा, माता रानी शर्मा, इष्ट मित्रों एवं शुभचिंतकों ने बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की है।

किचन में फंदे से लटकी मिली किशोरी

बैतूल। बडोरा में एक प्राइवेट स्कूल की 12वीं कक्षा की छात्रा का शव बुधवार सुबह उसके घर के किचन में फंदे पर लटका मिला। पुलिस मामले की जांच कर रही है। छात्रा के पिता ने बताया कि सुबह 5 बजे उन्हें किशोरी का शव किचन में फंदे पर लटका मिला। उन्होंने तुरंत पड़ोसियों और पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्ट्म के लिए जिला अस्पताल भेजा। परिजनों के अनुसार, किशोरी पिछले साल भी 12वीं में फेल हुई थी और इस साल भी एमपी बोर्ड की परीक्षा में असफल रही। उसने अपना रिजल्ट परिजनों से छिपा लिया था। मंगलवार को जब परिजनों को इसकी जानकारी मिली, तो वह तनाव में आ गई। उसे डर था कि परिजन उसे डांटेंगे। पिता ने बताया कि रात में उसने सबके साथ खाना खाया और सामान्य बातचीत की। किसी को नहीं पता था कि वह यह कदम उठाएगी।

खेत में पेड़ से गिरा 19 साल का युवक, इलाज के दौरान मौत

बैतूल। चोपना थाना क्षेत्र के गुवाड़ी निवासी 19 वर्षीय सीताराम कुमरे की पेड़ काटते समय गिरने के कारण मौत हो गई। 11 मई को वह अपने खेत में आंधी से गिरे पेड़ को काट रहा था, इस दौरान बेकाबू होकर गिर गया। गिरने से उसके पेट में गंभीर चोट लग गई। घटना के समय उसकी मां रजनी मौके पर मौजूद थीं। परिजन उसे तुरंत जिला अस्पताल ले गए। हालत में सुधार न होने पर उसे एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। परिजनों के अनुसार, गिरने से युवक की यूरिनरी ट्रैक फट गई थी। नाजुक स्थिति के कारण उसे आईसीयू में रखा गया था। बीती रात बीपी कम होने के कारण उसकी मौत हो गई। कोतवाली पुलिस ने मृतक का पोस्टमॉर्टम जिला अस्पताल में करवाया है।

गला दबाकर चाकू मारा था, आरोपी को उम्रकैद

बैतूल। 40 हजार रुपए की उधारी मांगने पर नाराज युवक ने अपने साथी के साथ मिलकर पहले गला दबा दिया और शव को मक्के के खेत में दफना दिया। यह सनसनीखेज वारदात 7 सितंबर 2021 को सामने आई थी। अब कोर्ट ने इस मामले में बड़ा फैसला सुनाते हुए आरोपी दिलीप को उम्रकैद और जुर्माने की सजा सुनाई है, जबकि दूसरा आरोपी वस्तुलाल सबूतों के अभाव में बरी हो गया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार आमला के शिवपुरी निवासी कोयला व्यापारी राधेश्याम (38) को दिलीप यदुवंशी नाम के युवक ने अपने साथी वस्तुलाल के साथ मिलकर गला घोंटकर हत्या कर दी और शव को मक्का के खेत में दफना दिया। फरियादी पक्ष के अधिवक्ता राजेंद्र उपाध्याय ने बताया कि राधेश्याम ने आरोपी दिलीप को 4 प्रतिशत ब्याज पर 40 हजार रुपए उधार दिए थे। उसी रकम की वसूली के लिए वह घर से निकला था। दिलीप ने राधेश्याम को अपने गांव बुलाया और फिर नवेगांव थाना क्षेत्र के एक मक्का खेत में ले जाकर शराब पिलाई। वहां दोनों आरोपियों ने मिलकर पहले गमछे से गला घोंटा और फिर पेट में छुरा घोंप दिया। हत्या के बाद शव को उसी खेत में गड्ढा खोदकर दफना दिया और राधेश्याम की बाइक को बेल नदी में फेंक दिया। राधेश्याम की गुमशुदगी की रिपोर्ट परिजनों ने आमला थाने में दर्ज कराई थी। पुलिस ने जब लोकेशन और कॉल डिटेल खंगाली तो वह आखिरी बार बोरदेही क्षेत्र में दिखा। वहीं उसकी निमोटी गांव के दो लोगों से बातचीत हुई थी। पुलिस ने जब दिलीप और वस्तुलाल से पूछताछ की तो उन्होंने अपना गुनाह कबूल कर लिया।

सख्त साक्ष्य, डीएनए से लेकर फिंगरप्रिंट तक - पुलिस ने मौके से शराब की बोतलें, गिलास और हत्या के दौरान पहने गए कपड़े जब्त किए, जिनमें मृतक का खून लगा था। साथ ही डीएनए रिपोर्ट, कॉल डिटेल, लोकेशन और फिंगरप्रिंट के आधार पर कोर्ट में मजबूत साक्ष्य पेश किए गए।खास बात यह रही कि शव जिस जगह से मिला वह छिंदवाड़ा जिले के नवेगांव थाना क्षेत्र में था, जबकि राधेश्याम आमला (बैतूल) का रहने वाला था। इसके बावजूद तत्कालीन एसपी के निर्देश पर जांच बैतूल पुलिस से ही कराई गई, इसलिए केस आमला कोर्ट में चला। आमला एडीजे कोर्ट ने आरोपी दिलीप को हत्या के मामले में उम्रकैद और 300 रुपए जुर्माना, साथ ही साक्ष्य छिपाने के लिए 3 साल की सजा और 200 रुपए जुर्माने की सजा सुनाई है। वहीं दूसरा आरोपी वस्तुलाल सबूतों के अभाव में बरी कर दिया गया है।

जल जीवन मिशन की धीमी प्रगति पर कलेक्टर सख्त, दो ठेकेदारों के अनुबंध निरस्त

बैतूल। जल जीवन मिशन के तहत चल रहे कार्यों की धीमी प्रगति पर कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी द्वारा सख्त रुख अपनाया गया है। 13 मई को आयोजित समय-सीमा बैठक में कलेक्टर ने निर्देश दिए कि निर्धारित समय में कार्य पूर्ण नहीं करने वाले ठेकेदारों के अनुबंध निरस्त किए जाएं। इन निर्देशों के अनुपालन में कार्यपालन यंत्री, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग (पी.एच.ई.) द्वारा विकासखंड भीमपुर के ग्राम सोनाझर, दूनी, टिपरिंग तथा विकासखंड चिचोली के ग्राम चकचूना हजुरी, खोकराखेड़ा, पंछी, सिपलई, अटारी, बेला, खपरिया एवं नांदरा में कार्य कर रही दो ठेकेदार फर्मों जिसमें मेसर्स सतपुड़ा कंस्ट्रक्शन एंड बिल्डिंग मटेरियल सप्लायर्स, चिचोली एवं मेसर्स मनोरमा कंस्ट्रक्शन कंपनी, अन्नपूर्णा कॉलोनी, हरदा के अनुबंध निरस्त कर दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त, जिले के अन्य 45 अनुबंधों में कार्यरत ठेकेदारों को भी कार्य की धीमी गति के लिए नोटिस जारी किए गए हैं। यदि इन ठेकेदारों द्वारा कार्य शीघ्र पूर्ण नहीं किया जाता है, तो उनके विरुद्ध भी अनुबंध निरस्तीकरण की कार्यवाही की जाएगी।

जिले में साल दर साल कम हो रहा सोयाबीन का रकबा, मक्का के प्रति किसानों का बढ़ रहा रूझान

खरीफ की मुख्य फसल सोयाबीन के प्रति किसानों का हो रहा मोहभंग

संजय द्विवेदी, बैतूल। खरीफ की मुख्य फसल कहीं जाने वाली सोयाबीन की बुआई के प्रति अब किसानों का मोहभंग होता जा रहा है। यहीं वजह है कि साल दर साल सोयाबीन बुआई का रकबा कम हो रहा है और सोयाबीन की जगह धीरे-धीरे मक्का लेते जा रही है। कृषि विभाग ने मक्के का रकबा बढ़ाकर 2 लाख 12 हजार हेक्टेयर कर दिया है। कृषि विभाग ने खरीफ सीजन के लिए फसलों की बोवनी का जो कार्यक्रम जारी किया है, उसमें सोयाबीन का रकबा घटाकर 1 लाख 77 हजार हेक्टेयर कर दिया है। इस बार रकबे में करीब एक हजार हेक्टेयर क्षेत्र की कटौती की है। जबकि पहले जिले में सोयाबीन का रकबा 2.10 लाख हेक्टेयर से ऊपर हुआ करता था, जिसे घटाकर 1 लाख 77 हजार हेक्टेयर कर दिया गया है। वहीं मक्के का रकबा 2 लाख 12 हजार हेक्टेयर किया गया है। वैसे आशंका व्यक्त की जा रही है कि सोयाबीन का रकबा और घट सकता है। सोयाबीन के घटते रकबे को लेकर किसानों का कहना है कि जिले में अतिवृष्टि, कीट व्याधि, जलवायु परिवर्तन से फसल को नुकसान होता है। किसानों की लागत तक नहीं निकल पाती है। वहीं मक्का का उत्पादन बेहतर होता है । कीट व्याधि या अतिवृष्टि का ज्यादा असर नहीं पड़ता है। हाइब्रिड वैरायटी आने से उत्पादन बेहतर मिलता है और मार्केट में डिमांड भी बढ़ रही है।

जिले में साल दर साल घट रहा सोयाबीन का रकबा - जिले में सोयाबीन के रकबे में कमी आने की प्रमुख वजह जलवायु परिवर्तन, कीटों का प्रकोप, रोगों का प्रभाव और किसानों के लिए कम आय होना भी है। जिसके कारण किसानों का सोयाबीन फसल से मोहभंग होता जा रहा है। इसके अलावा, सोयाबीन की खेती की लागत अधिक होने के कारण भी किसान इसकी खेती से दूर हो रहे हैं। कई बार जिले में अत्यधिक बारिश के कारण फसल को नुकसान होता है। सोयाबीन की फसल को इल्लियों और अन्य कीटों से नुकसान होता है, जिससे उत्पादन कम हो जाता है। सोयाबीन की खेती में बीज, खाद और अन्य लागत लगातार बढ़ रही है, जबकि किसानों को अपनी फसल का उचित मूल्य नहीं मिल पा रहा है।

किसानों का मक्के के प्रति बढ़ रहा रूझान - सोयाबीन फसल को लेकर हर साल बढ़ती लागत और फसल उत्पादन में होने वाले नुकसान के कारण किसानों का रुझान अब मक्का फसल के प्रति बढ़ता जा रहा है। वहीं मक्के की मांग कई कारणों से बढ़ रही है। बढ़ती जनसंख्या, आहार में बदलाव, और पोल्ट्री, डेयरी, और इथेनॉल जैसे उद्योगों में मक्का का बढ़ता उपयोग इसके मुख्य कारण हैं। सरकार द्वारा मक्का उत्पादन

को बढ़ावा देने के लिए चलाई जा रही योजनाएं और तकनीक में सुधार भी उत्पादन वृद्धि में सहायक हैं। उन्नत किस्मों के बीज, उर्वरक और सिंचाई तकनीक का उपयोग भी उत्पादन में वृद्धि ला रहा है। जिसके कारण मक्का उत्पादन बढ़ रहा है और मांग बढ़ने से किसानों का कम लागत में बेहतर मुनाफा कमाने का मौका मिल रहा है।

इस वर्ष फसलों की बोवनी कार्यक्रम तय - कृषि विभाग ने खरीफ फसल के लिए कार्यक्रम तय किया है। कृषि विभाग द्वारा बुआई के लिए तय किये गये कार्यक्रम के अनुसार इस साल जिले में धान का रकबा 39,500 हेक्टेयर, ज्वार 1,650 हेक्टेयर, मक्का 2,12,000 हेक्टेयर, कोदो-कुटकी 0.600 हेक्टेयर, अरहर 5,900 हेक्टेयर, उड़द 0.620 हेक्टेयर, मूंग 0.300 हेक्टेयर, रामतिल 0.050 हेक्टेयर, तिल 0.250 हेक्टेयर, मूंगफली 4,400 हेक्टेयर, सोयाबीन 1,77,000 हेक्टेयर और कपास 1,080 हेक्टेयर यानि कृषि विभाग ने जो बुआई कार्यक्रम निर्धारित किया है उसके अनुसार जिले में इस बार 4,43,350 हेक्टेयर में बुआई होना है। हालांकि यह रकबा कम या ज्यादा हो सकता है ।

गत वर्ष 2024 खरीफ फसल का रकबा -

धान	39.419
ज्वार	1.612
मक्का	211.235
कोदो कुटकी	0.540
अरहर	5.829
उडद	0.601
मूंग	0.241
राम तिल	0.031
तिल	0.230
मूंगफली	4.365
सोयाबीन	178.011
कपास	1.072
योग रबी	**443.186**

(नोट - आंकड़े हेक्टेयर में)

इनका कहना है - अतिवृष्टि, कीट व्याधि से सोयाबीन फसल को नुकसान होता है। कई बार किसानों की लागत तक नहीं निकल पाती है। इसलिए किसान अब मक्का बुवाई पर ज्यादा ध्यान देने लगे है। मार्केट में मक्का की डिमांड भी बढ़ रही है।

- आनंद बडोनिया, उपसंचालक, कृषि विभाग बैतूल

शत-प्रतिशत रहा आरडी पब्लिक स्कूल का रिजल्ट

ड्रीम्स प्ले के अधिकांश विद्यार्थी मेरिट लिस्ट में हुए उत्तीर्ण

बैतूल / मुलताई। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) माध्यम के पवित्र नगरी मुलताई में कम ही शालाएं संचालित होती है। इनमें आरडी पब्लिक स्कूल, एवं ड्रीम्स प्ले पब्लिक स्कूल प्रमुख है। सीबीएसई 10वीं एवं 12वीं के प्राप्त रिजल्ट में नगर के आरडी पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए शत-प्रतिशत लक्ष्य की प्राप्ति की है। वही ड्रीम्स प्ले सीबीएससी पब्लिक स्कूल का रिजल्ट 95 प्रतिशत रहा सीबीएसई शिक्षा प्रणाली के आधार पर दोनों ही विद्यालयों का रिजल्ट आशा से अधिक रहा जिसके चलते शाला स्टाफ, पालको और छात्रों में भारी उत्साह है। आरडी पब्लिक स्कूल की छात्रा चारवी पिता सुनील पवार 96 प्रतिशत अंक प्राप्त कर नगर नगर सहित संपूर्ण जिले अपना नाम रोशन किया है। इसके अलावा सृष्टि पिता सुरेंद्र मगरदे ने 91 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं जबकि चित्रांश पिता हेमंत घोटे 88.4 प्रतिशत अंक की प्राप्ति की है खुशी पिता कमलेश साबले 88 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं मयंक पिता प्रवीण गायकवाड़ 86.8 प्रतिशत एवं काव्य पिता सतीश पटेल 85.6 प्रतिशत प्राप्त कर मुलताई नगर अपनी शाला का गौरव बढ़ाया है।

ड्रीम स्कूल के अधिकतम बच्चे मेरिट लिस्ट में -ड्रिम्ज स्कूल के विद्यार्थियों ने 2025 मे आयोजित सीबीएसई परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। घोषित हुए नतीजो में ड्रिम्ज स्कूल के विद्यार्थियों का कक्षा 10वी एवं 12वीं में परिणाम उत्कृष्ट रहा जिसमें कक्षा 12वीं से लीना पाठेकर विज्ञान संकाय से 87 प्रतिशत बनाकर प्रथम रही साथ ही नमन डहारे 86.2 प्रतिशत, वेदिका देशमुख 79 प्रतिशत, रजत बरई 78.6 प्रतिशत, भूमी अग्रवाल ने 76.6 प्रतिशत प्राप्त किए वही कक्षा 10वीं से तानिया खंडेलवाल 91.4 प्रतिशत बनाकर प्रथम रही साथ ही हर्षिता पंवार ने 88.4 प्रतिशत, मिहिर गावंडे 85.4 प्रतिशत, दीक्षांत सरोदे 85.2 प्रतिशत, देवांश साहू ने 84 प्रतिशत प्राप्त किये, 12वी कक्षा से नमन डहारे ने जेईई मेन्स परीक्षा में 93 प्रतिशतता के साथ स्कूल स्टाफ ओर प्रबंधन को गौरान्वित किया है। रिजल्ट 95 प्रतिशत तक सफल रहा अधिकतर छात्र मेरिट सूची में रहे इस अवसर पर स्टाफ एवं प्रबंधन द्वारा बच्चों को बधाई दी गई साथ ही उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

जिला कांग्रेस कमेटी ने लल्ली चौक पर फूंका मंत्री विजय शाह का पुतला

कर्नल सोफिया को पाकिस्तानियों की बहन बताने वाले मंत्री शाह के इस्तीफे की मांग

बैतूल। जिला कांग्रेस कमेटी ने लल्ली चौक पर मंत्री विजय शाह का पुतला दहन कर जोरदार प्रदर्शन किया। जिला कांग्रेस अध्यक्ष हेमंत वागद्रे के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने मंत्री शाह के खिलाफ जमकर नारेबाजी की और उनके बयान को देश की सेना एवं बेटियों का अपमान बताया।

जिला कांग्रेस अध्यक्ष हेमंत वागद्रे ने कहा कि प्रदेश के मंत्री विजय शाह ने पूरे देश को शर्मसार कर देने वाला बयान दिया है। इससे सेना का मनोबल गिरेगा विजय शाह प्रदेश के मंत्री है और उन्होंने सेना की बहादुर बेटी कर्नल सोफिया कुरैशी को पाकिस्तानियों की बहन बताया है, जिससे देश के सैनिको एवं उनके शौर्य एवं साहस का अपमान है। वागद्रे ने कहा कि कर्नल सोफिया कुरैशी पर पूरे देश को गर्व है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को इस पर तुरंत संज्ञान लेना चाहिए।

वागद्रे ने कहा कि मंत्री शाह की यह टिप्पणी मर्यादाओं के विपरीत है और यह भाजपा की संकीर्ण सोच को उजागर करती है। उन्होंने मांग की कि विजय शाह को अपने इस शर्मनाक बयान पर तत्काल इस्तीफा देना चाहिए एवं पूरे देश से माफी मांगनी चाहिए । प्रदर्शन में जिला कांग्रेस अध्यक्ष हेमंत वागद्रे के साथ वरिष्ठ कांग्रेस नेता अरुण गोठी,नवनीत मालवीय ,विभाष पाण्डेय, हेमंत पगारिया, अनुराग मिश्रा, अनिल मगरकर, सरफराज खान,मंगू सोनी , रितेश शुक्ला, राजा सोनी, मोनू वाघ, बंडू कुंभारे, आबिद खान, जैद खान, अतुल शर्मा, वसीम कुरैशी, मोहित खातरकर, निखिल देशमुख, नावेद खान, आयन खान, अम्मू खान, सोनू देशमुख और अफरोज खान आदि कांग्रेस जन उपस्थित रहे।

जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत मासोद तालाब पर श्रमदान और स्वच्छता अभियान संपन्न

बैतूल। कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी के आव्हान पर जन अभियान परिषद द्वारा जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत जनजागरूकता कार्यक्रमों की श्रृंखला में जनपद प्रभातपट्टन अंतर्गत ग्राम पंचायत मासोद स्थित पौराणिक नल-दमयंती तालाब पर श्रमदान एवं सफाई कार्य किया गया। जिला समन्वयक श्रीमती प्रिया चौधरी की उपस्थिति में आयोजित इस अभियान में तालाब घाट की सफाई की गई तथा पत्थर और कचरा हटाकर तालाब को स्वच्छ और आकर्षक स्वरूप प्रदान करने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम का संचालन विकासखंड समन्वयक श्रीमती राधा बरोडे के मार्गदर्शन में हुआ।

ग्राम आमापठार में सामूहिक विवाह समारोह, 2 गरीब बेटियों का हुआ विवाह

पूर्व विधायक निलय विनोद डागा विवाह समारोह में हुए शामिल, वर-वधु को दिया आशीर्वाद

बैतूल। भीमपुर विकासखंड के ग्राम आमापठार में 12 मई को एक विशेष सामूहिक विवाह समारोह का आयोजन किया गया, जहां दो गरीब निर्धन बेटियों का विवाह समाजसेवी और मेहरा समाज समिति के जिला अध्यक्ष संतु सूर्यवंशी द्वारा कराया गया। उल्लेखनीय है कि जिला अध्यक्ष संतु सूर्यवंशी ने अपने जन्मदिन पर 2 गरीब बेटियों का विवाह कराकर समाज सेवा का एक अनुकरणीय उदाहरण पेश किया है। इस समारोह में वधु संगीता बिसोने, जो ग्राम आमापठार की निवासी हैं और वधु सपना गोहे, जो बुदनी क्षेत्र से हैं, दोनों का विवाह रात्रि 7 बजे संपन्न हुआ। जिसमें पूर्व विधायक निलय विनोद डागा, मुलताई टीआई देवकरण डहरिया शामिल हुए और वर-वधु को आशीर्वाद दिया। इस आयोजन के तहत संतु सूर्यवंशी ने अपनी ओर से इन बेटियों का विवाह कराया और उनके परिवारों की आर्थिक मदद की। समारोह के दौरान मेहरा समाज समिति के अन्य सदस्य भी उपस्थित रहे और उन्होंने इस नेक कार्य की सराहना की। संतु सूर्यवंशी ने कहा कि उनका उद्देश्य समाज में गरीब और जरूरतमंद परिवारों के बच्चों की मदद करना और उन्हें एक अच्छा जीवन शुरू करने का अवसर देना है। इस प्रकार के सामूहिक विवाह समारोह से समाज में समरसता और भाईचारे की भावना बढ़ती है। समाज के अन्य लोगों ने भी इस आयोजन में सहयोग किया और विवाह संस्कारों की पूरी व्यवस्था की। समारोह में ग्रामीणों और आसपास के क्षेत्रों के लोग भी बड़ी संख्या में शामिल हुए।

सिकलसेल एक अनुवांशिक बीमारी, जिसके लिए जन जागरूकता आवश्यक : केन्द्रीय मंत्री श्री उईके

जिला चिकित्सालय परिसर में सिकलसेल रोगी टीकाकरण कार्यक्रम का आयोजन

बैतूल। जिला चिकित्सालय के नवीन एमसीएच भवन में बुधवार को सिकलसेल रोगी टीकाकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ राजेश परिहार ने बताया कि कार्यक्रम में दोपहर पश्चात तक 70 बच्चों का टीकाकरण किया गया। केन्द्रीय राज्य मंत्री जनजातीय मामले भारत सरकार दुर्गादास उइके ने कहा कि प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री एवं राज्यपाल महोदय के नेतृत्व में पूरे भारत में सिकल सेल अभियान, क्षय रोग उन्मूलन अभियान, एनीमिया अभियान चलाये जा रहे हैं। सिकलसेल टीकाकरण सम्पूर्ण जिले में किया जा रहा है। इससे 0 से 20 वर्ष आयु तक के बच्चे सुरक्षित हो रहे हैं ये हमारे लिये अत्यंत आशाजनक हैं। सिकलसेल एक अनुवांशिक बीमारी है इसके उपचार के लिये सामाजिक संस्थाओं, मीडिया, गैर सरकारी स्वैच्छिक संगठनों को आगे आना होगा एवं जनजागरूकता अभियान के रूप में आगे बढाया जाना होगा। आमला विधायक डॉ.योगेश पंडाग्रे ने कहा कि सिकलसेल एनीमिया गंभीर आनुवांशिक बीमारी है, जिसको चिकित्सक एवं दवाईयों के द्वारा खत्म नहीं किया जा सकता है। बैतूल जिला सिकलसेल प्रभावित जिला है जिसमें कुछ प्रजातियां इस बीमारी से अधिक पीडित हैं। शुरू के वर्षों में बच्चों में पता नहीं चलता, उम्र बढने के साथ-साथ हीमोग्लोबिन की कमी, पीलिया का बार-बार होना एवं जोड़ों का दर्द रहना इस बीमारी के प्रमुख लक्षण हैं, ये लक्षण होने पर तत्काल सिकलसेल स्क्रीनिंग करवाकर उपचार प्रारंभ करवायें। सिकलसेल टीकाकरण एक प्रभावी उपाय है। इसकी रोकथाम के लिये सिकलसेल वैक्सीन अभियान चलाया जा रहा है। सिकलसेल बीमारी से पीडित व्यक्ति को विवाह में सावधानी बरतनी होगी नही तो एक पीढी से दूसरी पीढ़ी में यह बीमारी हो सकती है। इसके लिये जेनेटिक टेस्ट करवाना चाहिये, समाज को इसके लिये जागरूक करने की आवश्यकता है। कार्यक्रम में आरएमओ डॉ रानू वर्मा, नोडल अधिकारी सिकलसेल डॉ अंकिता सीते सहित स्वास्थ्य विभाग के अन्य चिकित्सक अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहे।

ब्रह्माकुमारीज के समर कैंप का हुआ शुभारंभ

मोबाइल एडिक्शन फ्री सहित व्यक्तित्व विकास मुख्य उद्देश्य

बैतूल। बैतूल अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त ब्रह्माकुमारीज संस्थान के शिक्षा प्रभाग द्वारा प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी राजयोगी किड्स बाल व्यक्तित्व विकास समर कैंप का शुभारंभ उद्घाटन का आयोजन का किया गया। विगत 4 वर्षों से बच्चों में रचनात्मकता, सृजनशीलता, चरित्र निर्माण व दिव्य गुणों के विकास के उद्देश्य को लेकर इस कैंप का आयोजन किया जाता रहा है। जिसके आयोजन से बच्चों में एक सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलता है। इस शिविर के सफल संचालन के लिए गुजरात वापी से ब्रह्माकुमारी सोनम बहन बैतूल पधारी है, जो बाल व्यक्तित्व विकास शिविर विशेषज्ञ हैं। वे ब्रह्माकुमारीज के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय में भी इस तरह के शिविर का संचालन करते है और वर्तमान में भी वे माउंट आबू में आयोजित कैंप से बैतूल पधारे है। ब्रह्माकुमारीज भाग्य विधाता की संचालिका बीके मंजू दीदी ने बताया कि बच्चों में दिव्य गुणों के संचरण हेतु मोबाइल एडिक्शन फ्री लाइफ, पॉजिटिव थिंकिंग, स्ट्रेस फ्रि लिविंग, गुड टच बैड टच जैसे आवश्यक विषयों पर समझानी दी जाएगी साथ ही बच्चों के मानसिक शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के लिए अनेक खेल कूद गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा।

डीएम इन पीडियाट्रिक एंडोक्राइनोलॉजी,कोर्स शुरू करने वाला देश का तीसरा संस्थान बना

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में, संस्थान निरंतर चिकित्सा क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल कर रहा है। हाल ही में, पीडियाट्रिक एंडोक्राइनोलॉजी (बाल अंतःस्रावी रोग विज्ञान) में डॉक्टरेट ऑफ मेडिसिन (डीएम) कोर्स की शुरुआत कर, एम्स भोपाल देश में इस सुपर-स्पेशियलिटी कोर्स को शुरू करने वाला तीसरा संस्थान बनने का गौरव प्राप्त किया है। इससे पहले केवल एम्स दिल्ली और पीजीआईएमईआर चंडीगढ़ में यह पाठ्यक्रम उपलब्ध था। शुरू किया गया यह डीएम कार्यक्रम बच्चों में तेजी से बढ़ रहे हार्मोन संबंधी विकारों जैसे टाइप 1 डायबिटीज, वृद्धि संबंधी समस्याएं, थायरॉइड विकार, मोटापा, हड्डियों से जुड़ी बीमारियां और अन्य अंतःस्रावी रोगों के लिए विशेषज्ञ डॉक्टरों को तैयार करने पर केंद्रित है। यह पाठ्यक्रम बच्चों के बेहतर स्वास्थ्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। एम्स भोपाल में पीडियाट्रिक एंडोक्राइनोलॉजी यूनिट के प्रभारी प्रोफेसर डॉ. महेश महेश्वरी ने जानकारी दी कि इस कोर्स का उद्देश्य ऐसे विशेषज्ञ तैयार करना है जो बच्चों में हार्मोनल बीमारियों की जटिलताओं को समझ सकें और उनका समुचित इलाज कर सकें। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में विशेषज्ञ डॉक्टरों की भारी कमी है और यह कोर्स उस आवश्यकता की पूर्ति करेगा। प्रो. (डॉ.) शिखा मलिक (पीडियाट्रिक विभागाध्यक्ष) ने बताया कि एम्स भोपाल का पीडियाट्रिक विभाग पहले से ही बच्चों के एंडोक्राइन विकारों की विशेष देखभाल कर रहा है। विभाग में प्रत्येक मंगलवार को 'पीडियाट्रिक एंडोक्राइनोलॉजी क्लिनिक' और प्रत्येक शुक्रवार को 'पीडियाट्रिक एवं अडोलेसेंट डायबिटीज क्लिनिक' का आयोजन किया जाता है, जिससे कई बच्चों को लाभ मिल रहा है। इस अवसर पर प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा, पीडियाट्रिक एंडोक्राइनोलॉजी में डीएम कोर्स केवल एक शैक्षणिक उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच बढ़ाने की दिशा में एक ठोस कदम है। हम इस कोर्स के माध्यम से मध्यप्रदेश सहित देश के अन्य हिस्सों में विशेषज्ञ सेवाओं की नींव रख रहे हैं। इसके साथ ही हम राज्य स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से जिला स्तर पर पीडियाट्रिक डायबिटीज क्लिनिक स्थापित करने हेतु तकनीकी सहयोग भी प्रदान कर रहे हैं।

पत्रकारिता विश्वविद्यालय के मीडिया प्रबंधन विभाग में लगी प्रदर्शनी

● इंटरनेट और नेटवर्किंग: डिजिटल यूनिवर्स अनलॉक्ड विषय पर लगी आकर्षक और ज्ञानवर्धक प्रदर्शनी

भोपाल। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के मीडिया प्रबंधन विभाग के विद्यार्थियों ने 'इंटरनेट और नेटवर्किंगः डिजिटल यूनिवर्स अनलॉक्ड' शीर्षक से एक आकर्षक और ज्ञानवर्धक प्रदर्शनी का सफलतापूर्वक आयोजन किया। प्रदर्शनी का उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने किया। उन्होंने विद्यार्थियों की ओर से प्रदर्शित नवाचारों की सराहना की। इस अवसर पर विभाग के विभागाध्यक्ष एवं कुलसचिव डॉ.अविनाश वाजपेयी भी उपस्थित थे।

प्रदर्शनी में छात्रों द्वारा विकसित विभिन्न प्रकार के मॉडल और प्रोजेक्ट प्रदर्शित किए गए, जो सभी इंटरनेट और नेटवर्क इंफ्रास्ट्रक्चर की थीम पर केंद्रित थे। नवोन्मेषी कार्यशील मॉडल में कई विद्यार्थियों ने वास्तविक समय नेटवर्किंग प्रक्रियाओं और प्रणालियों को प्रदर्शित करने के लिए कार्यशील मॉडल प्रस्तुत किए, वहीं नेटवर्क इंफ्रास्ट्रक्चर का वैचारिक प्रतिनिधित्व मॉडल ने छोटे और बड़े पैमाने के नेटवर्क के निर्माण और संचालन के लिए आवश्यक विभिन्न घटकों को दर्शाया। इसी तरह प्रोटोकॉल और संचार तकनीक प्रदर्शनी में स्पष्ट रूप से समझाया कि नेटवर्क में संदेश कैसे वितरित किए जाते हैं और कौन से प्रोटोकॉल सफल संचार सुनिश्चित करने में शामिल हैं। एमबीए द्वितीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों की ओर से प्रस्तुत प्रदर्शनी में उन्हीं के द्वारा तैयार की गई समाचार बुलेटिन, लघु वृत्तचित्र एवं विज्ञापन फिल्में भी प्रस्तुत की गई। विद्यार्थियों ने नेटवर्क आर्किटेक्चर की योजना और निष्पादन प्रदर्शनों ने प्रभावी ढंग से दिखाया कि कैसे नियोजन, टोपोलॉजी, हार्डवेयर और सॉफ़्टवेयर एक साथ मिलकर इंटरनेट की रीढ़ बनते हैं। कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी से संवाद में विद्यार्थियों ने आत्मविश्वास के साथ अपने मॉडल के डिज़ाइन, कार्य और अनुप्रयोग को समझाया। प्रदर्शनी ने आगंतुकों को सरल नेटवर्क सेटअप से लेकर वैश्विक इंटरनेट की जटिल वास्तुकला तक डिजिटल दुनिया को शक्ति प्रदान करने वाली चीज़ों की गहरी समझ प्रदान की। इसने छात्रों को अपनी शिक्षा और रचनात्मकता को प्रदर्शित करने और सैद्धांतिक ज्ञान को व्यवहार में लाने के लिए एक मंच भी प्रदान किया। कुलसचिव एवं मीडिया प्रबंधन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो.डॉ. अविनाश वाजपेयी ने कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी का आभार ज्ञापित किया। यह प्रदर्शनी शिक्षिका अंकिता शर्मा के मार्गदर्शन में आयोजित की गई। इस अवसर पर विभाग के शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

देवी होल्कर की 300वीं जयंती को लेकर 21 से 31 मई तक जिलों में होंगे कार्यक्रमः विष्णुदत्त शर्मा

● जब पश्चिमी देशों में महिलाओं से घृणा की जाती थी, तब भारत में पुण्य श्लोका शासक थीं रानी अहिल्याबाईः शिवप्रकाश

● देवी अहिल्याबाई ने राजमाता से लोकमाता बनकर सांस्कृतिक गौरव यात्रा को आगे बढ़ायाः हितानंद

भोपाल। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री शिवप्रकाश जी, प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा, प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह एवं प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने बुधवार को भाजपा प्रदेश कार्यालय में महापुरूषों को माल्यार्पण तथा रानी अहिल्याबाई होल्कर के सामाजिक योगदान पर आधारित प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रानी अहिल्याबाई होल्कर की 300वीं जयंती के अवसर पर चलाए जाने वाले 10 दिवसीय अभियान के संबंध में आयोजित प्रदेश स्तरीय कार्यशाला को संबोधित किया। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री श्री शिवप्रकाश जी ने कहा कि आने वाले अभियान के दौरान हमें रानी अहिल्याबाई के कामों को स्थानीय उदाहरणों के माध्यम से जनता तक पहुंचाना है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि रानी अहिल्याबाई द्वारा स्थापित आदर्शों, उनके विचारों, उनके जनहितैषी कामों को इस अभियान के दौरान जन-जन तक पहुंचाना है। पार्टी के प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह ने कहा कि देवी अहिल्याबाई होल्कर के सपनों को पूरा करने का काम प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी कर रहे हैं। प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की केंद्र व राज्य सरकारें रानी अहिल्याबाई के विचारों को जमीन पर उतार रही हैं। प्रदेश शासन की पूर्व मंत्री व विधायक श्रीमती अर्चना चिटनीस ने कहा कि देवी अहिल्याबाई ने जीवन पर्यन्त साधना और संघर्ष कर महिला, समाज, देश, संस्कृति और धर्म के सशक्तिकरण के लिए कार्य किया।

उदाहरणों के माध्यम से रानी अहिल्याबाई के कामों को जनता तक पहुंचाएं: शिवप्रकाश जी

भाजपा के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री श्री शिवप्रकाश जी ने कहा कि रानी अहिल्याबाई ने सेना के आवागमन से होने वाले फसलों के नुकसान के लिए मुआवजे का प्रावधान किया। उन्होंने महिलाओं को रोजगार से जोड़ने के लिए महेश्वर साड़ी उद्योग स्थापित किया। इस साड़ी को प्रमोट करने के लिए वे हर विदेशी अतिथि को यही साड़ी उपहार में देती थीं और स्वयं भी यही पहनती थीं। उनका जीवन त्यागपूर्ण था और अपने राज्य को भगवान शिव का राज्य मानकर धर्मनिष्ठ शासन करती थीं। उन्होंने जनजातीय समाज के उत्थान के लिए अनेक कदम उठाए। हमें इस अभियान के दौरान उनके कामों के स्थानीय उदाहरण खोजकर जनता के सामने रखना है। उन्होंने कहा कि आज के युवाओं को हमारे धर्म और संस्कृति की पर्याप्त जानकारी नहीं है। रानी अहिल्याबाई की 300 वीं जयंती के अवसर पर चलाए जाने वाले अभियान के दौरान हमें उन पर फोकस करना है और रानी अहिल्याबाई के उदाहरणों के माध्यम से युवाओं, युवतियों, महिलाओं, बुद्धिजीवियों तथा समाज के अन्य वर्गों को यह जानकारी देना है।

महाराज विक्रमादित्य, सम्राट हर्षवर्धन की श्रृंखला की कड़ी थीं रानी अहिल्याबाई

भाजपा के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री श्री शिवप्रकाश जी ने कहा कि महाराज विक्रमादित्य और सम्राट हर्षवर्धन के शासनकाल में जिस तरह से सांस्कृतिक उत्थान का काम हुआ, वैसा ही काम रानी अहिल्याबाई ने भी किया। आज वही काम प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी भी कर रहे हैं। इस अभियान के दौरान हमें इनके कामों को उदाहरणपूर्वक एक-दूसरे से जोड़ते हुए जनता के सामने रखना है। भारत के बारे में यह भ्रम फैलाया जाता है कि यहां महिलाओं को वेद पढ़ने की अनुमति नहीं थी, शिक्षा नहीं दी जाती थी, पर्दे में रहना पड़ता था। लेकिन ये देश भूल जाते हैं कि पश्चिमी देशों में जब महिलाओं से घृणा की जाती थी, तब भारत में रानी अहिल्याबाई के रूप में एक महिला शासन संभाल रहीं थीं। उन्होंने कहा कि लैंगिक समानता का ढिंढोरा पीटने वाले पश्चिमी देशों में तो महिलाओं को वोट देने का अधिकार भी आंदोलन के बाद मिला। न्यूजीलैंड में 1893, इटली में 1945, कनाडा में 1917, जर्मनी में 1918, इंग्लैंड में 1918 में सिर्फ 30 महिलाओं को मतदान का अधिकार मिला। इसी तरह आस्ट्रिया व नीदरलैंड में 1919 तथा अमेरिका में 1920 में मतदान का अधिकार मिला। लेकिन भारतवर्ष में इसके लिए महिलाओं को कोई संघर्ष नहीं करना पड़ा, हमारे संविधान में ही इसका प्रावधान है। श्री शिवप्रकाश जी ने कहा कि पश्चिमी देशों में तो महिलाओं को बराबरी के अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ा, लेकिन भारतवर्ष में महिलाओं के लिए यह संघर्ष भी पुरुषों ने ही किया। चाहे सती प्रथा का अंत हो या महिला शिक्षा का विषय, राजा राममोहन राय से लेकर महात्मा फुले जैसे समाज सुधारकों ने इसके लिए संघर्ष किया।

लोकमाता रानी अहिल्याबाई के आदर्शों को जमीन पर उतारना है

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि लोकमाता रानी अहिल्याबाई की 300 वीं जन्मजयंती के अवसर पर चलाए जा रहे इस अभियान के दौरान हमें उनके आदर्शों, उनके कामों, उनके विचारों को जन-जन तक पहुंचाना है। कठिन परिस्थितियों के बीच सुशासन कैसे चलाया जा सकता है, इसका उदाहरण उन्होंने प्रस्तुत किया। उन्होंने पूरे समर्पण के साथ जनता की सेवा की और वे किसी से डरती नहीं थी। उनका व्यक्तित्व, मन और हृदय विशाल था। उन्होंने 300 साल पहले औद्योगीकरण और रोजगार के बारे में सोचा। सैनिकों और उनके परिवारों की भलाई के लिए कदम उठाए। उन्होंने अपने शासन में समावेशी सिद्धांत को पोषित किया, इसलिए उनके शासन में हर व्यक्ति को अहसास रहता था कि महारानी उसकी चिंता करती हैं। उन्होंने अपने निर्णयों से यह साबित किया कि कानून के सामने सब बराबर हैं। उन्होंने अपनी नीतियों में मानव अधिकारों का संरक्षण किया और हर व्यक्ति को न्याय मिल सके, इसके लिए न्यायालय स्थापित करने तथा न्यायाधीशों के प्रशिक्षण पर जोर दिया। न्यायालयों की मानीटरिंग की व्यवस्था की और वे नियमित समीक्षा भी करती थीं। उन्होंने खाद्य सुरक्षा नीति बनाई और यह स्थापित किया कि जहां धर्म है, वहीं न्याय है। शासन और धर्म अलग नहीं है। उन्होंने अपने कामों से इतिहास में एक आदर्श स्थापित किया। अभियान के दौरान हम सभी कार्यकर्ताओं को उनके आदर्शों को जनता तक पहुंचाना है।

रानी अहिल्याबाई के सुशासन को अपना रही भाजपा की सरकारें

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि रानी अहिल्याबाई ने सुशासन के क्षेत्र में जो मापदंड स्थापित किए, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व वाली भाजपा की सरकारें उन्हें अपना रही हैं। उन्होंने 300 साल पहले जिस वूमन लैड डेवलपमेंट की बात की थी, वहीं सोच प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी भी रखते हैं। रानी अहिल्याबाई के शासन में जनता की पसंद और नापसंद योजनाओं में दिखाई देती थी। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी भी 'मन की बात' कार्यक्रम में जिन बिंदुओं को शामिल करते हैं, वो वास्तव में जनता की ही बातें होती हैं। उन्होंने गांवों को सुशासन का अंग मानते हुए पंचायतों को न्याय के अधिकार दिये। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी भी पंचायतों को अधिकार संपन्न बना रहे हैं। रानी अहिल्याबाई ने अपने शासन में पारदर्शिता के लिए अनेक कदम उठाए। उन्होंने स्वयं की संपत्ति से खासगी ट्रस्ट बनाया। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने भी ऐसा पारदर्शी सिस्टम बनाया है कि आज जनता के लिए भेजे गए एक रुपये में से पूरे पैसे जनता के पास पहुंचते हैं1 प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भी रानी अहिल्याबाई की तरह व्यवस्था को जनता के लिए सरल बनाया है।

अहिल्याबाई होल्कर के समाज में दिए गए योगदान को जन-जन तक पहुंचाएगी भाजपा

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने मीडिया से चर्चा करते हुए कहा कि देवी अहिल्याबाई होल्कर द्वारा समाज में दिए गए योगदान को भाजपा जन-जन तक पहुंचाएगी। देवी होल्कर की 300वीं जयंती को लेकर 21 मई से 31 मई तक जिलों में अभियान चलाकर जयंती के कार्यक्रम होंगे। 31 मई को उनकी जयंती के दिन इंदौर में अभियान का समापन होगा। भाजपा मध्यप्रदेश देवी अहिल्याबाई होल्कर की शासन व्यवस्था कैसे आज देश और प्रदेश में स्थापित है, उसे लेकर भाजपा जन-जन तक पहुंचेगी। प्रदेश भर के जिलों में कार्यकर्ता देवी अहिल्याबाई होल्कर के व्यक्तित्व और शासन व्यवस्था, सुशासन, महिला सशक्तिकरण सहित 300 वर्ष पूर्व जो उल्लेखनीय कार्य को जनता के बीच रखेंगे। देवी होल्कर के समाज, महिला, संस्कृति, देश और धर्म को लेकर जो कार्य किए हैं, उन सभी विषयों पर चर्चा की जाएगी। उन्होंने कहा कि इस दौरान देवी अहिल्याबाई होल्कर द्वारा महिला सशक्तिकरण को लेकर किए गए कार्यों को बताने निर्वाचित महिला जनप्रतिनिधियों के साथ कार्यक्रम आयोजित होंगे। उनसे जुड़ी हुई विरासत को नाट्य प्रस्तुतियां, प्रदर्शनियों व अन्य कार्यक्रमों के जरिए जनता तक पहुंचाया जाएगा। विधवा विवाह प्रथा देवी अहिल्याबाई होल्कर ने अपने शासनकाल में शुरू की थी। उस समय होल्कर की सेना में लगे सैनिकों की विधवाओं को रोजगार के लिए महेश्वर साड़ी जैसे रोजगार की व्यवस्था की थी। आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार और प्रदेश में हमारी सरकारें उसी तरह महिलाओं के स्वरोजगार के लिए कई अभियान चला रही हैं।

प्रधानमंत्री जी 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' का निर्माण कर रहे: डॉ. महेंद्र सिंह

भाजपा के प्रदेश प्रभारी डॉ. महेंद्र सिंह ने कहा कि देवी अहिल्याबाई होल्कर के सपनों को पूरा करने का काम प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी कर रहे हैं। देवी अहिल्याबाई ने इंदौर से पूरे देश का उत्थान कर चारों धामों, सप्तपुरी, अयोध्या का राम मंदिर, रामेश्वरम, काशी विश्वनाथ सहित देशभर में तीन हजार से ज्यादा मंदिरों का जीर्णोद्धार का काम कर भारत को सजाने का काम किया था। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में चारों धामों को जोड़ने, बौद्ध और जैन सर्किट सहित सात हजार से ज्यादा मंदिरों का निर्माण और जीर्णोद्धार का कार्य किया जा रहा है। देवी अहिल्याबाई होल्कर ने कुओं और बावड़ियों का निर्माण किया था।

सक्षम कार्यक्रम के तहत 10 दिवसीय समर कैंप का किया शुभारंभ

बैतूल। बैतूल जनजातीय कार्य विभाग के अंतर्गत सक्षम जीवन कौशल कार्यक्रम द्वारा आयोजित 10 दिवसीय समर कैंप का शुभारंभ शासकीय माध्यमिक शाला दूधिया, चिचोली, जामठी आदि चिचोली ब्लॉक के ग्रामों में किया गया। जिसमें स्कूली बच्चों को जीवन कौशल आधारित शिक्षा एवं रोचक गतिविधियों के द्वारा कौशल विकास विकसित करने के लिए यहां समर कैंप का आयोजन सक्षम कार्यक्रम से प्रशिक्षित कम्युनिटी यूथ लीडर्स द्वारा किया जा रहा है। समर कैंप के पहले दिन बच्चों ने पेड़ों से सूखे हुए पत्तों से आकृतिया बनाई, जिससे उनकी रचनात्मक सोच को बढ़ावा मिला। इसके साथ ही बच्चों ने अपना परिचय पत्र भी तैयार किया है। यह कैंप समर कैंप 10 दिनों तक चलेगा, जिसमें ड्रॉप आउट बच्चे भी शामिल हो रहे हैं। ब्लॉक मैनेजर इंद्रासेन नागले ने कैंप का उद्देश्य बताया कि गर्मियों की छुट्टियों के दौरान बच्चों की प्रभावित न हो और वे इस कैंप के माध्यम से नए जीवन कौशल सीख सके। कम्युनिटी यूथ लीडर की इस पहल की ग्रामीणों ने भी सराहना की है। समर कैंप का संचालन समुदाय यूथ लीडर सरिता करोचे दूधिया, कमलेश इवने जामठी और अविनाश राठौर द्वारा किया जा रहा है।

विवाह संस्कार हमारी सामाजिक समरसता का अद्वितीय उदाहरण : केंद्रीय राज्य मंत्री

सामूहिक विवाह कार्यक्रम में 1011 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे

बैतूल। मुख्यमंत्री कन्या विवाह/निकाह योजना 2025 के अंतर्गत सामूहिक विवाह कार्यक्रम बुधवार को पुलिस ग्राउंड बैतूल में आयोजित किया गया। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत चिचोली ने बताया कि सामूहिक विवाह कार्यक्रम घोड़ाडोंगरी विधायक श्रीमती गंगा सज्जन सिंह उइके की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। सामूहिक विवाह कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उईके, मप्र जन अभियान परिषद उपाध्यक्ष व राज्य मंत्री दर्जा मोहन नागर, विशेष अतिथि नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर, समरसता और राष्ट्र की एकता, अखंडता का अद्वितीय उदाहरण है। विवाह संस्कार दो आत्माओं, दिल और कुलों का मिलन है। इस दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की ओर से परिणय सूत्र में बंधने जा रहे 1011 जोड़ों को आशीर्वाद प्रदान किया। घोड़ाडोंगरी विधायक श्रीमती गंगाबाई उइके ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का इस आयोजन के लिए आभार व्यक्त करते हुए सभी नव दाम्पत्य जोड़ों को परिणय सूत्र में बंधने पर बधाई दी। राज्य मंत्री दर्जा मोहन नागर ने कहा कि 16 संस्कारों में से विवाह एक महत्वपूर्ण 15वां संस्कार है।

जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पवार, जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, सुधाकर पवार, अनिल सिंह कुशवाह, संतोष मालवीय, जनपद अध्यक्ष, सदस्य सहित अन्य जनप्रतिनिधि शामिल हुए। कार्यक्रम में अतिथियों का पुष्प गुच्छ से सम्मान किया गया। इसके पूर्व ऑडिटोरियम से ढोल-नंगाड़ों के साथ भव्य बारात निकाली गई, जो मुख्य कार्यक्रम स्थल पर पहुंची। सामूहिक विवाह कार्यक्रम में चिचोली और आठनेर तहसील के 1011 वर-वधू सात फेरे लेकर परिणय सूत्र में बंधे। इसमें 820 जनजातीय वर्ग के जोड़ों का उनके पारंपरिक रीति-रिवाज से विवाह हुआ। यह सामूहिक विवाह सम्मेलन आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के लिए संबल बना, समाज में एक सकारात्मक संदेश भी गया कि सभी धर्म, जाति और वर्ग के लोग एक मंच पर आकर सामाजिक परंपराओं को मजबूती दे सकते हैं।

विवाह संस्कार दो आत्माओं, दिल और कुलों का है मिलन - केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उइके ने कहा कि हम सौभाग्यशाली है कि हमारा जन्म भारत भूमि में हुआ है और हमें सोलह संस्कारों के रूप में दिव्य परंपरा हमारे पूर्वजों ने वरदान के रूप में हमें दी है। हमारे ऋषि मुनियों ने गृहस्थ आश्रम को भारतीय संस्कृति का मेरुदंड बताया है। उन्होंने कहा कि विवाह संस्कार हमारी सामाजिक हमारे चार आश्रम में से गृहस्थ आश्रम महत्वपूर्ण है। जिसको ध्यान में रखते हुए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा प्रदेश में गरीब समाज, गरीब जनजातीय वर्ग के लोगों के लिए मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना चलाई जा रही है। इस योजना के तहत 1011 जोड़े विवाह के बंधन में बंधे है।

प्रशासनिक अधिकारियों ने संभाली कार्यक्रम की व्यवस्था - प्रशासनिक अधिकारियों ने दूल्हा-दुल्हन की बैठने की व्यवस्था से लेकर भोजन, मंच और विवाह मंडपों तक हर पहलू पर बारीकी से निगरानी रखी। एसडीएम श्री राजीव कहार के निर्देशन में कार्यक्रम का सफल क्रियान्वयन किया गया। कार्यक्रम के दौरान अतिथियों ने वर-वधु को मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना की सहायता राशि चेक के माध्यम से प्रदान की। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के अंतर्गत पात्र कन्याओं को उनके विवाह के समय कुल 55 हजार रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, जिसमें 49 हजार रुपये का चेक सीधे कन्या के नाम से दिया जाता है ताकि वह अपने नए जीवन की शुरुआत सशक्त रूप से कर सके, जबकि 6 हजार रुपये विवाह समारोह के आयोजन के लिए दिए जाते हैं। इस अवसर पर एसडीएम श्री राजीव कहार, सामाजिक न्याय विभाग की सुश्री रोशनी वर्मा, जनपद सीईओ सहित अन्य प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित रहे।

ऑनलाइन संगोष्ठी

संवाद नहीं अब संघर्ष होगा, कश्मीर से लेकर पाकिस्तान तकः नारद जयंती पर राष्ट्र चिंतकों ने दी चेतावनी

हीरालाल गोलानी सोहागपुर। नारद जयंती की शाम 'क्रांतिदूत' और 'भारत संस्कृति न्यास' के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ऑनलाइन संगोष्ठी एक ऐतिहासिक वैचारिक आयोजन के रूप में संम्पन्न हुई। इस कार्यक्रम ने न केवल श्रोताओं के मन को उद्वेलित किया, बल्कि वर्तमान भारत के धर्म, संस्कृति और राष्ट्रनीति को लेकर एक नई चेतना का संचार भी किया। संगोष्ठी में शामिल देश के प्रतिष्ठित विचारकों ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि अब केवल संवाद नहीं, बल्कि आवश्यक होने पर संघर्ष ही धर्म बन जाता है। नारद मुनि की संवाद परंपरा को स्मरण करते हुए वक्ताओं ने बताया कि संवाद ही सनातन की आत्मा है, लेकिन जब संवाद निष्फल हो जाए तो संघर्ष ही अंतिम उपाय रह जाता है।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता नितिन शुक्ला एक प्रसिद्ध राष्ट्रवादी विचारक, राजनीतिक विश्लेषक एवं सोशल मीडिया पर व्यापक प्रभाव रखने वाले वक्ता ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत की सीमाओं से लेकर विचार की सीमा तक विस्तार किया। उन्होंने कहा, पाकिस्तान जैसे असफल और आतंकी राष्ट्रों को अब भारत की ओर से स्पष्ट चेतावनी मिलनी चाहिए कि हमारी सहिष्णुता को हमारी कमजोरी न समझा जाए। सनातन धर्म अब स्पष्टीकरण नहीं देगा। अब धर्म को स्पष्ट,

सशक्त और साहसी स्वरूप में प्रस्तुत करना होगा। उनकी बातें युवाओं के बीच एक नई राष्ट्रधर्म चेतना का संचार करती दिखीं। विशिष्ट वक्ता संजय तिवारी, वरिष्ठ पत्रकार, चिंतक , 'भारत संस्कृति न्यास' के संयोजक, जिन्होंने वर्षों तक भारत की सांस्कृतिक अस्मिता और विशेषकर कश्मीर विषय पर अध्ययन करने वाले वक्ता ने कहा कश्मीर केवल एक राजनीतिक विवाद नहीं, वह भारत की आत्मा है। वहां की ऋषि परंपरा, तपोवन और संस्कृति को हमने विस्मृत कर दिया है, जो एक बड़ी चूक है। जब तक कश्मीर में आदिकालीन संस्कृति को फिर से प्रतिष्ठा नहीं मिलती, तब तक भारत का सांस्कृतिक पुनर्जागरण अधूरा है।मुख्य अतिथि विजय मान पूर्व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक एवं पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री भारत-तिब्बत समन्वय संघ ने अपने संवाद की सनातन परंपरा पर गहराई से प्रकाश डालते हुए कहा कि ऋषि नारद संवाद के केवल वाहक नहीं थे, वे विचारों के पुल निर्माता थे। आज के समय में जब समाज खंडित हो रहा है, तब नारद जैसे संवादकर्ताओं की सबसे अधिक आवश्यकता है। संवाद केवल बोलने का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्रनिर्माण की नींव है। विशेष अतिथि कपिल देव मिश्र सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों में सक्रिय भूमिका निभाने वाले युवाओं के प्रेरणास्रोत ने अपने विषय को एक निर्णायक मोड़ दिया। उनका कहना था, जब संवाद निष्फल हो जाए और सत्य के मार्ग पर अवरोध उत्पन्न होने लगे, तब संघर्ष ही धर्म हो जाता है। आज का समय केवल शांति की बातें करने का नहीं, बल्कि सत्य के लिए खड़े होने का है । चाहे उसकी कीमत कुछ भी हो। युवाओं को अब स्पष्ट पक्ष लेना होगा - या तो धर्म के साथ या उसके विरोध में। कार्यक्रम का भावनात्मक और सशक्त संचालन गीतिका ने किया, जिन्होंने अपने विशिष्ट काव्यात्मक अंदाज़ और गंभीर प्रस्तुति से इस पूरे आयोजन को एक जीवंत वैचारिक यात्रा में बदल दिया।संगोष्ठी के संवाद सूत्रधार

विश्व संवाद केंद्र भोपाल के पूर्व निदेशक एवं एक वरिष्ठ राष्ट्रवादी विचारक हरिहर निवास शर्मा ने विषय प्रवेश से लेकर विचार समन्वय और समापन तक संगोष्ठी को वैचारिक संतुलन एवं गंभीरता प्रदान की। उल्लेखनीय है कि उक्त संगोष्ठी यूट्यूब के 'क्रांतिदूत' चैनल पर सजीव प्रसारित की गई। जिसे बड़ी संख्या में दर्शकों ने देखा और सराहा। लाइव कमेंट्स में देशभर से जुड़े लोगों ने अपनी प्रतिक्रियाएं दीं। तथा आयोजन को ऐतिहासिक करार दिया। कार्यक्रम मात्र एक आयोजन नहीं था, बल्कि एक वैचारिक उद्घोषणा थी । जिसमें ऋषियों के वाणी से संवाद निकला एवं उसे धर्मभूमि पर प्रतिष्ठित संघर्ष का मार्गदर्शन मिला। नारद जयंती की यह संगोष्ठी सनातन चेतना को पुनः जनचेतना के केंद्र में लाने का एक सफल प्रयास सिद्ध हुई । जिसकी एक ऐसी शुरुआत, जो आने वाले समय में विचार और संघर्ष दोनों के लिए नई दिशा प्रदान करेगी।

आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के हमेशा साथ है हमारी सरकार : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

● मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना में गोटेगांव में हुआ 218 जोड़ों का सामूहिक विवाह ● मुख्यमंत्री ने वर्चुअली सहभागिता कर वर-वधुओं को दिया आशीर्वाद

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि विवाह हमारी संस्कृति की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। यह हमारे समाज और परिवार का आधार है। सामूहिक विवाह सम्मेलन गरीब और जरूरतमंद परिवारों के लिए संबल और सहयोग के प्रतीक हैं। आर्थिक रूप से कमजोर परिवार के साथ हमारी सरकार दोस्त बनकर हमेशा साथ खड़ी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव बुधवार को नरसिंहपुर जिले के नई कृषि उपज मंडी प्रांगण, गोटेगांव में मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के अंतर्गत आयोजित सामूहिक विवाह सम्मेलन में वर्चुअली सहभागिता कर संबोधित कर रहे थे। सामूहिक विवाह सम्मेलन में कुल 218 जोड़े (216 कन्याओं का विवाह और 02 बेटियों का निकाह) परिणय सूत्र में बंधे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारी सरकार माताओं, बहनों और बेटियों के हितों की रक्षा के लिए हर कदम पर साथ खड़ी है। उन्होंने कहा कि बहन, बेटियों के लिए हमने अपने सालाना बजट में 27 हजार 147 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। प्रदेश में ग्रामसभा से लेकर विधानसभा तक महिलाओं की प्रभावी उपस्थिति है। शासकीय नौकरियों में हमने महिलाओं के लिए 35 प्रतिशत तक आरक्षण का प्रावधान किया है। प्रदेश में 40 प्रतिशत से अधिक स्टार्ट-अप्स का संचालन महिलाएं कर रही हैं। बीते वर्षों में 5 लाख स्व-सहायता समूहों के माध्यम से करीब 62 लाख ग्रामीण बहनें आत्मनिर्भर बन चुकी हैं। यह हमारे लिये गौरव का विषय है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी नवविवाहित जोड़ों को दाम्पत्य जीवन की शुभकामनाएं व आशीर्वाद देते हुए कहा कि 16 संस्कारों में सबसे सुंदर संस्कार

पाणिग्रहण संस्कार है। विवाह 2 परिवारों का और 2 संस्कारों का भी मिलन है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार समाज के हर वर्ग के कल्याण के लिए संकल्पित है। मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना का उद्देश्य न केवल बेटियों को सम्मानपूर्वक विदा करना है, बल्कि उनके जीवन की नई शुरुआत को आर्थिक संबल सशक्त आधार देना भी है। उन्होंने वर-वधूओं से अपील की कि वे सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठाकर अपने जीवन को आत्मनिर्भर और सुखमय बनाएं।

सम्मेलन को गोटेगांव विधायक श्री महेन्द्र सिंह नागेश ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में पूर्व राज्य मंत्री श्री जालम सिंह पटेल, पूर्व विधायक श्री हाकम सिंह चढ़ार, समाजसेवी श्री रामस्नेही पाठक, महंत पीतम पुरी, श्री दादूराम पटेल सहित स्थानीय जनप्रतिनिगण, वर-वधू एवं बड़ी संख्या में उनके परिजन एवं नागरिकगण उपस्थित थे।

26 मई को नरसिंहपुर में लगेगा विशाल कृषि मेला – मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उपस्थित जनसमूह को जानकारी दी कि आगामी 26, 27 एवं 28 मई को जिला मुख्यालय में नरसिंहपुर में विशाल कृषि मेला आयोजित किया जाएगा। 26 मई को वे स्वयं नरसिंहपुर जाएंगे। उन्होंने कहा कि इस कृषि मेले में कृषि आधारित उद्योगों के बारे में जानकारी के अलावा दुग्ध उत्पादन, मत्स्य उत्पादन, शाक-सब्जी उत्पादन, श्रीअन्न उत्पादन, उद्यानिकी, बागवानी, उन्नति किस्म के बीज, खाद, उर्वरक की जानकारी सहित उन्नत कृषि उपकरणों का प्रदर्शन भी किया जाएगा। उन्होंने नरसिंहपुर जिले के सभी किसानों से अपील करते हुए कहा कि वे इस त्रि-दिवसीय विशाल कृषि मेले में आकर कृषि की नई तकनीकों और इस क्षेत्र में हो रहे नवाचारों की जानकारी लें और इन्हें अपनाकर अपनी फसल का उत्पादन बढ़ाएं।

पीडब्ल्यूडी ने जारी किए 20 इंजीनियरों के ट्रांसफर ऑर्डर

4 सहायक यंत्रियों को बनाया प्रभारी अधीक्षण यंत्री

भोपाल (नप्र)। पीडब्ल्यूडी ने बुधवार को 20 इंजीनियरों के तबादला आदेश जारी कर दिए। इसमें सहायक यंत्री स्तर के अफसरों को उच्च पदों का प्रभार सौंपते हुए प्रभारी अधीक्षण यंत्री के पद पर पदस्थ किया गया है। भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर, इंदौर, रीवा समेत बड़े शहरों में इंजीनियरों की पोस्टिंग की गई है। आदेश में कई प्रभारी कार्यपालन यंत्री को सहायक यंत्री पद पर भी रिवर्ट किया गया है।

अजय आनंद लिखार कार्यपालन यंत्री सिविल को प्रभारी अधीक्षण यंत्री प्रमुख अभियंता से प्रभारी अधीक्षण यंत्री सेतु मंडल ग्वालियर, संजय डेहरिया को कार्यपालन यंत्री मुख्य अभियंता कार्यालय सागर से प्रभारी अधीक्षण यंत्री सिवनी मंडल पदस्थ किया गया है।

सहायक यंत्रियों को दो पद की पदोन्नति

- दिलीप बिगौनिया सहायक यंत्री सिविल को प्रभारी कार्यपालन यंत्री अशोकनगर से प्रभारी अधीक्षण यंत्री शहडोल मंडल।
- सुनील कौरव सहायक यंत्री को प्रभारी कार्यपालन यंत्री बुधनी संभाग से प्रभारी अधीक्षण यंत्री लोक निर्माण मंडल क्रमांक-2 भोपाल।
- मयंक शुक्ला सहायक यंत्री को प्रभारी कार्यपालन यंत्री भवन नर्मदापुरम संभाग से प्रभारी अधीक्षण यंत्री राजधानी मंडल पदस्थ किया गया है।

ये सहायक यंत्री बने प्रभारी कार्यपालन यंत्री

- एमके गुप्ता सहायक यंत्री को अनुविभागीय अधिकारी उपसंभाग गुना से प्रभारी कार्यपालन यंत्री भवन संभाग गुना।
- परमानंद पांडेय अनुविभागीय अधिकारी सेतु उपसंभाग इंदौर से प्रभारी कार्यपालन यंत्री सेतु संभाग इंदौर।
- शिवेंद्र सिंह प्रभारी कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण संभाग क्रमांक-एक जबलपुर से क्रमांक-दो जबलपुर,
- पवन प्रजापति अधीक्षण यंत्री कार्यालय सेतु मंडल ग्वालियर से प्रभारी कार्यपालन यंत्री राष्ट्रीय राजमार्ग संभाग ग्वालियर।
- हर्षवर्धन सिंह मुवैल अनुविभागीय अधिकारी उपसंभाग शाजापुर से प्रभारी कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण संभाग शाजापुर।
- विजय सिंह पटेल प्रभारी कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण संभाग क्रमांक-दो भोपाल से सहायक यंत्री कार्यालय मुख्य अभियंता राष्ट्रीय राजमार्ग रीजन भोपाल।

इनके भी हुए तबादले

पीडब्ल्यूडी द्वारा जारी आदेश में सहायक यंत्री हरिशंकर जायसवाल को प्रभारी कार्यपालन यंत्री राष्ट्रीय राजमार्ग संभाग सागर से प्रभारी कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण क्रमांक दो संभाग भोपाल, शंकरलाल को प्रभारी कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण राष्ट्रीय राजमार्ग संभाग रीवा से प्रभारी कार्यपालन यंत्री लोकनिर्माण राष्ट्रीय राजमार्ग संभाग जबलपुर, मनीष कुमार मरकाम प्रभारी कार्यपालन यंत्री देवास संभाग को प्रभारी कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण संभाग भिंड, आदित्य सोनी प्रभारी कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण संभाग मंदसौर से प्रभारी कार्यपालन यंत्री लोकनिर्माण संभाग दतिया पदस्थ किया गया है। साथ ही मोहन सिंह डेहरिया प्रभारी कार्यपालन यंत्री लोकनिर्माण संभाग शाजापुर से प्रभारी कार्यपालन यंत्री लोकनिर्माण संभाग देवास, आरती यादव प्रभारी कार्यपालन यंत्री भवन संभाग बड़वानी से सहायक यंत्री कार्यालय मुख्य अभियंता रीजन इंदौर, गया प्रसाद पटले को प्रभारी कार्यपालन यंत्री भवन संभाग मंडला से प्रभारी कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण संभाग क्रमांक एक जबलपुर तथा आकाश खरे अनुविभागीय अधिकारी लोक निर्माण संभाग क्रमांक दो छिंदवाड़ा से प्रभारी कार्यपालन यंत्री लोकनिर्माण संभाग छिंदवाड़ा पदस्थ किए गए हैं।

बीएमएचआरसी में खुलेगा ब्रेस्ट और सर्वाइकल कैंसर जांच क्लिनिक

विशेष शिविर में विशेषज्ञ बोले- शुरुआती पहचान से बचेंगी जटिलताएं

भोपाल (नप्र)। राजधानी की गैस पीड़ित महिलाओं को जल्द ही ब्रेस्ट और सर्वाइकल कैंसर की जांच के लिए एक समर्पित क्लिनिक की सुविधा मिलने वाली है। भोपाल मेमोरियल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर (बीएमएचआरसी) ने सोमवार को इस कड़ी में एक अहम कदम उठाते हुए एक दिवसीय जागरूकता और जांच शिविर का आयोजन किया, जिसमें बड़ी संख्या में महिलाओं ने भाग लिया।

बीएमएचआरसी की प्रभारी निदेशक डॉ. मनीषा श्रीवास्तव ने शिविर के दौरान घोषणा की कि जल्द ही अस्पताल में एक विशेष क्लिनिक की शुरुआत की जाएगी, जहां मेमोग्राफी और सोनो-मेमोग्राफी जैसी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

क्यों जरूरी है यह पहल – कार्यक्रम का उद्देश्य था महिलाओं को ब्रेस्ट कैंसर और ग्रीवा कैंसर (सर्वाइकल कैंसर) के बारे में जानकारी देना और समय पर जांच के प्रति जागरूक करना। कैंसर की इन दोनों प्रकारों में शुरुआती लक्षणों को नजरअंदाज करना आम बात है, और जब तक बीमारी का पता चलता है, तब तक वह जटिल रूप ले चुकी होती है। ऐसे में बीएमएचआरसी की यह पहल समय रहते पहचान और इलाज की दिशा में एक बड़ी राहत दे सकती है।

विशेषज्ञों ने दी जरूरी जानकारी – कार्यक्रम में बीएमएचआरसी की स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. रोमा रस्तोगी और डॉ. ज्योति

तुलसानी ने महिलाओं को सर्वाइकल कैंसर के कारण, लक्षण, और जांच के महत्व पर जानकारी दी। वहीं, गैस्ट्रो सर्जरी विभाग की डॉ. मोनालिसा दत्ता ने स्तन कैंसर से जुड़े जोखिम कारकों और बचाव उपायों को साझा किया।

डॉ. मनीषा श्रीवास्तव ने बताया कि ब्रेस्ट और सर्वाइकल कैंसर महिलाओं में तेजी से बढ़ते रोग हैं। लेकिन यदि इन्हें शुरुआती अवस्था में पकड़ लिया जाए तो इलाज आसान और सफल होता है। उन्होंने कहा कि बीएमएचआरसी अब इस तरह के स्वास्थ्य जांच शिविर नियमित रूप से आयोजित करेगा, जिससे ज्यादा से ज्यादा महिलाओं को जागरूक किया जा सके।

क्लिनिक में मिलेंगी ये सुविधाएं – अस्पताल की योजना है कि नए क्लिनिक में महिलाओं को मुफ्त या रियायती दरों पर जांच सुविधा मिले। साथ ही कैंसर के जोखिमों को समझने के लिए विशेषज्ञों की सलाह, प्रारंभिक जांच, रिपोर्टिंग और संदर्भित इलाज की सुविधा भी यहीं से दी जाएगी। इस शिविर में गैस पीड़ितों के संगठन भोपाल ग्रुप फॉर इन्फॉर्मेशन एंड एक्शन की संयोजक रचना ढींगरा भी मौजूद रहीं।

भाई ने किया दुष्कर्म

गर्भवती होने पर हुआ खुलासा, पीड़िता बोली- डरा धमकाकर कई बार की ज्यादती

भोपाल (नप्र)। भोपाल के हबीबगंज थाना क्षेत्र में रहने वाली 15 साल की नाबालिग के साथ उसके बड़े भाई ने रेप कर दिया। मामले का खुलासा तब हुआ जब पीड़िता के गर्भवती होने का पता चला। पुलिस ने इस मामले में आरोपी युवक के खिलाफ रेप का केस दर्ज कर उसे हिरासत में ले लिया है।

पुलिस के मुताबिक, किशोरी के परिवार में माता-पिता के अलावा उसका 19 साल बड़ा भाई भी है। दो दिन पहले पीड़िता के पेट में दर्द होने के साथ उल्टियां भी हो रही थी। तबीयत ज्यादा बिगड़ने पर परिजन उसे इलाज के लिए हॉस्पिटल लेकर गए।

जहां उन्हें डॉक्टरों ने बताया कि वह गर्भवती है। इसके बाद परिजन किशोरी को लेकर घर पहुंचे, जहां पीड़िता ने पूछताछ में बताया कि उसके बड़े भाई ने मार्च महीने में उसके साथ रेप किया था।

आरोपी ने डरा धमकाकर कई बार की ज्यादती

इधर अस्पताल की सूचना के बाद पुलिस पीड़िता के घर पहुंच गई। काउंसलिंग के बाद एफआईआर दर्ज की गई। पीड़िता ने पुलिस को बताया कि भाई डरा धमकाकर उसके साथ पिछले 6 महीने में कई बार ज्यादती कर चुका है। उसके मां-पिता मजदूरी करते हैं। दोपहर के समय अक्सर घर में भाई और वह अकेली रहती थी। पुलिस ने आरोपी भाई को गिरफ्तार कर लिया है।

खेल-खेल में बच्चे के गले में फंदा कसा, मौत

● उज्जैन में मलखंब की प्रैक्टिस कर रहा था 11 साल का मासूम; 17 मई को जन्मदिन है

योग्य लश्करी, मृतक

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन में मलखंब की प्रैक्टिस कर रहे एक बच्चे की गले में फंदा कसने से मौत हो गई। वह मंगलवार शाम को मकान की ऊपरी मंजिल पर वेंटिलेशन में बंधी रस्सी पर झूल रहा था। परिजन उसे तुरंत निजी अस्पताल ले गए, लेकिन तब तक उसकी सांसें थम चुकी थीं। बुधवार को पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजन को सौंपा गया। घटना नागझिरी थाना क्षेत्र के मालनवासा स्थित तीन सौ क्वार्टर की है। योग्य लश्करी (11) अक्सर घर में ही मलखंब की प्रैक्टिस करता था। योग्य के पिता नीरज लश्करी ने बताया कि उसे मलखंब करने का बहुत शौक था। इसके लिए उसने खुद ही मकान की ऊपरी मंजिल के वेंटिलेशन में एक मजबूत रस्सी बांध रखी थी। मंगलवार शाम को वह अपने भाई-बहन के साथ खेल रहा था। कुछ देर बाद वह अकेले ऊपर चला गया और मलखंब की प्रैक्टिस करने लगा। इस दौरान रस्सी झूलते समय अचानक उसका संतुलन बिगड़ गया और गले में फंदा कस गया।

बच्चे बुलाने पहुंचे तो फंदे पर लटकता मिला – नीरज ने बताया कि कुछ देर बाद जब दूसरे बच्चे उसे बुलाने ऊपर पहुंचे, तो योग्य रस्सी के फंदे पर लटका मिला। उसकी मां ने तत्काल रस्सी काटकर उसे नीचे उतारा। उस समय उसकी सांसें चल रहीं थी। फौरन निजी अस्पताल ले जाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

17 मई को जन्मदिन है, काफी उत्साहित था – योग्य इस साल दूसरी कक्षा पास कर तीसरी में गया था। परिजन ने बताया कि योग्य खेलकूद और डांस में भी आगे था। परिवार में माता-पिता के अलावा एक बड़ा भाई और एक छोटी बहन है। 17 मई को अपने जन्मदिन को लेकर वो बहुत उत्साहित था और सभी को इनवाइट करना शुरू कर दिया था।

रेलिंग पर रस्सी का फंदा बनाकर अधेड़ ने किया सुसाइड

● रातीबड़ इलाके में सुबह किराएदार ने देखा शव, परिजनों ने दी पुलिस को सूचना

भोपाल (नप्र)। भोपाल के रातीबड़ इलाके में मंगलवार देर रात एक अधेड़ व्यक्ति ने सीढ़ी की रेलिंग से फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। मृतक की पहचान 51 वर्षीय किशोर सिरसाट के रूप में हुई है, जो साक्षी ढाबे के पास रहते थे और मिस्त्री का काम करते थे। बुधवार सुबह जब मकान की पहली मंजिल पर रहने वाले किराएदार ने उन्हें फंदे पर लटका देखा तो तुरंत परिजनों को सूचना दी। पुलिस ने मर्ग कायम कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा और जांच शुरू की। पुलिस के अनुसार किशोर सिरसाट पहले सबरी नगर मल्टी में रहते थे। उन्हें शराब की बुरी लत थी और वे दिन भर की कमाई शराब में उड़ा देते थे। परिजनों को लगा कि माहौल बदलने से आदत सुधर जाएगी, इसलिए वे रातीबड़ इलाके में शिफ्ट हो गए थे। लेकिन शराब की लत पीछा नहीं छोड़ी।

दो बजे तक बेटे ने देखा था सोते हुए – मंगलवार रात किशोर की पत्नी और बेटा कमरे में सो गए थे जबकि वे छत पर बने कमरे में सोने चले गए। रात करीब दो बजे बेटे की नींद खुली थी, तब उसने अपने पिता को बिस्तर पर सोते हुए देखा था। अंदाजा है कि रात दो बजे से सुबह पांच बजे के बीच किशोर ने फांसी लगाकर खुदकुशी की। पुलिस ने बताया कि किशोर ने सीढ़ियों की रेलिंग से फंदा बनाकर आत्महत्या की है।

भोपाल-रायसेन, मंदसौर-नीमच में तेज बारिश

इंदौर और नर्मदापुरम संभाग में भी बूंदा-बांदी, 25 जिलों में आंधी का अलर्ट

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में मानसून की एंट्री 15 जून तक हो सकती है। इससे पहले प्रदेश में बारिश का दौर जारी रहेगा। बुधवार को भोपाल समेत 25 जिलों में तेज आंधी और बारिश का अलर्ट है। इंदौर, उज्जैन और नर्मदापुरम संभाग में भी मौसम बदला रहेगा, जबकि जबलपुर-ग्वालियर में गर्मी रहेगी। भोपाल में दोपहर से बादल छाए हैं। यहां साढ़े चार बजे के बाद बूंदाबांदी और फिर पुराने भोपाल में तेज बारिश हुई। रायसेन, नीमच और मंदसौर सहित आसपास के क्षेत्रों में दोपहर बाद से जबरदस्त बारिश हो रही है। दूसरी ओर उज्जैन समेत प्रदेश के 13 जिलों में हल्की बारिश के आसार हैं।

मौसम विभाग ने सीहोर, उज्जैन, बड़वानी, रतलाम, खरगोन, बैतूल, छिंदवाड़ा, सिवनी, उमरिया, बालाघाट, डिंडौरी और अनूपपुर में आकाशीय बिजली चमकने के साथ हल्की बारिश का अलर्ट जारी किया है।

भोपाल

सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया, सिस्टम के एक्टिव होने से मौसम बदला हुआ है। 17 मई तक कई जिलों में तेज आंधी चलने और बारिश की संभावना है।भोपाल के पुराने शहरी इलाकों में तेज बारिश के चलते सड़कों पर पानी बहा।

- **रायसेन: तेज हवाओं के साथ 1 घंटे तक हुई बारिश** – बुधवार को दोपहर करीब 2 बजे अचानक मौसम बदला और तेज हवाओं के साथ बारिश शुरू हो गई। करीब एक घंटे तक रुक-रुककर दीवानगंज, देवरी सहित अन्य ग्रामीण अंचलों में भी बारिश होती रही। खेतों और सड़कों पर पानी जमने से सामान्य जनजीवन पर असर पड़ा।
- **मंदसौर: दोपहर 2 बजे तेज हवाओं के साथ जोरदार बारिश** – मंदसौर जिले में बुधवार दोपहर 2 बजे तेज हवाओं के साथ जोरदार बारिश हुई। दो घंटे तक मंदसौर के अलावा सीतामऊ, पिपलिया मंडी, मल्हारगढ़ और दलौदा सहित कई ग्रामीण क्षेत्रों में भी बारिश हुई। मौसम के इस बदलाव से लोगों को गर्मी से राहत मिली।

शादी के रिसेप्शन में पुरानी रंजिश पर हमला

● सिगरेट पीने को लेकर हुआ था विवाद; नागपुर से आई महिला की मौत, चार गिरफ्तार

भोपाल (नप्र)। कटारा हिल्स इलाके में शादी के जश्न के बीच हुई हिंसा के मामले में नागपुर से अपने दामाद के भतीजे की शादी में शामिल होने आई महिला की मारपीट में घायल होने के चार दिन बाद मौत हो गई। पुलिस ने हत्या का केस दर्ज कर मुख्य आरोपी दो भाइयों समेत चार लोगों को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि अन्य की तलाश जारी है।

बारात में सिगरेट पीने और शोर मचाने पर हुआ था विवाद – पुलिस के अनुसार, यह विवाद 8 मई को बारात के दौरान शुरू हुआ था। बताया जा रहा है कि मोहल्ले के कुछ लड़के बारात के दौरान सिगरेट पीते हुए शोर मचा रहे थे। जब बारातियों ने उन्हें शांत रहने को कहा तो बात बिगड़ गई और झगड़ा हो गया। हालांकि, उसी दिन दोनों पक्षों के बीच राजीनामा हो गया था।

अगले दिन रिसेप्शन में पहुंचे आरोपी, किया हमला – 9 मई की रात करीब 11 बजे रिसेप्शन चल रहा था, तभी मोहल्ले में रहने वाले नागेंद्र विश्वकर्मा और उसका भाई धनराज विश्वकर्मा वहां पहुंचे। एक दिन पुराने विवाद को लेकर उन्होंने गाली-गलौज शुरू की और मेहमानों पर पत्थर फेंकने लगे। जब हरिओम गिरी और उनके परिवार ने उन्हें समझाने की कोशिश की, तो उन्होंने लाठियों और रॉड से हमला कर दिया। इस दौरान हरिओम की सास रजनी गोस्वामी (50), जो नागपुर से शादी में शामिल होने आई थीं, बीच-बचाव के लिए आगे आईं। आरोपियों ने उन पर रॉड से हमला कर दिया। गंभीर रूप से घायल रजनी को तत्काल एम्स अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां चार दिन तक जिंदगी और मौत से जूझने के बाद उन्होंने दम तोड़ दिया। कटारा हिल्स पुलिस ने नागेंद्र और धनराज विश्वकर्मा समेत चार आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। साथ ही नागेंद्र के माता-पिता और अन्य सहयोगियों को भी केस में आरोपी बनाया गया है।

अब्दुल ने गर्लफ्रेंड को मिठाई दी, फिर चाकू मारे

दूसरे लड़के से बात करने पर किया मर्डर; बोला- हां बोलती तो मीठा खाती

जबलपुर (नप्र)। मैं तो उसे बहुत प्यार करता था, शादी भी करना चाहता था पर उसने मुझे धोखा दिया। प्यार तो मुझसे करती थी, पर फोन पर घंटों किसी लड़के से बात करती थी। कई बार उसे समझाया, उससे पूछा भी कि मोबाइल क्यों हमेशा बिजी रहता है, पर वह मेरी बात को टाल जाती। जब मैंने उसका मोबाइल देखा तो खून खौल गया।

ये कहना है प्रेमिका की हत्या करने वाले 19 साल के अब्दुल समद का। अब्दुल ने नागपुर से 300 किमी दूर जबलपुर आकर 18 साल की लक्ष्मी का मर्डर कर दिया। पुलिस की पूछताछ में उसने बताया, मुझे पता चल गया था कि किस लड़के से वह मोबाइल पर घंटों बात करती है। इसलिए प्लान बनाया और उसकी हत्या कर दी। अब दुख हो रहा है कि जिस लड़की को प्यार करता था, उसे मार डाला।

कॉल डिटेल देखकर अब्दुल को आया गुस्सा – आरोपी अब्दुल अभी केंद्रीय जेल जबलपुर में है। अब्दुल और लक्ष्मी की दोस्ती जनवरी 2025 में नागपुर में हुई थी। लक्ष्मी यहां निर्माणाधीन बिल्डिंग में काम कर रही थी। अब्दुल भी वहीं वाटर प्लांट में काम करता था। तभी से दोनों अक्सर मोबाइल पर बात किया करते थे। फरवरी 2025 में काम खत्म होने के कारण युवती माता-पिता के साथ अपने घर खजुराहो आ गई, इस बीच भी दोनों की बात होती रही। 20 मार्च को जब लक्ष्मी के माता-पिता और भाई-भाभी को जबलपुर में देवताल स्थित मंदिर में मजदूरी मिली तो लक्ष्मी ने अब्दुल को बताया।

अब्दुल लक्ष्मी से मिलने दो बार 15 मार्च और फिर 21 अप्रैल को जबलपुर आया था। दोनों साथ में भेड़ाघाट, तिलवाराघाट और शहर के अन्य कई जगहों पर साथ घूमे थे। फोन पर बात करने के दौरान लक्ष्मी ने अब्दुल को बताया कि उसका मोबाइल खराब हो गया है। 21 अप्रैल को अब्दुल लक्ष्मी से मिलने जबलपुर आया तो उसे नया मोबाइल गिफ्ट किया और पुराना अपने साथ ले गया। लक्ष्मी ने मोबाइल से सिम तो निकाल ली, पर वह नंबर कॉल डिटेल में रह गया, जिस पर वह घंटों बात करती थी।

मंदिर में काम करने खजुराहो से आई थी लक्ष्मी – लक्ष्मी के परिवार को जबलपुर के देवताल में निर्माणाधीन मंदिर में काम मिला था। शुक्रवार 9 मई को दोपहर को लक्ष्मी शौच के बहाने से अब्दुल से मिलने देवताल पहाड़ी पर गई और एक घंटे तक नहीं लौटी, तो परिजनों ने तलाश की। उन्हें घर से करीब 200 मीटर दूर लक्ष्मी की खून में सनी लाश मिली। लक्ष्मी के गले और शरीर पर कई गहरे जख्म थे।

हत्या की जानकारी मिलने पर सीएसपी देवेंद्र प्रताप सिंह, गढ़ा थाना प्रभारी प्रसन्न शर्मा टीम के साथ घटनास्थल पहुंचे और पंचनामा बनाने के बाद शव पीएम के लिए मेडिकल कॉलेज भेजा। पुलिस को परिवार से कुछ खास जानकारी नहीं मिली।

हत्या के दो दिन पहले आ गया था जबलपुर – अब्दुल 6 मई की रात को नागपुर से जबलपुर आ गया था। यहां पर वह एक होटल में रुका था। इस दौरान 7 और फिर 8 मई को वह लक्ष्मी से मिलने पहुंचा गया था। परिवार वाले और आसपास काम करने वालों से छिपते हुए लक्ष्मी ने अब्दुल से मुलाकात की थी।

चाकू और मिठाई लेकर पहुंचा था अब्दुल – अब्दुल यह अच्छे से जान चुका था कि लक्ष्मी मोबाइल पर जिस लड़के से घंटों बात किया करती है, वह खजुराहो का रहने वाला है। उसने कई बार समझाया कि वह उससे शादी करना चाहता है, पर लक्ष्मी ने इस पर ध्यान नहीं दिया। शुक्रवार को अब्दुल मिठाई और चाकू लेकर लक्ष्मी से मिलने पहुंचा था। अब्दुल ने लक्ष्मी से कहा कि तो मिठाई खाते हुए कसम खाओ कि अब कभी भी फोन पर उस लड़के से बात नहीं करोगी। इस पर जब लक्ष्मी ने कोई जवाब नहीं दिया तो गुस्से में आकर अब्दुल ने चाकू मारकर हत्या की और फिर होटल में जाकर छिप गया। जब उसे पता चला कि पुलिस उसे तलाश कर रही है, तो रात में भागने की कोशिश की।प्रेमिका की हत्या करने का अब्दुल ने फुल प्रूफ प्लान बनाया था।